भाषा विज्ञान और हिन्दी

डॉ० कृपा शंकर सिंह
खालसा कालेज, दिल्ली विश्वविद्यालय

आदर्श साहित्य प्रकाशन
वैस्ट सीलमपुर, दिल्ली-३१

दिल्ली विश्वविद्यालय की पी-एच० डी० उपाधि के लिए स्वीकृत
अन्वेषण-प्रबन्ध का संशोधित रूप

प्रकाशक :
आदर्श साहित्य प्रकाशन,
वैस्ट सीलमपुर, दिल्ली-३१

O

मूल्य :
बारह रुपये पचास पैसे

प्रथम संस्करण, १९७३

O

मुद्रक : अशोक कुमार रावत, अशोक प्रिंटर्स,
धर्मपुरा, गांधी नगर, दिल्ली-३१

BHASHA VIGYAN AUR BHOJPURI : By Kripa Shankar Singh

जगन के लिए

अनुभाग क्रम

आमुख

यह अध्ययन मेरी अपनी व्यक्ति बोली[1] (ईडिओलेक्ट) का है, जो भोजपुरी की पश्चिमी बोली से सम्बन्धित है, और (मेरा विश्वास है कि) उस भाषा समुदाय (स्पीच कम्यूनिटी) के अन्य सदस्यों से बहुत भिन्न नहीं है। अन्य परिवर्तों (वेरएन्ट्स) को देखने के लिए परिवार के सदस्यों तथा गाव के अन्य कुछ लोगों की व्यक्ति बोलियों को भी लिया गया है। भोजपुरी के समूचे क्षेत्र से नमूने एकत्र नहीं किये गये है। इस कारण भोजपुरी के भाषा क्षेत्र, बोलने वालों की सख्या और परिवेश की विशेषताओं पर प्रकाश डालना आवश्यक नहीं समझा गया।[2]

प्रस्तुत विश्लेषण पूर्ण रूप से प्रयोगात्मक (टेन्टटिव) है, और यह केवल भोजपुरी के आगे के अध्ययन की सम्भाव्यता को व्यक्त करता है।

इस पुस्तक को प्रकाशित कराने का श्रेय डॉ० नरेन्द्र मोहन को है, उन्होंने तथा डॉ० महीप सिंह और जगन ने अनुभाग शून्य को पढ़ा है और अपने रचनात्मक सुझाव दिए हैं। डॉ० राम दरश मिश्र ने भोजपुरी से सम्बन्धित अनेक महत्त्वपूर्ण सूचनाए दी और डॉ० विश्वजीत ने कार्य के मध्य मुझे अनेक सुझाव दिये। सभी को धन्यवाद।

डॉ० जगदेव सिंह (कुरुक्षेत्र विश्वविद्यालय) के निर्देशन मे मैंने भोजपुरी पर अध्ययन आरम्भ किया था। उनके बहुमूल्य विचारो से लाभान्वित हुआ हूँ। उनके प्रति मेरा आभार।

अन्त मे उन सभी विद्वानों के प्रति भी मैं आभार व्यक्त करना चाहता हूँ जिनके विचारो और कार्यो का यह अध्ययन ऋणी है।

दिल्ली, १९७३ कृपा शंकर सिंह

---

१. यह व्यक्ति बोली पूर्वी उत्तर प्रदेश के आजमगढ जिले के पूर्वी भाग के एक गाव से सम्बन्ध रखती है।

२. भोजपुरी भाषा क्षेत्र और भाषाभाषियो के विषय मे जानकारी के लिए निम्नलिखित सन्दर्भ द्रष्टव्य हैं :

(१) जी० ए० ग्रियर्सन, द लिंग्विस्टिक सर्वे अव् इण्डिया (खंड ५, भाग २)।

(२) उदय नारायण तिवारी, ऑरिजिन एन्ड डिवेलपमेंट अव् भोजपुरी

अनुभाग—०

०.१. पिछले तीन दशकों में भाषा विज्ञान के क्षेत्र में काफी उन्नति हुई और बहुत सी नयी अवधारणायें और पारिभाषिक शब्द प्रकाश में आये। एक ओर जहाँ सन्निहित अवयव विश्लेषण, रचनान्तरण व्याकरण, टेग्मीमिक पद्धति, सिस्टेमिक व्याकरण, कारक व्याकरण, रचनान्तरण व्याकरण में नये प्रयोग और परिवर्तन तथा अन्य अनेक लघु प्रयास मुख्यतः व्याकरणिक अध्ययन के अन्तर्गत किये गये तो दूसरी ओर भाषा सम्बन्धी चिन्तन और उसके दार्शनिक, सामाजिक, मनोवैज्ञानिक, साहित्यिक आदि पक्षों तथा भाषा विज्ञान के विस्तार की समस्याओं को लेकर बहुत सी नयी शाखायें, प्रशाखायें विकसित हुईं, जिनमें सामाजिक भाषाविज्ञान, मनोभाषाविज्ञान, मानवशास्त्रीय भाषाविज्ञान, आंकड़ा-भाषाविज्ञान, गणितिक भाषाविज्ञान आदि आते हैं। इनके अतिरिक्त भाषाविज्ञान के व्यावहारिक पक्षों को ध्यान में रखकर भी अनेक नयी अवधारणायें सामने आयीं। अनुवाद विज्ञान में गहराई और विस्तृति दोनों दिखाई पड़ी और मशीन अनुवाद जैसे कार्य हुए। भाषाओं के अध्यापन को लेकर भी काफी काम हुआ, विशेष रूप से किसी भाषा को द्वितीय भाषा के रूप में पढ़ने-पढ़ाने को लेकर बारीकियों को उभारा गया। जाहिर है कि इस विकास की गति के साथ-साथ चलने में जागरूक भाषाविज्ञानी को भी कठिनाई अनुभव होने लगी और परिणामस्वरूप विशेषज्ञता की प्रवृत्ति ने और अधिक जोर पकड़ा।

प्रस्तुत अध्ययन में विश्लेषण पद्धति के रूप में टेग्मीमिक थियरी को अपनाया गया है। इस थियरी की कुछ विशिष्ट बातों और इसे अपनाने के कारणों पर कुछ कहने से पहले आधुनिक भाषाविज्ञान के विकास में निहित कुछ प्रमुख प्रवृत्तियों पर प्रकाश डालना समीचीन होगा।

०.२. भाषाविज्ञान में संरचनात्मकता की प्रवृत्ति हालाँकि योरप और अमरीका दोनों में लगभग एक साथ (१९३० के आस-पास) प्रारम्भ होती है पर फिर भी दोनों में पारस्परिक सम्पर्क का अभाव और दोनों की प्रारम्भिक मूलभूत बातों और पद्धतियों में अन्तर दिखाई देता है। योरप में संरचनात्मकता का प्रारम्भ फर्दिनान्द दि सास्यूर के कार्यों

से माना जाता है और अमरीकी संरचनात्मकता लेनर्ड ब्लूमफील्ड से आरम्भ होती है।

फ़र्दिनाद डि सासू इस बात पर बहुत बल देते हैं कि भाषा सबसे पहले एक मनोवैज्ञानिक व्यापार है। इसमें भाषयिक चिन्ह अमूर्त अस्तित्व रूप में विद्यमान रहते हैं—जैसे कि कोई विशिष्ट प्रसरणिक धारणा (अकूस्टिक इम्प्रेशन) विशिष्ट अर्थ को उत्पन्न करती है—इसलिये भाषाशोध मूलरूप से उन पद्धतियों का सर्वेक्षण होना चाहिये जिनमें भाषा सरचना भाषा समूह की भाषयिक चेतना में अभिव्यक्त है, जबकि ब्लूमफील्ड के अनुसार भाषा मूलरूप में ठोस (कान्क्रीट) है, एक अनुभवाश्रित (एम्पिरिकल) तथ्य है और इसलिये भाषयिक शोध केवल उस सामग्री पर आधारित होना चाहिये जो वस्तुत: संग्रहीत है।

०.२१. योरोपीय संरचनात्मकता के मुख्य रूप से तीन वर्ग हैं। पहला वर्ग है जेनेवा स्कूल का जो डि सासू की संरचनात्मकता का एक क्लासिक उदाहरण है, दूसरा वर्ग प्राग स्कूल का है जिसने स्वनप्रक्रियात्मक समस्याओं पर बहुत अधिक ध्यान दिया। इकाइयों की व्यवच्छेदक विशेषता इसके विश्लेषण का केन्द्र-विन्दु है। तीसरा वर्ग ग्लासीम विज्ञानियों (ग्लासेमेटिशियन्स) का है, जिन्होंने डिसासू की अमूर्तता की प्रवृत्ति को आगे बढाया और इसलिये इस स्कूल को नियो-सासरियनिज्म का नाम भी दिया जाता है। प्रतीकात्मक तर्कशास्त्र (सिम्बालिक लाजिक) का भी यह स्कूल काफी ऋणी है।

फ़र्दिनांद डि सासू के कुछ महत्वपूर्ण भाषयिक सिद्धान्त इस प्रकार हैं—

(१) भाषा एक व्यवस्था है और प्रत्येक वैयक्तिक तथ्य इसी व्यवस्था में निहित है। यह व्यवस्था विशिष्ट सामाजिक प्रकार्य के साथ एक संघटित व्यवस्था है।

(२) भाषा में ध्वनि और अर्थ का सह सम्बन्ध सदैव विद्यमान रहता है।

(३) भाषा ऐसे चिन्हो की व्यवस्था है जिसमे प्रत्येक के मूल्य आपस में प्रतिबन्धित हैं, और इस तरह यह व्यवस्था विपर्यास पर आधारित हैं।

(४) भाषा में लांग सम्पूर्ण भाषाभाषी समूह की सम्पत्ति है परन्तु इसका प्रत्यक्षीकरण परोल द्वारा होता है जो व्यक्ति की बोली है।

(५) भाषा पर शोधकार्य दो भिन्न दिशाओं में हो सकता है:—एककालिक और कालक्रमिक। किसी भाषा की वर्तमान अवस्था का विवरण एककालिक अध्ययन है और उसके इतिहास का विवरण कालक्रमिक है।

(६) भाषा चिन्ह सिगनिफिएन्ट अर्थात् ध्वनिरूप जिसमें अर्थतत्व निर्देशित होता है तथा सिगनिफाइ, जो स्वय अर्थतत्व है, का सयोजन है।

०.२२. एडवर्ड सपीर जो अमरीका में संरचनात्मकता के अगुआ माने जाते है फ्रांज-बोअस[१] के शिष्य थे। सपीर ने भाषयिक ढांचा के सिद्धान्त का विचार प्रदान किया।

---

१ फ्रान्ज बोअस (१८५८-१९४२) पहले ऐसे अमरीकी भाषाविज्ञानी हैं जिनका संबन्ध आधुनिक भाषाविज्ञान से जोडा जा सकता है। उन्होंने कहा कि भाषाओं में अपने-अपने आन्तरिक तर्क होते हैं जिनके कारण पद्धति सबन्धी कोई सामान्य सिद्धान्त सभी पर लागू नही किये जा सकते। सामग्री से ही विश्लेषण की उपयुक्त पद्धति ढूंढी जा सकती है।

उनका कहना था कि प्रत्येक मनुष्य के अन्तर्गत उसकी भाषा के संघटन की मूलभूत स्कीम विद्यमान रहती है। भाषा अभ्यास को रेगुलेट करने वाले इन ढाँचों के संघटन को समझने के लिये भाषा के सांस्कृतिक माहौल का ज्ञान बहुत जरूरी होता है। इस विचार ने अमरीकी भाषाविज्ञान में भाषा के मानव-वैज्ञानिक शोध को प्रेरणा दी।

इसी तरह स्वनिम विश्लेषण के लिए सपीर ने वितरण मानदंड को प्रदान किया जो शीघ्र ही अमरीकी भाषिक अध्ययन का मुख्य आधार हो गया।

अमरीकी भाषा विज्ञान में दूसरा महत्वपूर्ण मोड़ उस समय आया जब इस क्षेत्र में ब्लूमफील्ड का पदार्पण हुआ। ब्लूमफील्ड ने सपीर की अपेक्षा सीमित क्षेत्र अपनाया। उन्होंने भाषा विज्ञान की संरचनात्मकता को व्यवस्थित रूप दिया, और इसीलिये उन्हें अमरीकी संरचनात्मकता का जनक माना जाता है।

ब्लूमफील्ड ने कहा कि व्यक्ति के व्यवहार के अन्तर्गत माहौल में उसका सम्प्रेषण भी आता है और भाषा यही सम्प्रेषण है। व्यक्ति और उसके मनोविज्ञान के लिये जरूरी है कि भाषिक शोध वस्तुपरक और सही हो। उन्होंने संरचनात्मक विश्लेषण को वितरण पद्धति का विश्लेषण बनाया। ब्लूमफील्ड ने अर्थतत्व पक्ष को महत्व नहीं दिया। इसका प्रमुख कारण शायद यह था कि अर्थतत्व को ग्रहण करने से भाषिक विश्लेषण के व्यक्ति-परक हो जाने का भय था।

० २३. अमरीकी संरचनात्मकता का मेल योरोपीय स्कूलों में अगर थोड़ा-बहुत किसी से बैठता है तो वह है ग्लासीम विज्ञान। दोनों ने प्राग स्कूल की व्यवच्छेदक विशेषता की केन्द्रीयता को नकारा और भाषा इकाइयों के वितरण को महत्व दिया। (यह और बात है कि अमरीकी संरचनात्मकता वास्तविक भाषिक सामग्री पर केन्द्रित है और ग्लासीमटिक्सवाले भाषा के पदार्थ (या ध्वनि) पक्ष की अवहेलना करते हैं।) अमरीकियों ने इस बात पर बहुत महत्व दिया कि भाषिक इकाइयों के वितरण के पश्चात् ही हम भाषा व्यवस्था में भाषा इकाइयों के प्रकार्य के विषय में सही जानकारी प्राप्त कर सकते हैं।

ब्लूमफील्ड के शिष्यों ने भी ब्लूमफील्ड की परम्परा को कायम रखा। भाषिक विश्लेषण के मानदंड वस्तुपरक और यांत्रिक रहे। विश्लेषण का मुख्य केन्द्र भाषिक इकाइयों का वितरण रहा और विश्लेषण की सीमा से अर्थतत्त्व को बाहर रखा गया। ब्लूमफील्डियनों ने रूपिम विज्ञान सम्बन्धी अध्ययन में काफी सफलता प्राप्त की। स्वनिम-विज्ञान के अध्ययन और विश्लेषण पर यद्यपि काफी ध्यान और समय लगाया गया पर वितरण से इतर व्यवच्छेदक विशेषता की ओर उनका ध्यान नहीं गया।

०.३. वाक्य विज्ञान के क्षेत्र में एक महत्वपूर्ण कदम सन्निहित अवयव (इमीजिएट कान्स्टिचुएन्ट) विश्लेषण के रूप में दिखाई पड़ा। यह ऐसा द्वंद्व विभाजन है जिसमें उच्चार के उन भागों को एक जगह करते जाते हैं जो व्याकरण और अर्थ-तत्व के ख्याल से एक-दूसरे से प्रत्यक्ष रूप से सम्बन्धित होते हैं।

०.४ रचनान्तरण व्याकरण की शुरुआत नोअम चाम्स्की की पुस्तक सिन्टैक्टिक स्ट्रक्चर्स (१९५७) से मानी जाती है। चाम्स्की की यह पुस्तक पिछले वर्षों के भाषा-विज्ञान के क्षेत्र में एक महत्वपूर्ण उपलब्धि है।

चाम्स्की मूल रूप में वितरणवाद और वाक्य-विज्ञान की तार्किक अवधारणा से प्रभावित थे। वह भाषा संरचना के एक सामान्य सिद्धान्त की खोज में थे। विश्लेषण-पद्धति को अधिक से अधिक वैज्ञानिक बनाने के लिए विश्लेषण में उन्होंने प्रतीकों का प्रयोग किया और बताया कि किसी भाषा का व्याकरण नियमों की व्यवस्था है।

अपनी इस पुस्तक में चाम्स्की ने मुख्य रूप से वाक्य विज्ञान की प्रकृति की व्याख्या की है। उन्होंने वाक्य-विज्ञान को सिद्धान्तों और प्रक्रियाओं का ऐसा अध्ययन बताया जिसमें भाषा में वाक्यों की रचना होती है। व्याकरण ऐसे उपकरण के रूप में हो जिसके माध्यम से भाषा के सभी व्याकरणिक वाक्यों को उत्पन्न किया जा सके।

चाम्स्की (१९६५ : ४) ने भाषा-भाषी की सामर्थ्य (कॉम्पिटन्स) और उसके निष्पादन (परफार्मेन्स) में अन्तर प्रगट किया। सामर्थ्य वक्ता और सुनने वाले का अपनी भाषा का ज्ञान है और निष्पादन ठोस स्थितियों में भाषा का वास्तविक उपयोग है। भाषाविद के अध्ययन का लक्ष्य सामर्थ्य है, निष्पादन नहीं है। भाषा विश्लेषण की समस्या वक्ता की भाषा सामर्थ्य को व्यक्त करना है।

आन्तरिक संरचना बनाम बाह्य संरचना—चाम्स्की ने आन्तरिक संरचना और बाह्य संरचना के अन्तर को स्पष्ट किया। उन्होंने यह भी कहा कि ये प्रयोग हम्बोल्ड, ड्यरेट और पोस्टाल तथा आधुनिक दर्शन के प्रयोगों से मिलते-जुलते हैं। (असपेक्ट्स ऑफ द थियरी आफ़ सिन्टैक्स, पृ० १९९)।

आन्तरिक संरचना वह है जो मूल (बेस) के रूप में है और बाह्य संरचना रचनान्तरणों से प्रभावित व्याकरणिक प्रतिनिधित्व तथा रूपस्वनिमात्मक घटक से उत्पन्न स्वनप्रक्रियात्मक प्रतिनिधित्व है। आन्तरिक और बाह्य संरचनाओं का अन्तर फ़्रेज़ संरचना घटक और रचनांतरणिक घटक का अन्तर है। रचनांतरण व्याकरण मूल रूप में त्रिभागीय है। अन्त्य श्रृंखलाओं को उत्पन्न करने वाला फ़्रेज़ संरचना व्याकरण, अनिवार्य और वैकल्पिक जोड़ों, विलोपों तथा पुनर्व्यवस्थाओं द्वारा भाषा में सभी वाक्यों का अन्तिम व्याकरणिक प्रतिनिधित्व प्रगट करने वाला रचनांतरणिक घटक तथा वाक्यों को स्वनिमों के उचित अनुक्रमों में पुनः लिखने वाला रूपस्वनिमात्मक घटक इसके अंग हैं।

रचनांतरण व्याकरण के प्रमुख तीन घटक हैं—

(१) वाक्यात्मक घटक जो मूल है क्योंकि यह प्रजनन (जनरेट) करता है।

(२) स्वन प्रक्रियात्मक घटक जो वाक्यात्मक नियमों द्वारा उत्पन्न वाक्य के स्वनिक रूपों को निश्चित करता है।

(३) आर्थिक घटक जो वाक्य के आर्थिक निर्वचन (इन्टरप्रेटेशन) को निश्चित करता है।

०५ भाषिक विश्लेषण में एक नया आयाम टेग्मीमिक थियरी के रूप में जुड़ा। केनेथ एल पाइक ने टेग्मीमिक थियरी को सबसे पहले लैंग्वेज इन रिलेशन टु अ यूनीफाइड थियरी आफ द स्ट्रक्चर आफ ह्यू मन बिहेवियर में प्रकाशित किया। इस वृहत् ग्रंथ का पहला भाग १९५४ में, दूसरा भाग १९५५ में तथा तीसरा भाग १९६० में प्रकाशित हुआ। १९६७ में तीनों भाग एक ही ग्रंथ के रूप में प्रकाश में आये। टेग्मीम का मूल नाम ग्रेमीम था जिसे पाइक ने अपने निबन्ध आन टेग्मीम भी ग्रेमीम (आइ जे ए एल १९५८) में बदलकर टेग्मीम कर दिया।

पाइक को एक ऐसी थियरी की तलाश थी जिसके माध्यम से सम्पूर्ण मानव व्यवहार की संरचना व्याख्यायित हो सके। भाषा को मानव-व्यवहार की संरचना की एक इकाई के रूप में देखा जा सके।

भाषा के सम्बन्ध में विचार करते हुए पाइक ने कहा कि भाषा त्रिविध अधि-क्रमों में विभक्त है। ये त्रिविध अधिक्रम स्वनप्रक्रिया, व्याकरण और शब्दकोश हैं। स्वनिमविज्ञान की मूलभूत इकाई स्वनिम को देखते हुए पाइक व्याकरण की भी किसी मूलभूत इकाई की खोज में थे और अन्ततः उन्हें ग्रेमीम मूलभूत इकाई मिली जिसे बाद में उन्होंने टेग्मीम नाम दिया। स्वनिम विज्ञान में जिस तरह स्वनिम मूलभूत इकाई है उसी तरह व्याकरण की मूलभूत इकाई टेग्मीम है और शब्दकोश की रूपिम।

रावर्ट ई० लांगेकर ने स्ट्रिंग्ज कन्स्टिट्यूयन्ट अनॅलसिस (लैंग्वेज १९६०) में शृंखला विश्लेषण को स्पष्ट किया और उसे सन्निहित अवयव विश्लेषण के अन्तर्गत प्रयुक्त द्वंध विभाजन से अधिक समीचीन सिद्ध किया। उन्होंने बताया कि टेग्मीम माडल का विभाजन (कट्स) समकालिक (साइमलटेनियस) है जबकि सन्निहित अवयव विश्लेषण में विभाजन द्वंध और अनुक्रम (सिक्वन्स) वाला है।

सन्निहित अवयव विश्लेषण में रचना के दो भागों में विभक्त होते रहने से कई तरह की दिक्कतें आती हैं। टेग्मीम विश्लेषण में रचना एक शृंखला के रूप में मानी जाती है और विभिन्न टेग्मीम इकाइयाँ ढाँचे में भिन्न-भिन्न बिन्दुओं के समान मानी जाती हैं। इसमें रचना का विभाजन उसके सभी अवयवात्मक भागों में एक ही साथ होता है।

पाइक ने डिमेन्शन्स आफ ग्रमेटिकल कन्स्ट्रक्शन्स (लैंग्वेज १९६२) तथा

प्र सिन्टेक्टिक पराडाइम (लैंग्वेज १९६३) में व्याकरणिक व्यवस्था की व्याख्या करते हुए व्याकरणिक मेट्रिक्स की अवधारणा और उसे व्यावहारिकता प्रदान की।

लांगेकर (१९६४ : ३२) ने टेग्मीम व्याकरण की सामर्थ्य को चार सोपानों में विकसित किया : (१) पठन (संयोजन) (२) क्रम परिवर्तन (पर्मुटेशन) (३) प्रव्यंजना (मेनिफेस्टेशन) और (४) शाब्दिक तथा स्वनप्रक्रियात्मक सामग्री का प्रतिस्थापन (सब्स्टिट्यूशन)। लांगेकर का कहना है कि यदि व्याकरण की रचना सुचारूपूर्वक हो तो इन सोपानों से टेग्मीम व्याकरण ऐसे साधन के रूप में परिवर्तित हो सकता है जो भाषा के व्याकरण सम्मत वाक्यों को उत्पन्न (जेनरेट) करे।

०.५१. प्रकार्य प्ररूप इकाई—पाइक ने यह महसूस किया कि व्याकरण की मूलभूत इकाइयाँ न तो केवल प्रकार्य द्वारा व्यक्त हो सकती हैं और न ही केवल प्ररूप द्वारा। और इस तरह उन्होंने स्पष्ट किया कि प्रकार्य और प्ररूप दोनों को एक साथ व्यक्त होना चाहिए। टेग्मीम उसी प्रकार्य और प्ररूप का सयोजित रूप है। यह शब्द ग्रीक टाग्मा, जिसका अर्थ विन्यास (अरेंजमेन्ट) है, से बना है। टेग्मीम प्रकार्य-प्ररूप का सहसम्बन्ध है। व्याकरण में प्रकार्य पक्ष पर बल के कारण भाषा विश्लेषण में एक क्रान्तिकारी परिवर्तन आया।

प्रकार्य व्याकरण के सभी स्तरणों पर मिलता है। प्रकार्य और प्ररूप का अन्तर व्याकरण, स्वनिमविज्ञान और शब्दकोश में भिन्न-भिन्न प्राप्त होता है। व्याकरण में इकाइयों में व्याकरणिक प्रकार्य मिलता है और प्ररूपों में व्याकरणिक अर्थ जुड़ता है। स्वनिमविज्ञान में स्वनिमों में पार्थक्यसूचक प्रकार्य मिलता है और शब्दकोश में प्रकार्य निर्दिष्ट होता है।

०.५२. प्रकार्यात्मक स्लाट और श्रेणी—प्रकार्य व्याकरणिक सम्बन्ध है। इसे कर्ता, विधेय, प्रधान, परिसीमक आदि नामों से व्यक्त किया जाता है। स्लाट रचना फ्रेम में एक स्थिति है और यह रचनाफ्रेम में स्थिति और सरचनात्मक अर्थ द्वारा परिभाषित होता है। श्रेणी प्रकार्यात्मक स्लाट की पूर्ति करने वाले प्रकरण हैं। उदाहरण के लिए कर्ता स्लाट की पूर्ति करने वाली श्रेणियों में संज्ञा फ्रेज, सर्वनाम, क्लाज आदि हो सकते हैं। टेग्मीम प्रकार्य प्ररूप की तरह न तो केवल स्लाट में व्यक्त होता है और न केवल श्रेणी में। यह स्लाट और श्रेणी का सहसम्बन्ध है।

०.५३. एटिक और एमिक इकाइयाँ—व्याकरण की एटिक इकाइयाँ वस्तुतः विश्लेषणकर्ता का अन्यभाषाभाषी की दृष्टि से प्रथम अनुमान हैं। ये अनिवार्य इकाइयाँ हैं। व्याकरण की एमिक इकाइयाँ अनिवार्य होती हैं और उस भाषा को मातृभाषा के रूप में प्रयुक्त करने वाले की दृष्टि से भाषा की इकाइयाँ हैं (कुक १९६९ : १९)। स्वनप्रक्रिया में एटिक इकाइयाँ स्वन हैं और विभिन्न संस्वनों का एक समूह जो दूसरे संस्वनों के समूह से व्यवच्छेदन में है एमिक इकाई है। व्याकरण में एटिक इकाइयाँ टाग्मा हैं और विभिन्न संटाग्माओं का समूह टेग्मीम है। शब्दकोश में एटिक इकाइयाँ रूप

रचनातरण व्याकरण के प्रमुख तीन घटक हैं—

(१) वाक्यात्मक घटक जो मूल है क्योंकि यह प्रजनन (जनरेट) करता है।

(२) स्वन प्रक्रियात्मक घटक जो वाक्यात्मक नियमो द्वारा उत्पन्न वाक्य के स्वनिक रूपो को निश्चित करता है।

(३) आर्थिक घटक जो वाक्य के आर्थिक निर्वचन (इन्टरप्रटेशन) को निश्चित करता है।

■ ५. भाषिक विश्लेषण मे एक नया आयाम टेग्मीमिक थियरी के रूप मे जुडा। केनेथ एल पाइक ने टेग्मीमिक थियरी को सबसे पहले लैंग्वेज इन रिलेशन टु अ यूनीफ़ाइड थियरी आफ द स्ट्रक्चर आफ ह्यूमन बिहेवियर मे प्रकाशित किया। इस वृहत ग्रथ का पहला भाग १९५४ मे, दूसरा भाग १९५५ मे तथा तीसरा भाग १९६० मे प्रकाशित हुआ। १९६७ मे तीनो भाग एक ही ग्रथ के रूप मे प्रकाश मे आये। टेग्मीम का मूल नाम ग्रेमीम था जिसे पाइक ने अपने निबन्ध आन टेग्मीम भी ग्रेमीम (आइ जे ए एल १९५८) मे बदलकर टेग्मीम कर दिया।

पाइक को एक ऐसी थियरी की तलाश थी जिसके माध्यम से सम्पूर्ण मानव व्यवहार की सरचना व्याख्यायित हो सके। भाषा को मानव-व्यवहार की सरचना की एक इकाई के रूप मे देखा जा सके।

भाषा के सम्बन्ध मे विचार करते हुए पाइक ने कहा कि भाषा त्रिविध अधिक्रमी मे विभक्त है। ये त्रिविध अधिक्रम स्वनप्रक्रिया, व्याकरण और शब्दकोश हैं। स्वनिमविज्ञान की मूलभूत इकाई स्वनिम को देखते हुए पाइक व्याकरण की भी किसी मूलभूत इकाई की खोज में थे और अन्तत. उन्हे ग्रेमीम मूलभूत इकाई मिली जिसे बाद मे उन्होंने टेग्मीम नाम दिया। स्वनिम विज्ञान मे जिस तरह स्वनिम मूलभूत इकाई है उसी तरह व्याकरण की मूलभूत इकाई टेग्मीम है और शब्दकोश की रूपिम।

राबर्ट ई० लाँगेकर ने स्ट्रिन्ग कन्स्टिच्यूएन्ट अनैलसिस (लैंग्वेज १९६०) मे शृंखला विश्लेषण को स्पष्ट किया और उसे सन्निहित अवयव विश्लेषण के अन्तर्गत प्रयुक्त द्वैध विभाजन से अधिक समीचीन सिद्ध किया। उन्होने बताया कि टेग्मीम माडल का विभाजन (कट्स) समकालिक (साइमलटेनियस) है जबकि सन्निहित अवयव विश्लेषण मे विभाजन द्वैध और अनुक्रम (सिक्वन्स) वाला है।

सन्निहित अवयव विश्लेषण मे रचना के दो भागो में विभक्त होते रहने से कई तरह की दिक्कतें आती हैं। टेग्मीम विश्लेषण मे रचना एक शृखला के रूप मे मानी जाती है और विभिन्न टेग्मीम इकाइयाँ ढाँचे मे भिन्न-भिन्न बिन्दुओ के समान मानी जाती हैं। इसमे रचना का विभाजन उसके सभी प्रकार्यात्मक भागो मे एक ही साथ होता है।

पाइक ने डिमेन्शन्स आफ ग्रमेटिक ल कन्स्ट्रक्शन्स (लैंग्वेज १९६२) तथा

■ सिन्टेक्टिक पराडाइम (लैंग्वेज १९६३) में व्याकरणिक व्यवस्था की व्याख्या करते हुए व्याकरणिक मेट्रिक्स की अवधारणा और उसे व्यावहारिकता प्रदान की।

लांगेकर (१९६४ : ३२) ने टेग्मीम व्याकरण की सामर्थ्य को चार सोपानों में विकसित किया : (१) पठन (संयोजन) (२) क्रम परिवर्तन (पर्मुटेशन) (३) प्रव्यंजना (मेनिफेस्टेशन) और (४) शाब्दिक तथा स्वनप्रक्रियात्मक सामग्री का प्रतिस्थापन (सब्स्टिट्यूशन)। लांगेकर का कहना है कि यदि व्याकरण की रचना सुचारूपूर्वक हो तो इन सोपानों से टेग्मीम व्याकरण ऐसे साधन के रूप में परिवर्तित हो सकता है जो भाषा के व्याकरण सम्मत वाक्यों को उत्पन्न (जेनरेट) करे।

०.५१. प्रकार्य प्ररूप इकाई—पाइक ने यह महसूस किया कि व्याकरण की मूलभूत इकाइयाँ न तो केवल प्रकार्य द्वारा व्यक्त हो सकती हैं और न ही केवल प्ररूप द्वारा। और इस तरह उन्होंने स्पष्ट किया कि प्रकार्य और प्ररूप दोनों को एक साथ व्यक्त होना चाहिए। टेग्मीम उसी प्रकार्य और प्ररूप का संयोजित रूप है। यह शब्द ग्रीक टाग्मा, जिसका अर्थ विन्यास (अरेंजमेन्ट) है, से बना है। टेग्मीम प्रकार्य-प्ररूप का सहसम्बन्ध है। व्याकरण में प्रकार्य पक्ष पर बल के कारण भाषा विश्लेषण में एक क्रान्तिकारी परिवर्तन आया।

प्रकार्य व्याकरण के सभी स्तरणों पर मिलता है। प्रकार्य और प्ररूप का अन्तर व्याकरण, स्वनिमविज्ञान और शब्दकोश में भिन्न-भिन्न प्राप्त होता है। व्याकरण में इकाइयों में व्याकरणिक प्रकार्य मिलता है और प्ररूपों में व्याकरणिक अर्थ जुड़ता है। स्वनिमविज्ञान में स्वनिमों में पार्थक्यसूचक प्रकार्य मिलता है और शब्दकोश में प्रकार्य निर्दिष्ट होता है।

०.५२. प्रकार्यात्मक स्लाट और श्रेणी—प्रकार्य व्याकरणिक सम्बन्ध है। इसे कर्ता, विधेय, प्रधान, परिसीमक आदि नामों से व्यक्त किया जाता है। स्लाट रचना फ्रेम में एक स्थिति है और यह रचनाफ्रेम में स्थिति और संरचनात्मक अर्थ द्वारा परिभाषित होना है। श्रेणी प्रकार्यात्मक स्लाट की पूर्ति करने वाले प्रकरण हैं। उदाहरण के लिए कर्ता स्लाट की पूर्ति करने वाली श्रेणियों में संज्ञा फ्रेज, सर्वनाम, क्लाज़ आदि हो सकते हैं। टेग्मीम प्रकार्य प्ररूप की तरह न तो केवल स्लाट में व्यक्त होना है और न केवल श्रेणी में। यह स्लाट और श्रेणी का सहसम्बन्ध है।

०.५३ एटिक और एमिक इकाइयाँ—व्याकरण की एटिक इकाइयाँ वस्तुतः विश्लेषणकर्ता या अन्यभाषाभाषी की दृष्टि से प्रथम अनुमान हैं। ये अनिवार्य इकाइयाँ हैं। व्याकरण की एमिक इकाइयाँ अनिवार्य होती हैं और उस भाषा को मातृभाषा के रूप में प्रयुक्त करने वाले की दृष्टि से भाषा की इकाइयाँ हैं (कुक १९६९ : १९)। स्वनप्रक्रिया में एटिक इकाइयाँ स्वन हैं और विभिन्न संस्वनों का एक समूह जो दूसरे संस्वनों के समूह से व्यवच्छेदन में है एमिक इकाई है। व्याकरण में एटिक इकाइयाँ टाग्मा हैं और विभिन्न संटाग्माओं का समूह टेग्मीम है। शब्दकोश में एटिक इकाइयाँ रूप

हैं और विभिन्न संरूपों का समूह रूपिम है जो एमिक इकाई है।

०.५४. **स्तरणों की अवधारणा** – व्याकरण के विभिन्न स्तरणों को स्वीकार करने के कारण अध्ययन अधिक सहज और सुचारु हो जाता है। टेग्मीम विज्ञान की दृष्टि से व्याकरण के कुछ नियमित और कुछ अनियमित (अटिपिकल) स्तरण माने जाते हैं। नियमित स्तरणो मे सामान्यतया वाक्य, क्लाज, फ्रेज, शब्द और रूपिम स्तरण हैं। परन्तु इस पद्धति की यह भी मान्यता है कि भाषा में वाक्य स्तरण से ऊपर के स्तरण भी मिलते है। वाक्य से ऊपर के स्तरणो के रूप में प्रस्तुत अध्ययन में उच्चार और सलाप स्तरण को लिया गया है। रूपिम स्तरण रचना का स्तरण नहीं है, यह संदर्भ का आधारभूत विन्दु है। इस अध्ययन में स्तरणो का क्रम निम्न से उच्चतर की ओर है।

इन नियमित स्तरणो के अतिरिक्त कुछ अनियमित स्तरण भी हैं। ये हैं— स्तरण उछाल (लेवल स्किप), लेयरिंग और लूपबैक। यदि वाक्यस्तरण पर टेग्मीमिक पूरक फ्रेज हो तो यह लेवल स्किप का उदाहरण होगा। नियमित रूप मे वाक्य स्तरण की पूर्ति क्लाज द्वारा होती है। इसी तरह यदि वाक्य स्तरण पर टेग्मीमिक पूरक वाक्य है तो यह लेयरिंग का उदारणहोगा। और यदि वाक्य स्तरण पर टेग्मीमिक पूरक उच्चार है तो बैकलूपिंग कहा जायेगा।

० ५५. **रचना (सिन्टेग्मीम)**—रचना टेग्मीमो की सम्भाव्य शृंखला है।

० ५६ जब मेरे सम्मुख भोजपुरी के विश्लेपण की समस्या आई और मैंने विभिन्न प्रचलित माडलो पर गौर किया तो मुझे लगा कि भोजपुरी के विश्लेपणके लिए टेग्मीम माडल बहुत उपयुक्त सिद्ध होगा। अन्ततः ऐसा ही हुआ। अनावश्यक सैद्धान्तिक उलझाव और जटिलता के अभाव के कारण इस थियरी द्वारा अध्ययन काफी सहज हो जाता है।

व्याकरण मे विभिन्न स्तरण वाक्य के स्वाभाविक स्तरण हैं। इससे एक सुविधा यह भी है कि विश्लेपक किसी भी स्तरण से भाषा का अध्ययन कर सकता है।

इस माडल की एक और महत्त्वपूर्ण बात यह है कि इसके अन्तर्गत वाक्य से ऊपर भी स्तरणो की सत्ता स्वीकार की जाती है और उसका विश्लेपण किया जाता है।

अनुभाग १

स्वनप्रक्रियात्मक अधिक्रम

:.१. एटिक इकाइयाँ :

भोजपुरी ध्वनियों की एटिक इकाइयों का वर्णन उच्चारण के संदर्भ मे बहुत अच्छी रह किया जा सकता है। ध्वनियों के उत्पादन मे निहित उच्चारणात्मक प्रक्रियाएँ सम्पूर्ण ंवरण, स्पर्श संघर्षण, निकुचन, पार्श्विक विवर्तन, नासिकी विवर्तन तथा ताड़न हैं।

१२ वाचिक क्षेत्र (वोकल ट्रंक) के विभिन्न विन्दु जहा वायुप्रवाह कता है ये हैं—कोमल तालु, कठोर तालु, वर्त्स का पृष्ठभाग, वर्त्स, दांत तथा ोष्ठ। इन बिन्दुओ पर इनके सम्मुख स्थित अवयव—जिह्वापश्च, जिह्वाफलक, जिह्वानोक तथा निचला ओष्ठ—वायुमार्ग का पूर्ण संवरण करके भाषाध्वनियो की एक शृंखला उत्पन्न कर सकते हैं जिन्हें स्पर्श कहेंगे। ये ध्वनिया स्वरतंत्रियो की स्पन्दनशील अथवा शिथिल स्थिति के आधार पर घोष और अघोष हो सकती हैं। इन ध्वनियों का पुन: विभाजन उच्चारण के समय इनके साथ सशक्त अथवा अशक्त या नगण्य श्वासझोंका के आधार पर महाप्राण, लघुप्राण तथा अप्राण के रूप में किया जा सकता है।

इन सभी विन्दुओ पर जबकि संवरण बना हो और नासिका मार्ग खुला हो तो नासिक्य ध्वनि उच्चरित होती है। भोजपुरी मे सभी नासिक्य घोष हैं।

जिह्वानोक पीछे की ओर मुडकर वर्त्स तथा कठोर तालु के मध्य भाग के आस-पास के सम्पर्क मे आती है और भाषा ध्वनियो की एक शृंखला घोष, अघोष, महाप्राण और अप्राण के अन्तरो को व्यक्त करती हुई उत्पन्न करती है। इन ध्वनियो को मूर्धन्य स्पर्श कहते हैं।

कठोर तालु और वर्त्स के पृष्ठभाग मे समान शृंखला संघर्षी उन्मोचन के साथ उत्पन्न होती है, जिसे भी स्पर्श कहेंगे।

जिह्वाफलक कठोरतालु के अग्रभाग तथा दंत पृष्ठ पर वायु मार्ग को अवरुद्ध कर देती है परन्तु वायु प्रवाह जिह्वा के एक ओर से होकर निकल जाता है। इस विधि से उत्पन्न ध्वनियों को पार्श्विक ध्वनियाँ कहेंगे।

जिह्वानोक पीछे की ओर मुड़कर वर्त्स तथा कठोर तालु के मध्य किसी बिन्दु पर द्रुत ताड़न देती है जिससे मूर्धन्य उत्क्षिप्त ध्वनि उत्पन्न होती है, जिह्वानोक जब वर्त्सभाग पर एक से अधिक ताडन देती है तो कम्पित ध्वनियाँ उत्पन्न होती हैं।

जिह्वानोक दन्त्य तथा वर्त्स्य भागों पर संकीर्ण निकुचन (नैरो कान्स्ट्रिक्शन) बनाती है जिससे अघोष सघर्षी ध्वनियां उत्पन्न होती हैं।

दोनों स्वरतंत्रियां एक-दूसरे के समीप आती है जिससे वायु-प्रवाह संकीर्ण श्वासद्वार से होकर प्रवाहित होता है और निरन्तर घर्षण सुनाई पड़ता है तथा घोष सघर्षी ध्वनि उत्पन्न होती है।

जिह्वाग्र कठोर तालु की ओर निकुचन (कान्स्ट्रिक्शन) बनाने के लिए उठती है जिससे बिना किसी श्रव्य घर्षण के वायु निकल जाती है। इस प्रकार से उत्पन्न ध्वनियाँ घर्षणरहित प्रवाही है। जिह्वाग्र को क्रमशः नीचे लाते हुए और मार्ग को विस्तृत करके घर्षणरहित ध्वनियों की पाच श्रेणियाँ उत्पन्न की जा सकती हैं जो स्वरक हैं।

जिह्वापश्च को कोमलतालु की ओर ले जाकर निकुंचन बनाते हैं जिससे श्रव्य घर्षण के बिना वायु निकल जाती है, साथ ही ओष्ठों को कुछ संवृत करते हैं— इससे उत्पन्न ध्वनि घर्षणरहित द्व्योष्ठ्य प्रवाही है। वायुमार्ग को क्रमशः विस्तृत करके पश्चस्वरकों की पाँच श्रेणियाँ उत्पन्न करते हैं।

जिह्वामध्य इसी तरह के मार्ग बनाती है और चार भाषा ध्वनियाँ उत्पन्न होती है।

ये सभी भाषा ध्वनियाँ सामान्यतया घोष हैं परन्तु अघोष प्रकार भी मिलते हैं।

इन स्वरों के उच्चारण के समय यदि नासिका मार्ग खुला हो तो अनुनासिक प्रकार उत्पन्न होंगे।

मात्रा की दृष्टि से भाषा ध्वनियों में अन्तर, दीर्घ, लघु तथा अतिलघु के रूप में है।

इन प्रक्रियाओं में जो ध्वनियाँ उत्पन्न होती है तथा जिन ध्वनियों के बारे में विवरण दिया गया है वे तालिका एक में प्रस्तुत की जा रही हैं—

१ ३ तालिका १ में ७६ एटिक इकाइयाँ अथवा स्वन समाविष्ट हैं। इनमें से कुछ एटिक इकाइयाँ (आगे से स्वन) पूरक है, कुछ मुक्त रूपान्तर तथा कुछ प्रतिबद्ध रूपान्तर हैं।

स्पर्श के अन्तर्गत स्वनों की छः शृंखलाएँ सम्मिलित हैं जिनमें से मूर्धन्य शृंखला के स्वनों और पर वर्त्स्य शृंखला के स्वनों में ध्वन्यात्मक समानता मिलती है। इसी तरह वर्त्स्य तथा दन्त्य शृंखला के स्वनों में ध्वन्यात्मक समानता है। पर-वर्त्स्य तथा

तालिका-१ स्वन

	द्वयोष्ठ्य	दन्त्य	वर्त्स्य	पश्चवर्त्स्य	अग्रतालव्य	मूर्धन्य	तालव्य	कोमलतालव्य	श्वासद्वारीय
स्पर्श	प प' फ	त थ	त> थ>	ट< ठ<		ट ठ		क क' ख	
	ब भ	द ध	द> ध>	ड< ढ<		ड ढ		ग घ	
				च< छ<			च [illegible]		
				ज< झ<			ज झ		
नासिक्य	म म्ह	न<	न न्ह		न>		ञ	ङ ङ्ह	
पार्श्विक				ल<	ल ल्ह				
उत्क्षिप्त						ड़ ड़्ह			
कम्पित			र र्ह	र>					
संघर्षी		स<	स						ह
अर्धस्वर	व उ़ आ़						य, इ़, आ़		

	अग्र		केन्द्रीय	पश्च
उच्च	ई			ऊ
	इ			उ
मध्य	ए ऐं			ओं ओ
निम्नमध्य	ऐं			औं
निम्न			अं अ अः	
			आ	
संयुक्तस्वर	अइ			अउ

वर्त्स्य शृंखलाओं के स्वन मूर्धन्य और दन्त्य शृंखलाओं के स्वनों के साथ क्रमशः कुछ प्रकरणों में पूरण में हैं। पर-वर्त्स्य शृंखला के स्वन अग्र स्वरों के पूर्व आते हैं, मूर्धन्य शृंखला के स्वन अन्यत्र आते हैं। अघोष, अप्राण कोमल तालव्य तथा द्वयोष्ठ्य स्पर्शों का क्षीण महाप्राणत्व केवल कुछ प्रकरणों में अनिबद्ध रूपान्तर है। क प, क' प' के सभी परिवेशों में आ सकते हैं परन्तु ये ऐसे परिवेशों में भी आते हैं जिनमें क' प' नहीं आते।

सपर्शी उन्मोचन के साथ, तालव्य तथा पर-वर्त्स्य स्वनों की दोनों शृंखलाओं के मध्य ध्वन्यात्मक समानता तथा पूरक वितरण को प्रकट करते हैं। पर-वर्त्स्य शृंखला के स्वन प्राय प्रसार के रूप में अग्र स्वरों के पूर्व आते हैं, तालव्य शृंखला के स्वन अन्यत्र आते हैं।

नासिक्यों में, अग्र तालव्य, वर्त्स्य (अप्राण) तथा दन्त्य नासिक्य ध्वन्यात्मक रूप से समान हैं। वर्त्स्य (अप्राण) नासिक्य के तीन उच्चारणात्मक रूपान्तर हैं।

अग्र तालव्य (अप्राण) तथा पर-वर्त्स्य पार्श्विक में ध्वन्यात्मक समानता है। ये मुक्त-रूपान्तरण में हैं। ल< के सभी परिवेशों में ल आ सकता है, परन्तु ल के सभी परिवेशों में ल< नहीं आ सकता।

पर-वर्त्स्य तथा वर्त्स्य कम्पित में ध्वन्यात्मक समानता मिलती है और ये मुक्त रूपान्तरण में हैं। र र> के सभी परिवेशों में आ सकता है, परन्तु ऐसे परिवेशों में भी आता है जिसमें र> नहीं आता।

वर्त्स्य तथा दन्त्य संघर्षी में ध्वन्यात्मक समानता है और ये मुक्त रूपान्तरण में हैं। स स< के सभी परिवेशों में आ सकता है, परन्तु ऐसे परिवेशों में भी आता है जिनमें स< नहीं आता।

अर्धस्वर वही व्यंजनों की भांति आते हैं और वही श्रुति के रूप में।

स्वरों में, अग्र मध्य स्वरों में ध्वन्यात्मक समानता है और ये मुक्त रूपान्तरण में हैं। ए ऐं के सभी परिवेशों में आ सकता है, जबकि ए के सभी परिवेशों में ऐं नहीं आ सकता।

पश्च मध्य स्वरों में ध्वन्यात्मक समानता है और ये मुक्त रूपान्तरण में हैं। ओ ओं के सभी परिवेशों में आ सकता है परन्तु ओ के सभी परिवेशों में ओं नहीं आ सकता।

अग्र निम्नमध्य तथा संयुक्त स्वर अइ में ध्वन्यात्मक समानता है। संयुक्त स्वर अइ ऐं के सभी परिवेशों में आता है परन्तु ऐं अइ के सभी परिवेशों में नहीं आता। कभी-कभी यह अग्र मध्य के साथ मुक्त रूपान्तरण में भी मिलता है।

पश्च निम्नमध्य तथा संयुक्त स्वर अउ में ध्वन्यात्मक समानता है अउ औं के सभी परिवेशों में आता है परन्तु औं अउ के सभी परिवेशों में नहीं आता।

अँ स्वन अ के साथ पूरक वितरण में है। अँ ऐसे परिवेशों में आता है जिनमें अ नहीं आता। अः कुछ प्रकरणों में अ का प्रतिबद्ध रूपान्तर है।

नासिक्यों के पूर्व तथा पश्चात् आने पर स्वरों में क्षीण अनुनासिकता मिलती है।

यह संस्वनात्मक अनुनासिकता क्षीण और तीव्र दोनो कोटियो की हो सकती है। संयुक्त व्यंजनों के पूर्व आने पर स्वर कुछ अधिक दृढ हो जाते हैं।

१.४. एमिक इकाइयाँ

वे स्वन, जो प्रतिवद्ध रूपान्तर नही हैं तया जो न तो मुक्त रूपान्तरण मे आते हैं और न ही पूरक वितरण में, एमिक इकाई माने जायेंगे। ऐसे स्वन जिन्हें अव्यतिरेकी स्थापित किया गया है वे एकसाथ मिलकर स्वनिम बनाते हैं। इस तरह के अव्यतिरेकी स्वनों के समूहों (स्वनिमो) को नीचे दिया जा रहा है। दो ऐसे समूहों मे कोई सदस्य यदि व्यतिरेक प्रकट कर रहे है तो वहाँ सम्पूर्ण समूहों के मध्य व्यतिरेक समझा जायेगा।

[प, प'] :– [फ] के व्यतिरेक मे, [पार] (किसी नदी आदि का) किनारा, अन्त, सीमा, [फार] हल का एक भाग

[ब] के व्यतिरेक मे, [पान] पान, [बान] आदत

[भ] के व्यतिरेक मे, [पात] पत्ता, [भात] उवला हुआ चावल

[फ] :– [ब] के व्यतिरेक मे, [फाग] एक गीत [बाग] वगीचा, [भ] के व्यतिरेक मे, [फोर] फोड़ना, [भोर] प्रात काल

[ब] :– [भ] के व्यतिरेक मे [बार] वाल, [भार] वजन

[त, त>] :– [थ, थ>] के व्यतिरेक मे, [तोर] तुम्हारा, [थोर] थोड़ा, [द, द>] के व्यतिरेक मे, [तान] फैलाना, [दान] दान

[ध, ध>] के व्यतिरेक मे, [तार] तार [धार] धारा

[थ, थ>] :– [द, द>] के व्यतिरेक में, [थर] छना हुआ, साफ [दर] पीसना।

[ध, ध>] के व्यतिरेक मे, [थार] धातु की वडी थाली, [धार] धारा

[द, द>] :– [ध, ध>] के व्यतिरेक में [दाम] मूल्य, [धाम] तीर्थस्थान

[ट, ट<] :– [ठ, ठ<] के व्यतिरेक मे, [टाठ] मजबूत, [ठाठ] चौखटा, शान-शौकत

[ड, ड<] के व्यतिरेक मे, [टोला] छोटा गाव, मुहल्ला [डोला] पालकी

[ढ, ढ<] के व्यतिरेक में [टाल] ढेर, [ढाल] ढाल

[ठ, ठ<] :– [ड, ड<] के व्यतिरेक मे, [ठोर] चोच, [डोर] रस्सी [ढ, ढ<] के व्यतिरेक में, [ठोर] चोच, [ढोर] पशुओं का समूह, पशु

[ड, ड<] :– [ढ, ढ<] के व्यतिरेक मे, [डाट] डाटना, [ढांट] डण्ठल, पुआल

[क, क] :– [ख] के व्यतिरेक मे [कार] कार्य, [खार] दुश्मनी

[ग] के व्यतिरेक मे, [काल] समय, मृत्यु का समय, [गाल] कपोल

[घ] के व्यतिरेक मे, [कर] करो, [घर] घर

[ख] :– [ग] के व्यतिरेक मे, [खारा] खारा, [गारा] गारा। [घ] के

व्यतिरेक मे, [सार] दुश्मनी, [पार] फलों का बड़ा गुच्छा जैसे केले की पार

[ग] :– [घ] के व्यतिरेक मे, [गाटा] दुष्ट, धानाक, [पाटा] पाटा

[च, च<] – [छ, छ<] के व्यतिरेक मे, [चानी] चाँदी, [छानी] छाजन।

[ज, ज<] के व्यतिरेक मे, [चोर] चोर, [जोर] ताकत

[झ,झ<] के व्यतिरेक मे [चार] चार [झार] सभी, सब कुछ

[छ,छ<] :– [ज, ज<] के व्यतिरेक मे, [छाप] छापना [जाप] मंत्रों का जाप

[झ, झ<] के व्यतिरेक मे, [छोर] किनारा, [झोर] शोरबा

[ज, ज<] :– [झ, झ<] के व्यतिरेक मे, [जूठ] जूठा, [झूठ] झूठ

[म] :– [म्ह] के व्यतिरेक मे, [बर्मा] छेद करने का एक यंत्र, [बर्म्हा] ब्रह्मा

[न, न,< न>] के व्यतिरेक मे, [मह] मथना (दही आदि), [नह] नाखून

[न, न,< न>] – [न्ह] के व्यतिरेक मे, [सोना] स्वर्ण, [सोन्हा] सेंधा नमक

[ड] के व्यतिरेक मे, [सन], पटसन की जाति का एक पौधा [सड] साथ

[ड्ह] के व्यतिरेक मे [सन्],[सड्ह] सच

[ड] :– [ड्ह] के व्यतिरेक मे, [सड] साथ, [सड्ह] संघ

[ल, ल>] – [ल्ह] के व्यतिरेक मे, [चेला] शिष्य, [चेल्हा] एक तरह की मछली

[ड] के व्यतिरेक मे, [वाला] कान मे पहनने का आभूषण, [वाडा] अहाता, प्रागण

[र, र>] के व्यतिरेक मे, [लाल] लाल [लार] लार

[ड] – [ड्ह] के व्यतिरेक मे, [बूड़] डूब जाना, (बूड्ह] वृद्ध

[र, र>] के व्यतिरेक मे, [बड] बड़ा, [बर] एक तरह का वृक्ष

[र, र>] – [र्ह] के व्यतिरेक मे, [सारी] साड़ी, [सार्ही] मलाई

[स, स<] – [ह] के व्यतिरेक मे, [सूर] अन्धा, [हूर] लाठी का सिरा

[ह] – [व उ् आ] के व्यतिरेक मे, [दाह] दाहसंस्कार [दाव] बारी

[य, इ्, आ] के व्यतिरेक मे [हार] हार, माला, [यार] मित्र, प्रेमी

[व, उ्, आ] – [य,इ्, आ] के व्यतिरेक मे [वार] आक्रमण, [यार]

स्वर

(५) ऊँचाई का व्यतिरेक

[ई] – [इ] के व्यतिरेक मे, [पीया] पीजिये, [पिया] पति

[ए,ऍ] के व्यतिरेक मे, [फीर] पुन [फेर] चक्कर

[इ] :– [ए, ऍ] के व्यतिरेक मे, [तिल] तिल, [तेल] तेल

[अ, अँ, अ] :– [आ] के व्यतिरेक मे, [दम] सास, [दाम] मूल्य

[ऊ] – [उ] के व्यतिरेक मे, [दूर] दूर, [दुर] भाग जा (कुत्ते को भगाने का शब्द)

[ओ, ओँ] के व्यतिरेक में, [पूर] सिंचाई का एक साधन, [पोर] गन्ना, बांस आदि के दो गांठों के बीच का भाग

[उ] :– [ओ, ओँ] के व्यतिरेक में [चुप] शान्त, [चोप] कच्चे ग्राम के फल की जड़ का रस

(फ) स्थिति का व्यतिरेक

[ई] :– [ऊ] के व्यतिरेक में, [खीर] खीर, [खूर] खुर,
[उ] के व्यतिरेक मे, [पीर] दर्द, पीड़ा, [पुर] गाव
[ओ, ओँ] के व्यतिरेक मे, [नीक] अच्छा, सुन्दर, [नोक] नोक, नुकीला सिरा
[अ, अँ, अ] के व्यतिरेक मे, [चीर] कपड़े का फटना, [चर] पशुओं के चरने की घास
[आ] के व्यतिरेक में, [झील] झील, [झाल] एक तरह का वाद्ययंत्र

[इ] : [ऊ] के व्यतिरेक में, [घिर] घिरना, [घूर] गोबर तथा कूडाकरकट फेकने का स्थान
[उ] के व्यतिरेक मे, [बिकाई] बेचने के लिए, [बुकाई] पीसना
[ओ, ओँ] के व्यतिरेक मे, [खिल] खिलना, [खोल] गिलाफ
[अ, अँ, अ.] के व्यतिरेक मे, [गिर] गिरना, [ग.र] गर्दन
[आ] के व्यतिरेक में, [थिर] स्थिर, [थार] एक तरह की धातु की बडी थाली

[ए, एँ] :– [ऊ] के व्यतिरेक मे, [खेल] खेल, [खूल] खुलना
[उ] के व्यतिरेक मे, [छेरी] बकरी, [छुरी] छुरी
(ओ, ओँ) के व्यतिरेक मे (डेरा) निवासस्थान, (डोरा) धागा
(अ, अँ, अ:) के व्यतिरेक मे, (नेग) उपहार, (नग) नग
(आ) के व्यतिरेक मे (तेल) तेल, (ताल) तालाब

(अ, अँ, अ.) :– (ऊ) के व्यतिरेक में, (गर) गला (गूर) गुड़
(उ) के व्यतिरेक मे, (कल) मशीन, (कुल) कुल
(ओ, ओँ) के व्यतिरेक मे, (जर) बुखार, (जोर) ताकत
(आ) के व्यतिरेक मे, (दम) सास, (दाम) मूल्य

(आ) :– (ऊ) के व्यतिरेक मे, (धार) धारा, (धूर) धूल
(उ) के व्यतिरेक मे, (ढाक) एक तरह का वृक्ष, (ढुक) छिपना
(ओ, ओँ) के व्यतिरेक मे, (काना) केवल एक ग्राख वाला व्यक्ति, (कोना) कोना

संयुक्त स्वरों में व्यतिरेक

[अइ] :–[अउ] के व्यतिरेक मे, [बइरही] मिट्टी का त्याज्य घड़ा [बउरही] पागल स्त्री

१.६. व्यंजन विस्तार

व्यंजन मे विस्तार स्वनिमीय महत्व का है। विस्तार मूल व्यंजनों के व्यतिरेक मे है। उनके लघुतम युग्म ये हैं :

।त।	।तः।	।पता।	पता	।पत.।।	पता
।ल।	।लः।	।गला।	कमीज का गला	।गल.।।	अनाज आदि का ढेर
।न।	।नः।	।गुन।	गुनो	।गुनः।	गुन्न
।ग।	।गः।	।सगा।	नौकरी मिलना	।सग.।।	सग्गा, सग्गा

१.७ वितरण

व्यंजन—अधिकतर व्यंजनों के उपागम (ऑनसेट) मे कोई बन्धन नहीं है, वे आद्य, मध्य और अन्त्य सभी स्थितियों मे आ सकते हैं। कुछ ऐसे व्यंजन हैं जिनके उपागम मे बन्धन है। ढ आद्य स्थिति मे आता है, म्ह, न्ह, ञ, ल्ह, र्ह, स्वर मध्यस्थ स्थिति मे तथा ड़, ड़्ह, ढ़, ढ़्ह स्वरमध्यस्थ और अन्त्य स्थितियों मे आते हैं।

जैसाकि ऊपर वर्णित है, ञ को छोडकर सभी स्वन-समूह व्यतिरेकीय स्थिति प्रकट करते हैं। ञ के साथ लघुतम युग्म नहीं मिलते। भुञिया 'धरती' तथा बढ़िना 'अच्छा' का ञ अर्धस्वर य, जो अनुनासिक स्वर के साथ है, का उपरूप (वाइ-फार्म) है। ऐसा सुनाई पडने का कारण य की श्रुतीय प्रकृति है। प्रस्तुत अध्ययन मे ञ को स्वतन्त्र ध्वनीयअस्तित्व (फोनटिक एंटिटी) के रूप मे स्वीकार किया गया है।

व्यंजन स्वनिमो का वितरण निम्नलिखित है

	आद्य	मध्य	अन्त्य
।प।	।पहुना। अतिथि	।कपार। शिर	।पाप। पाप
।फ।	।फर्रा। फावडा	।गोफा। प्रथम अंकुर	हाफ। थकना
।ब।	।बरध। बैल	।डेबर। ऐसा व्यक्ति जिसकी एक आंख कुछ टेढी हो	।खराब। बुरा
।भ।	।भूसा। भूसा	।गोभी। गोभी	।भाभ। वाष्प
।त।	।तात। गर्म	।बाती। कपड़े की बत्ती	।जात। चक्की
।थ।	।थेथर। बेहया	।नथुनी। नाक मे पहनने का आभूषण	।हाथ। हाथ
।द।	।दम। सांस, ताकत	।मदारी। मदारी	।नाद। बैलों के खाने का बडा सा पात्र
।ध।	।धामिन। एक तरह का सांप	।गोधना। एक त्योहार	।बध। वध

। ट ।	। टमाटर । टमाटर	। लाटा । महुआ के फूल से बना एक खाद्य पदार्थ	। टेंट । जेब
। ठ ।	। ठोर । चोंच	। ठठेर । बर्तन बनाने वाली एक जाति	। ठूठ । ठूठ
। ड ।	। डोम । एक पिछड़ी जाति	। हन्डा । पीतल का एक बड़ा बर्तन	। मटन्ड । संतुष्ट
। ढ ।	ढेकुल । सिचाई की एक किस्म	। ० ।	। ० ।
। च ।	। चोर । चोर	। मचान । मचान	। काच । अनपका
। छ ।	। छाता । छतरी	। बाछा । बछड़ा	। पूछ । पूछ
। ज ।	। जन्तर । तावीज	। मजूर । मजदूर	। गाज । झाग
। झ ।	। झोपड़ी । झोपड़ी	। माझा । हिस्सा	। बोझ । सामान
। क ।	। केंचुल । सांप द्वारा त्यागी हुई उसकी चमड़ी की ऊपरी सतह	। काका । पिता	। हांक । हांकना
। ख ।	। खून । खून	। बखरा । हिस्सा	। ढांख । पलाश
। ग ।	। गोरू । पशु	। टंगरी । टाग	। लोग । लोग, जनता
। घ ।	। घाम । धूप	। बाघिन । बाघिन	। घाघ। चालाक
। म ।	। माहुर । विष	। टमाटर । टमाटर	। घाम । धूप
। म्ह ।	। ० ।	। जम्हाई । जम्हाई	। ० ।
। न ।	। नांव । नाम	। दाना । चबेना	। बान । आदत
। न्ह ।	। ० ।	। घीन्हा । उपहार	। ० ।
। ङ ।	। ० ।	। टाङुन । एक तरह का पौधा	। गाङ । खेल में दो दलों या दो भागों में से एक भाग
। ड्ह ।	। ० ।	। ओड्हाई । निद्रालु	। जाड्ह । जांघ
। ल ।	। लात । पैर	। बालम । पति	। गाल । कपोल
। ल्ह ।	। ० ।	। चेल्हवा । एक तरह की मछली	। ० ।
। ड़ ।	। ० ।	। गेड़ुर । एक तरह का कीडा	। कोतड़ । पोला
। ड़्ह ।	। ० ।	। पड़्हिन । एक तरह की मछली	। गड़्ह । किला
। र ।	। रात । रात्रि	। गरूर । घमंड	। हर । हल
। र्ह	। ० ।	। कर्ही । एक तरह का भोज्य पदार्थ	। ० ।
। स ।	। सेनुर । सिन्दूर	। भसुर । पति का बड़ा भाई	। घास । घास
। ह ।	। हाथ । हाथ	। गोहूं । गेहूं	। गोह । एक तरह का सांप

अर्धस्वर

। व ।	। चोसर । अधौड़ा भैंस या गाय	।बेवा । विधवा	। घाव । घाव
। य ।	। यार । मित्र, प्रेमी	। हया । संयम	। सजाय । सज़ा

स्वर

। ई ।	। ईंगुर । सिन्दूर की तरह का एक लाल पाउडर	। तवीज । तावीज	। कानी । एक आँख वाली स्त्री
। इ ।	। इमली । इमली	। खातिर । आवभगत	। नाचि । नाच, ड्रामा
। ऊ ।	। ऊख । गन्ना	। मूस । चूहा	। गोरू । पशु
। उ ।	। उतारन । पहनकर पुराना किया हुआ	। ठेंगुनी । छोटी लाठी	। सासु । सास
। ए ।	। एड़ा । टेकने का साधन, एड़ी	। फेरा । एक बार,	। पाँडे । ब्राह्मण की एक उपजाति
। ओ ।	। ओझा । ओझा	। रोवा । रोवा	। सरसो । सरसो
। अ ।	। अमावस । अमावस्या	। बल । ताकत	। धम्म । एक तरह की आवाज
। आ ।	। आम । आम	। धान । धान	। दाना । भूजा, चबेना
। अइ ।	। अइसन । इस तरह का	। नइहर । मायका	। समइ । समय
। अउ ।	। अउसर । अवसर	। बउर । बौर	। ० ।
। ~ ।	। ईंट । ईंट	। कारिख । कारख	। रसोईं । रसोई

हाइपरस्वनिम

१.८. संहिता

संहिता स्वनिमीय है। आंतरिक विप्रकृष्ट तथा सन्निकृष्ट संहिताओं (इंटरनल ओपन एण्ड क्लोज जंक्चर्स) में व्यतिरेक मिलता है। प्रस्तुत अध्ययन में आन्तरिक *विप्रकृष्ट संहिता से दो स्वनिमों के मध्य श्वासप्रवाह में अवरोध का अर्थ लिया गया है।* दो स्वनिमों के मध्य श्वासप्रवाह में अवरोध, सन्निकृष्ट संहिता का लक्षण माना गया है। संहिता दो भागों में विभक्त है (१) स्वर तथा अनुवर्ती व्यंजन के मध्य और (२) दो व्यंजनों के मध्य

(१)	। खाला । खाने की आदत से सम्बन्धित	। खा+ला । भोजन कर लीजिये
	। जाला । जाने की आदत से सम्बन्धित	। जा+ला । जाकर ले लीजिये
	। टोला । मुहल्ला	। टो+ला । छू लीजिये
	। पीला । पीला	। पी+ला । पी लीजिये
(२)	। खोल्लैं । खुला हुआ	। खोल+लैं । खोल दिया ?

१.९. गुच्छ-स्तरण

स्वनिम गुच्छ तीन उपशीर्षकों में विभक्त हो सकते हैं—व्यंजन गुच्छ, अर्धस्वर गुच्छ तथा स्वर गुच्छ।

१.९१ व्यंजन गुच्छ—आद्य स्थिति में केवल एक-दो व्यंजनों का गुच्छ प्राप्त होता है। यह ।क्र। है। यह ।क्रिस्तान। 'विदेशी' शब्द में मिलता है जो उधार लिया गया शब्द है। अन्य सभी गुच्छ मध्य स्थिति में प्राप्त होते हैं। अन्त्य स्थिति में कोई गुच्छ हमें नहीं मिला।

दो व्यंजनों का गुच्छ बहुलता से प्राप्त होता है। तीन व्यंजनों का गुच्छ नहीं मिलता। उदाहरण नीचे दिये जा रहे हैं—

(१) गुच्छ, जिनमे दोनों सदस्य एक ही समूह से सम्बन्ध रखते हैं :

।प्फ।	।गप्फा।	ग्रास
।ब्भ।	।भब्भड़।	शोर
।त्थ।	।खुत्था।	पेड़ की गाँठ वाली ऊपरी जड़
।रद।	।इजरदार।	सम्मानित व्यक्ति
।द्ध।	।मद्धिम।	धुंधला
।ट्ठ।	।गट्ठर।	गट्ठर
।ड्ढ।	।ठुड्ढी।	चिबुक
।क्ख।	।अक्खड़।	अक्खड़
।ग्घ।	।सुग्घर।	सुन्दर
।च्छ।	।वरच्छा।	विवाह से पूर्व का एक अनुष्ठान

(२) ।प। + स्पर्श, नासिक्य, पार्श्विक, कम्पित, संघर्षी

।प्च।	।लप्चा।	एक तरह की मछली
।प्न।	।अप्ने।	मैं, स्वयं
।प्ल।	।आप्लोग।	आप सब
।प्र।	।उप्रां।	ऊपर
।प्स।	।अप्सगुन।	अपशकुन

(३) ।फ। + स्पर्श

।फ्क।	।हफ्कमीज।	आधी बांह की कमीज

(४) ।व। + स्पर्श, नासिक्य, कम्पित, संघर्षी

।व्क।	।डुव्की।	डुबकी
।व्न।	।लव्नी।	ताड़ी रखने का मिट्टी का बर्तन
।व्र।	।गोव्रउला।	गुबरैला
।व्स।	।सव्से।	सभी से
।व्हू।	।कव्हूं।	कभी भी

(५) ।त। + स्पर्श, नासिक्य, कम्पित, संघर्षी

।त्ख।	।लत्खोर।	गुच्चा

।त्ग।	।पात्गोभी।	पातगोभी
।त्ल।	।पोत्ला।	फ़र्श पोछने का कपड़ा
।त्र।	।सत्रह।	सत्रह
।त्ह।	।सत्हरा।	सात तहों वाला

(६) ।थ। + स्पर्श

।थ्क।	।चउथ्का।	चौथा

(७) ।द। + स्पर्श, कम्पित

।द्ब।	।बद्बोय।	दुर्गन्ध
।द्ख।	।सुद्खोर।	सूदखोर
।द्ग।	।मदद्गार।	सहायक
।द्न।	।गोद्ना।	गोदना
।द्र।	।भद्रा।	अव्यवस्था का साथ लगे रहना

(८) ।ट। + स्पर्श, नासिक्य, संघर्षी

।ट्क।	।छोट्का।	छोटा
।ट्म।	।खट्मिठवा।	एक तरह का मीठा भोज्य पदार्थ
।ट्ह।	।कट्हा।	काटने की आदत रखने वाला

(९) ।ठ। + स्पर्श, कम्पित, संघर्षी

।ठ्क।	।बइठ्की।	देर तक बैठना
।ठ्र।	।गंठ्री।	गठरी
।ठ्ह।	।अठ्हत्तर।	अठहत्तर

(१०) ।ड। + नासिक्य

।ड्म।	।हेड्महटर।	प्रधानाध्यापक

(११) ।च। + स्पर्श, नासिक्य, कम्पित, संघर्षी

।च्प।	।पच्पन।	पचपन
।च्छ।	।कच्छा।	एक तरह की सुतली
।च्क।	।दच्का।	आघात से धक्का
।च्म।	।सच्मुच।	सचमुच
।च्न।	।कच्नार।	एक पौधा
।च्र।	।अच्रज।	आश्चर्य
।च्ह।	।पंच्हरा।	पाँच तहों वाला

(१२) ।छ। + पार्श्विक, कम्पित

।छ्ल।	।पिछ्ला।	पीछे वाला
।छ्र।	।मछ्री।	मछली

(१३) ।ज। + स्पर्श, नासिक्य

।ज्ब।	।उज्बक।	मूर्ख
।ज्द।	।करज्दार।	कर्जदार

।ज्म। ।अज्माइस। आजमाइश

(१४) ।झ। + स्पर्श

।झ्क। ।सोझ्का। सीधा वाला

(१५) ।क। + स्पर्श, नासिक्य, पार्श्विक, उत्क्षिप्त, कम्पित, संघर्षी, अर्धस्वर

।क्प। ।लड़क्पन। लड़कपन

।क्य। ।लुक्या। छिपोगे

।क्त। ।एक्तिस। इकत्तीस

।क्ट। ।कक्टा। सूखा

।क्ठ। ।टिक्ठी। ताबूत

।क्झ। ।झक्झोर। हचकोला

।क्न। ।कक्ना। एक तरह का आभूषण

।क्ल। ।बक्लोल। मूर्ख

।क्ड। ।केक्ड़ा। केंकड़ा

।क्र। ।तक्रार। झगड़ा

।क्स। ।एक्सठ। इकसठ

।क्ह। ।कक्ही। कंघी

।क्व। ।अंक्वार। गोद

(१६) ।ख। + स्पर्श, अर्धस्वर

।ख्ठ। ।सुख्ठा। सूखा हुआ पदार्थ

।ख्म। ।आंख्मिचउनी। आखमिचौनी

।ख्व। ।रख्वार। रखवाली करने वाला

(१७) ।ग। + स्पर्श, पार्श्विक, उत्क्षिप्त, कम्पित

।ग्व। ।भोग्वा। भोगोगे

।ग्ड। ।डुग्डुग्गी। डुग्गी

।ग्ल। ।अग्ला। प्रथम

।ग्ड़। ।झग्ड़ालू। झगड़ालू

।ग्र। ।मग्रूर। घमंड

(१८) ।म। + स्पर्श, नासिक्य, पार्श्विक, संघर्षी

।म्ध। ।सम्धी। पुत्र की पत्नी का पिता

।म्क। ।हम्के। मुझे

।म्च। ।अफिम्ची। अफीमची

।म्ज। ।कम्जोर। दुर्बल

।म्न। ।सम्ने। सामने

।म्ल। ।इम्ली। इमली

।म्ह। ।हम्हन। हम

।स्त।	।दोस्त।	मित्र
।स्द।	।ख़ुस्दिल।	प्रसन्नचित्त
।स्क।	।मस्का।	मक्खन
।स्ख।	।घुस्खोर।	रिश्वत लेने वाला
।स्र।	।दुस्रा।	दूसरा

(२६) ।ह्। + स्पर्श, नासिक्य, कम्पित, संघर्षी, अर्धस्वर

।ह्प।	।गदह्पन।	मूर्खता
।ह्ब।	।लोह्बान।	लोबान
।ह्त।	।मह्तारी।	मां
।ह्ट।	।हेडमह्टर।	प्रधानाध्यापक
।ह्क।	।लह्कल।	प्रज्वलित (अधिकतर आग के सन्दर्भ में)
।ह्ग।	।रह्गीर।	राहगीर
।ह्च।	।निह्चय।	निश्चित
।ह्ज।	।मुंह्जोर।	मुँहजोर
।ह्न।	।बह्नोई।	बहिन का पति
।ह्र।	।मेह्रारु।	स्त्री, पत्नी
।ह्स।	।तोह्से।	तुमसे
।ह्व।	।मह्वारी।	मासिक

१.६२ अर्धस्वरगुच्छ—सभी अर्धस्वर गुच्छ मध्य स्थिति में प्राप्त होते हैं। उदाहरण :

।य। + स्पर्श, पार्श्विक, कम्पित

।य्म।	।मय्मा।	सौतेली माँ
।य्र।	।लय्का।	भोजन
।य्ग।	।अय्गुन।	अवगुन
।य्ल।	।पियलस।	पिया
।य्र।	।बयुरा।	बालापन लिये हुए

।व। + नासिक्य, पार्श्विक, कम्पित, संघर्षी

।व्न।	।रोव्ना।	अधिक रोने वाला, खेल में बेईमानी करने वाला
।व्ल।	।बनव्ले।	बनाया
।व्र।	।दंव्री।	अनाज निकालने के लिए फैलाया गया ढंठल

। व्स ।	। अमव्सा ।	अमावस्या
। व्ह ।	। घव्हा ।	घायल

१.६३ स्वरगुच्छ –दो स्वरो का गुच्छ बहुलता से प्राप्त होता है। कुछ तीन स्वरों के गुच्छ भी मिलते हैं। ऐसे गुच्छ भी पर्याप्त मात्रा मे मिलते हैं जिनमे संयुक्त स्वर गुच्छ का पहला अंग होता है और मूल स्वर उसका दूसरा अंग। स्वरों के गुच्छ मध्य और अन्त्य स्थितियों मे मिलते हैं।

१.६३१ दो स्वरों के गुच्छ—दो स्वरों के गुच्छ छः समूहों में विभाजित हो सकते हैं—

(१) वह समूह, जिसके गुच्छों में पहला अंग दीर्घ होता है :

। आउ ।	। बाउर ।	बुरा
। आइ ।	। डाइन ।	प्रेतनी
। एइ ।	। बेइमान ।	बेईमान
। एउ ।	। नेउर ।	नेवला
। ओइ ।	। पोइ ।	गन्ने के उगने के समय का अंखुआ
। ओअ ।	। धोअन ।	किसी कपड़े आदि के धोने के उपरांत बचा हुआ पानी (जिसमें धोया गया हो)

(२) वह समूह, जिसके गुच्छों में दूसरा अंग दीर्घ होता है :

। इआ ।	। महिआ ।	गन्ने के रस से गुड़ बनाते समय उससे निकलने वाली झाग
। उआ ।	। मनुआ ।	एक वनस्पति
। अई ।	। चिरई ।	चिड़िया
। अऊ ।	। गऊ ।	गाय

(३) वह समूह, जिसके गुच्छों मे दोनो अंग दीर्घ होते हैं :

। ईए ।	। हीए ।	हृदय, अन्तरतम
। ईआ ।	। बीआ ।	बीज
। ऊई ।	। सूई ।	सुई
। ऊआ ।	। फूआ ।	पिता की बहिन
। एई ।	। लेई ।	लेई
। एआ ।	। देआद ।	सम्बन्धी
। ओआ ।	। पोआ ।	नया बिरवा
। आई ।	। माई ।	मा
। आऊ ।	। नाऊ ।	नाई
। आए ।	। जाए ।	जाना से सम्बन्धित
। ओई ।	। होई ।	होगा

(४) वह समूह, जिसके गुच्छों मे दोनों अंग ह्रस्व होते हैं .

।उइ।	।धुइहर।	वह गाढदार भूसा या कूड़ा जिसे पशुओं के घर में जलाकर धुआँ करके मच्छरों को भगाते हैं।
।इअ।	।मनिअन।	माली (बहुवचन मे)

(५) वह समूह, जिसके गुच्छो मे पहला अंग संयुक्त स्वर होता है

।अइ-आ।	।हइ-आ।	हैजा
।अइ-ए।	।दइए।	देवता, ईश्वर
।अउ-आ।	।छउआ।	एक वनस्पति
।अउ-ए।	।हउए।	है
।अउ-अ।	।मउअति।	मौत

(६) वह समूह, जिसके गुच्छो मे दूसरा अंग संयुक्त स्वर होता है

।इ-अइ।	।वहटिअइबा।	(तुम काम को) टालोगे
।इ-अउ।	।वहटिअउला।	(तुमने काम को) टाला

१.९३२ तीन स्वरों के गुच्छ– तीन स्वरो के गुच्छ मे, गुच्छ के अन्तिम अंग के रूप मे दीर्घ तथा ह्रस्व दोनो तरह के स्वर मिलते हैं।

१. दीर्घ स्वरो मे अन्त वाले गुच्छ

।ओइआ।	।लोइआ।	गन्ने से रस निकालने के उपरान्त बचा हुआ भाग
।उआई।	।अगुआई।	मध्यस्थता
।एउआ।	।चेउआ।	बच्चो को बहलाने के लिये टेढी-मेढी बनाई गई रोटी
।उइआ।	।कुइआ।	संकरा कुआ
।इआई।	।पनिआई।	सिंचाई की मजदूरी

२. ह्रस्व स्वरो मे अन्त वाले गुच्छ

।इआउ।	।ननिआउर।	माता के पिता का स्थान

१.१०. अक्षर स्तरण (सिलेबल लेवल)

स्वनग्रामियात्मक अधिक्रम मे अक्षर स्तरण स्वनिम से ऊपर का स्तरण है। स्वनिम अक्षर के स्लाटों की पूर्ति करते हैं और अक्षर शब्द के स्लाटों को।

केन्द्रक की दृष्टि से भोजपुरी मे दो स्वनिमिक अक्षर वर्ग मिलते हैं (१) दीर्घ स्वर केन्द्रक के साथ, तथा (२) ह्रस्व स्वर केन्द्रक के साथ। स्वनिमिक अक्षर मुखरता के शिखर तथा काल और संहिता को विशेषताओं द्वारा चिन्हित होता है। अक्षर का केन्द्रक मुखरता के शिखर को सम्मिलित करता है। सीमान्त संहिता को सम्मिलित करते हैं।

भोजपुरी अक्षर-शृंखला के अन्तर्गत अधिक से अधिक तीन फोनोटेग्मीम आते हैं। आरोह (आनसेट), केन्द्रक (नुक्लीयस) और अवरोह (कोडा)। अक्षर मात्र केन्द्रक—जो हमेशा स्वर होता है—से बन सकता है, जैसे ऊ 'वह', या मात्र आरोह और केन्द्रक से बन सकता है, जैसे ना 'नहीं', अथवा मात्र केन्द्रक और अवरोह से बन सकता है जैसे ऊम 'ईख'।

अक्षर प्रभाग—(१) दो स्वरों के मध्य में आने पर एकल व्यंजन अनुवर्ती स्वर से सम्बद्ध होते हैं। (२) दो स्वरों के मध्य में आने पर व्यंजनगुच्छ का प्रथम अंग पूर्ववर्ती स्वर से और द्वितीय अंग अनुवर्ती स्वर से सम्बद्ध होते हैं। (३) आद्य स्थिति में आने पर एकल व्यंजन अथवा दो व्यंजनों का गुच्छ (ऐसा गुच्छ केवल एक ही प्राप्त हुआ) अनुवर्ती स्वर से सम्बद्ध होते हैं। (४) अन्त्यस्थिति में आने पर एकल व्यंजन पूर्ववर्ती स्वर से सम्बद्ध होते हैं।

भोजपुरी में लघुतम अक्षर एक स्वर को रखने वाला हो सकता है; जैसे। ई। यह। भोजपुरी का अक्षर-ढाँचा निम्नलिखित प्रकार का है

स	। ऊ ।	वह
सव	। ऊम ।	ईख
वस	। ना ।	नहीं
व स व	। दाल ।	दाल
व व स व	। बिम्तान ।	विदेशी

१. ११.—प्रोसोडिक स्तरण

१ १११. बलाघात

भोजपुरी में बलाघात अच्छी तरह अवधेय है परन्तु व्यवच्छेदक नहीं है। यह अस्वनिमिक है। बलाघात बहुधा दीर्घ स्वर के साथ आता है। यह एक अक्षर से दूसरे अक्षर पर जा सकता है और बहुधा स्वरों के विस्तार के साथ होता है। दो समूहों में इसे विभक्त कर सकते हैं—शब्द बलाघात और वाक्य बलाघात।

सहज शब्दों पर बलाघात :

। खो' ।	खाओ
। जो' ।	जाओ
। मो'र ।	मेरा
। दे' ।	दो
। ऊ' ।	वह
। ई' ।	यह
। तू' ।	तुम
। हा'ऊ ।	वह

यौगिक शब्दों पर बलाघात - यौगिक शब्द बहुधा एकल बलाघात रखते हैं जो

शब्द के दोनों अवयवों पर आ सकता है। कभी यह प्रथम अवयव के साथ हो सकता है और कभी दूसरे अवयव के साथ।

। खा'तिरवात ।	आदर-सत्कार
। भें'टमुलकात ।	भेंट-मुलाकात
। बा'पजान ।	पिता
। खा'निखरच ।	खर्च आदि
। पइ'साकउडी ।	धन
। दु'वरपूजा ।	बारात के स्वागत के समय का एक अनुष्ठान
। सेनुरदा'न ।	विवाह का एक प्रमुख अनुष्ठान
। मिरतलो'क ।	मृत्युलोक

वाक्य बलाघात—सतत सलाप में अपेक्षाकृत महत्त्वपूर्ण शब्दों के साथ बलाघात होता है।

(प) का'रे क'हा जात हउए
क'त्तो नां
हाई देखा' हइहै आतो ह ग्र क'हत ह कि कत्तो ' ना
जा'य हो जा'ब का' करबा
क'रब त का म'ब्बे लतिग्रा'वै लगब
लति ग्रा'वा त तनी हम देख'वै करी
ग्ररे त क'हि देत हई चुप्प'इ रहा ना'ही त ठीक ना खाई
का' ठीक ना खाई का कर'बा
जुलफिग्रा' उखा'रि लेब
उखा रा त तनी
ग्रब्बे लगब घोव'इ

(फ) का' हो कहता काहे न
हमरे ना' ग्रावैले
ना ग्रावैले ग्रा' ग्रोहिदिनवा त कहत रह'ला
का हा' कहत रहली
कहा' कहा ढे'र घोना मत लगावा
नाही ना' कहब
ग्र क'हु ससुर लगले ब'स्ने
ग्रच्छा सुना एकठे रह'लै राजा
हुकारी भर्‍रे
ग्रो'हि राजा के कउनो परानी ना' रहली

१ ११२ सुरलहर — सुरलहर भी ग्रस्वनिमीय है। सुरलहर की रागात्मक विशेषताएं परिरेखा और श्रेणी की दृष्टि से दो भागों में विभक्त हैं :

(१) परिरेखा द्वारा विभक्त विशेषताएं पांच गुणों को रखती हैं—आरोहण, अवपात, अवपात-सम, आरोहण—अवपात, अवपात-आरोहण।

(२) श्रेणी द्वारा विभक्त विशेषताएँ गुणों के दो वर्ग रखती हैं :

(प) तारसुर सम (३ गुण) : उच्च, मध्य, निम्न

(फ) मधुरसंक्रम (३ गुण) : प्रवण, मध्यस्थ, मसृण

(१) परिरेखा : आरोहण :

(का तूं उहां केहू के) ना^{2} देख^{2}ला^{3}, ना^{2} देख^{2}ला^{1}

(तू हूँ चल्वा) तू^{2} हूँ^{3}, तू^{2} हूँ^{3}

पुकार : म^{2}इया^{3} का^{2}का^{3} ना^{2}ना^{3}

अवपात :

आ^{2}व^{1}त हु^{1}ई^{1}

अच्छा^{2} आ^{1}व

अवपात-सम :

रा^{1}जा सि^{1}कार खेलें^{1}

आरोहण अवपात :

प्रत्याशा दर्शाना :

या^{1}द बा^{2} न:^{1}

समादेशन पुकार :

सा^{2}मू^{1}

अवपात आरोहण :

चुनौती : (एतनी बेर ले का करत रहू्ला ?) प^{2}ढ़त^{1} र^{1}हू्लीं^{1}

(हर जोते जानेले ?) जा^{2}नी^{1}ला^{2}

शिकायत : (तू) ना^{2} म^{1}न्ता^{2}

(२) ...श्रेणी ...

तारगुर सम :

उच्च :	क³हा¹ जा³य¹उँ²	मत¹ जो²
		मद²ठन भ³इल वा²
मध्य :	दम³व ह³म	
निम्न :	ह³मा¹र दमा¹ मा¹ पू¹छत ह³उमा¹	
	म³व का¹ मही¹	

मधुर संगम :

प्रथण तारगुर	तो³हके² ज³उले¹ बो³ला¹ई³ना म³त बो³ला¹
	तो³हरे² गा³ति³न गा³री¹ सुन्¹ली²
	मा³ई² तू¹ ह³मके² ना² मा³नेंनू¹
मसृण तारसुर	बा³का¹ तू² ह³मके¹ प³इसा ना² दे³ह्.ला¹

स्वनिमों की तालिका

ऊपर के विश्लेषण के फलस्वरूप भोजपुरी में ४६ खंडात्मक स्वनिम तथा ३ विग्रहात्मक स्वनिमिक इकाई स्वीकार किये जा सकते है। इनकी तालिका इस प्रकार है

खंडात्मक स्वनिम

३४ व्यंजन
२ अर्धस्वर
१० स्वर (८ मूल स्वर, २ संयुक्त स्वर)

विग्रहात्मक स्वनिमिक इकाई

।~। अनुनासिकता । । मात्रा ।+। आंतरिक विप्रकृष्ट संहिता

तालिका ८—व्यंजन

	द्वयोष्ठ्य		दन्त्य		वर्त्स्य		अग्रतालव्य		मूर्धन्य		तालव्य		कोमल तालव्य		श्वासद्वारीय	
	अघोष	घोष	अघोष	घोष	अघोष	घोष	अघोष	घोष	अघोष	घोष	अघोष	घोष	अघोष	घोष	अघोष	घोष
स्पर्श																
अप्राण	प	ब	त	द					ट	ड	च	ज	क	ग		
महाप्राण	फ	भ	थ	ध					ठ	ढ	छ	झ	ख	घ		
नासिक्य																
अप्राण		म				न								ङ		
महाप्राण		म्ह				न्ह								ङ्ह		
पार्श्विक																
अप्राण								ल								
महाप्राण								ल्ह								
उत्क्षिप्त																
अप्राण										ड़						
महाप्राण										ड़्ह						
कम्पित																
अप्राण						र										
महाप्राण						र्ह										
सघर्षी																
अप्राण					स											
महाप्राण																

तालिका ९ अर्धस्वर

जिह्वा की ऊँचाई	अग्र अवृत्ताकार	पश्च वृत्ताकार
निम्न-उच्च	य	व

तालिका १० स्वर

	अग्र	मध्य	पश्च
उच्च	ई इ		ऊ उ
मध्य	ए	अ	ओ
निम्न		आ	
संयुक्तस्वर	अइ		अउ

अनुभाग २

रूपस्वनिम-विज्ञान

२.१ रूपस्वनिमिक एकान्तरण दो समूहों में विभक्त हो सकते हैं -

(१) नैयमिक एकान्तरण

(२) अनैयमिक एकान्तरण

नैयमिक एकान्तरण : कुछ निश्चित प्रतिबद्धों में बहुलता से प्राप्त होते हैं। इन्हें स्वनिमिक प्रतिबद्ध एकान्तरण तथा रूपिमिक प्रतिबद्ध एकान्तरण इन दो उपसमूहों में बांटा जा सकता है।

२.१२ स्वनिमिक प्रतिबद्ध एकान्तरण

स्वनिमिक प्रतिबद्ध एकान्तरण शब्द के मध्य अथवा दो शब्दों के मध्य हो सकते हैं। उदाहरणों सहित इसका विश्लेषण नीचे दिया जा रहा है :

(१) वर्तमान सतत रूपिम तीन विभिन्न रूपों । -अत ।, । -त । तथा । -वत । में दिखाई पड़ते हैं। यदि किसी क्रिया प्रातिपदिक के अन्तिम स्वनिम । -आ । अथवा । -ए । हैं, तो उस प्रातिपदिक में । -त । तथा । -वत । सरूप जुड़ेंगे, अगर वह व्यंजन हुआ या ऊपर दिये गये स्वरों से भिन्न कोई स्वर हुआ तो प्रातिपदिक में । -अत । सरूप जोड़ा जायेगा।

खा-+-त→खात	:	खा रहा
जा-+-त→जात	:	जा रहा
दे-+-त→देत	:	दे रहा
ले-+-त→लेत	:	ले रहा
गा-+-वत→गावत	:	गा रहा

छे- + -अत → छेवत	.	छील रहा
जोत + -अत → जोतत	.	जोत रहा
काट- + -अत → काटत	:	काट रहा
पार- + -अत → पारत		(चावल के आटे से लड्डू) बना रहा
दाल- + -अत → दालत		(चारे को) टुकड़े-टुकड़े कर रहा
टीस- + -अत → टीसत	:	टीस रहा
पी- + -अत → पीअत		पी रहा
छू- + -अत → छूअत		छू रहा
रो- + -अत → रोअत		रो रहा
धो- + -अत → धोअत		धो रहा

(२) । अव । तथा । अय ।, द्विअक्षरी तथा बहुअक्षरी रचनाओं में दो व्यजनों के मध्य आने पर क्रमशः । अउ । तथा । अइ । संयुक्त स्वरों में बदल जाते हैं।

	- अव -	>	- अउ -	
बिछवना	>	बिछउना	.	बिस्तर
पठवलं	~	पठउलं	.	भेजा
	- अय -	>	- अइ -	
लयका	>	लइका		भोजन

(३) जब संयुक्त स्वर, । आ । द्वारा अग्रसरित (प्रेसीडेड) होता है तो अर्धस्वर । व ।, । य । संयुक्त स्वर और अनुवर्ती स्वर के मध्य सन्निविष्ट (इनसर्टेड) होते हैं। निम्नलिखित उदाहरण के दोनों रूप मुक्त रूपान्तरण में है। वार्तालाप में दोनों तरह के रूप आ सकते हैं। परन्तु श्रुति के रूप में व, य का व्यवहार प्रचुर है।

	अउ	+	आ	>		अउवा	
कउ-	+	आ	~	कउवा	~	कउआ	'कौवा'
	अइ	+	आ	>		अइया	
हइ-	+	आ	>	हइया	~	हइआ	'हैया'

(४) जब । अउ । एक अक्षरी रचना में दो व्यजनों के मध्य आता है तो यह । अव । में परिवर्तित हो सकता है। पुनः इसमें एक अनुवर्ती । अ । सन्निविष्ट होकर रचना को द्विअक्षरी बना देता है। निम्नलिखित में जोड़े के दोनों रूप मुक्त रूपान्तरण में हैं। वैसे एकअक्षरी रचना की आवृत्ति अधिक है।

	अउ	>	अव	+	अ	:	अवअ
कउर	>	कवर	.	कौर (भोजन का)		
दउर	>	दवर		दौड़		
पउर	>	पवर		तैर		

(५) जब व्यंजन अन्त वाले क्रिया प्रातिपदिकों में प्रश्नवाचक व्यक्त करने वाले

बलाघात के साथ वर्तमान परप्रत्यय जुड़ता है, तो परप्रत्यय का प्रथम स्वर । अ । लुप्त हो सकता है।

जोत-	+	-अतें	>	जोत्तें (अभी) भी जोत रहा है।
पोत-	+	-अतें	>	पोत्तें (अभी भी) लीप रहा है।
खन-	+	-अतें	>	खन्तें (अभी) भी खोद रहा है।
कोड़-	+	-अतें	>	कोड़्तें (अभी भी) गोड़ रहा है।

। -अतें । एक स्वयुक्त रूपिम है जिसका अनुवर्ती । ऐं । बलाघात व्यक्त करने वाला एक अंश है।

(६) उच्चारों में, वर्तमान परप्रत्यय । -त । तथा अनुवर्ती सहायक क्रिया । हउआ~हऊ~हईं~ह । का आद्य व्यंजन, मिलकर इकाई स्वनिम के रूप में परिवर्तित हो सकते हैं।

	-त	+	ह-	>	थ	
जात	+	हउआ	>	जायउआ	:	जा रहे हो
खात	+	हऊ	>	खाथऊ	:	खा रही हो (स्त्री)
जात	+	हईं	>	जाथईं	:	जा रहा हूँ, जा रहे हैं (द्वि. शिष्ट)
जात	+	ह	>	जाथ.	:	जा रहा है

(७) जब अघोष स्पर्श एकअक्षरी और द्विअक्षरी शब्दों के अन्त्य में आता है तो बहुधा वह घोष स्पर्श में परिवर्तित हो जाता है यदि इसका अनुवर्ती शब्द एकअक्षरी हो जिसके आद्य में घोष स्पर्श हो।

एक	+	गाँव	>	एग्गाँव	:	एक गाव
एक	+	दिन	>	एग्दिन	:	एक दिन
जोत	+	दा	>	जोद्दा	:	जोत दीजिए
ताक	+	दा	>	ताग्दा	:	देखिए
बहुत	+	दीन	>	बहुद्दीन	:	बहुत दिन

(८) परसर्ग । मे । एकल स्वर प्रातिपदिक अथवा स्वर अन्त्य वाले प्रातिपदिक में जुड़ सकता है तथा एकल । म । का विस्तार अधिक हो सकता है। निम्नलिखित के दो रूप मुक्त-रूपान्तरण में हैं। अविस्तार युक्त रूपों की आवृत्ति अधिक है। विस्तारयुक्त रूप बलात्मक प्रयोग में आते हैं।

ओ-	+	मे	>	ओमेः	~	ओमें	:	उसमे
ए-	+	मे	>	एमें.	~	एमें	:	इसमें
के-	—	मे	>	केमेः	~	केमें	:	किसमें

२. १३ स्वनिमिक प्रतिबद्ध एकान्तरण

(१) जब नामीय व्युत्पादनात्मक परप्रत्यय किसी संज्ञा अथवा क्रिया प्रातिपदिक से जुड़ता है तो प्रातिपदिक का दीर्घस्वर (मध्य और अन्त्य स्थितियों में आने वाला) ह्रस्व स्वर में परिवर्तित हो जाता है।

पूज-	+	-आरी	>	पुजारी	: पुजारी
भीख-	+	-आरी	>	भिखारी	. भिखारी
जू-	+	-आरी		जुआरी	जुआरी
काम-	+	-आई	>	कमाई	आमदनी
मीठ-	+	-आई	>	मिठाई	मिठाई
चाम-	+	-आर		चमार	चमार
बूढ़	+	-आपा		बुढ़ापा	वृद्धावस्था
गाँड़-	+	-आसा		गँड़ासा	गँड़ासा
मूड़-	+	-आवन		मुड़ावन	विवाह के समान बालक अनुष्ठान

(२) जब बहुवचन (-वा ~ -अन) स्वरादि परप्रत्यय द्विअक्षरी संज्ञा प्रातिपदिक से जुड़ता है तो प्रातिपदिक का द्वितीय दीर्घस्वर लुप्त हो जाता है।

कहार-	+	-अन	>	कहरन	एक पिछड़ी जाति
दुआर-	+	-अन		दुअरन	द्वार
पाड़ा-	+	-अन		पड़वन	भैंस के बच्चे

(३) जब क्रिया परप्रत्यय संज्ञा प्रातिपदिक से जुड़ता है तो प्रातिपदिक का मध्य दीर्घस्वर (-आ-) ह्रस्वस्वर (-अ-) में परिवर्तित हो जाता है।

			(-आ-)	(-अ-)	
बात-	(बात)	+	-इयावत	बतियावत	बातचीत करता हुआ
हाथ-	(हाथ)	+	-इयावत	हथियावत	हाथ से काम करते हुए
लात-	(पैर)	+	-इयावत	लतियावत	पैर से कुचलते हुए
दात	(दाँत)	+	-इयावत	दँतियावत	दाँत से पीसते हुए

(४) मिश्र रूप की रचना में द्वितीय पूर्ण नामिक के प्रातिपदिक तथा पर-

। -आ- । > । -अ- ।

ठाकुर-	+	-अन	>	ठकुरन	: क्षत्रिय (बहु०)
ठाकुर-	+	-आइन	>	ठकुराइन	: क्षत्रिय की पत्नी
ठाकुर-	+	-आई	>	ठकुराई	: क्षत्रियपन
ठाकुर-	+	-पन	>	ठकुरपन	: क्षत्रियपन
बाम्हन-	+	-अन	>	बम्हनन	: ब्राह्मण (बहु०)
बाम्हन-	+	-आई	>	बम्हनाई	: ब्राह्मणपन
बाम्हन-	+	-ई	>	बम्हनी	: ब्राह्मणी

(६) जब शिष्ट रूप का परप्रत्यय किसी परप्रत्यय सहित प्रातिपदिक मे जुड़ता है तो प्रातिपदिक तथा रूपयुक्त-परप्रत्यय के दीर्घस्वर ह्रस्वस्वर मे परिवर्तित हो जाते हैं।

ताक- + -ई = ताकी- + - हे > तकिहे : (वे) देखेंगे या देखेंगी
मान- + -ई = मानी- + - हें > मनिहें : (वे) मानेंगे या मानेंगी
काढ- + -ई = काढी + - हे > कढ़िहे : (वे) निकालेंगे या निकालेंगी
पूछ- + -ई = पूछी- + - हे > पुछिहें : (वे) पूछेंगे या पूछेंगी
कीन- + -ई = कीनी + - हे > किनिहे : (वे) खरीदेंगे या खरीदेंगी
भूक- + -ई = भूकी + - हे > भुकिहे : (वे) ईंधन डालेंगे या डालेंगी
बीन + -ई = बीनी- + - हे > बिनिहे : (वे) चुनेंगे या चुनेंगी

(७) संख्या शब्दों में एकान्तरण :

जब व्युत्पादनात्मक परप्रत्यय एकाक्षरी प्रातिपदिक मे जुड़ता है तो निम्नलिखित एकान्तरण उपस्थित होते हैं :

। आ । आद्य और मध्य मे आने पर । अ । में परिवर्तित हो जाता है।

आठ-	+	-हरा	>	अठ्हरा	:	अठहरा
सात-	+	-हरा	>	सत्हरा	:	सतहरा
पाच-	+	-हरा	>	पंचहरा	:	पचहरा

२. २. अनैयमिक एकान्तरण :

अनैयमिक एकान्तरण ढाँचे की किसी नैयमिकता को व्यक्त नही करते। उनके कुछ उदाहरण नीचे दिये जा रहे है। ये सभी रूपिमिक प्रतिबद्ध एकान्तरण हैं।

(१) । जा-। क्रिया प्रातिपदिक का भूत काल रूप । गइ- । है जो सम्पूर्ण एकान्तरण का उदाहरण है।

(२) कुछ कम अनैयमिक ढाँचे के उदाहरण निम्नलिखित हैं :

१.१ -ई~-इन ~ -आइन । बहुधा स्त्रीलिंग परप्रत्यय के रूप मे व्यवहृत होते हैं, परन्तु साथ ही निम्नलिखित रूप भी मिलते हैं :

बूढ (पु)	>	बुढ़िया	(स्त्री)	: बूढी स्त्री (शिष्ट रूप)
मेंडा (पु)	>	मेंड़	(स्त्री)	: मेंड
कुक्कुर (पु)	>	कुत्ती	(स्त्री)	: कुत्ती

२ संख्यावाचक रूपों में अनैयमिकता .

जब व्युत्पादनात्मक परप्रत्यय गुणकवाची प्रातिपदिक में जुड़ता है तो निम्नलिखित अनैयमिक एकान्तरण मिलते हैं

दु-	+	-हरा		दोहरा	दुहरा
तीन-	+	-हरा	-	तेहरा	तिहरा
चार-	+	-हरा	-	चउहरा	: चौहरा

२.३ वाक्य-स्वनिमिक एकान्तरण

वाक्य-स्वनिमिक एकान्तरण सम्बद्ध उच्चारों में प्राप्त होते हैं। वाक् की द्रुतता बहुधा ऐसे एकान्तरण के लिए उत्तरदायी होती है। बलाघात का लुप्त होना समीपस्थ स्वनिमों को प्रभावित करता है और उसके परिणामस्वरूप एकान्तरण व्यक्त होता है। इस सम्बन्ध में कोई नैयमिक नियम नहीं बनाया जा सकता, कुछ प्रेक्षित परिवर्तनों को यहां दिया जा रहा है

अब ऊ गयल > अबुग ल 'अब वह गया'

अपने बहिन के इहां अपनें बहिन वेहा 'अपने बहिन के पास'

हाडा ओहिमें गउजियात रहलें - हाडा ओहिमें गउजात् रह्लें 'हाडा उसी में गूंज रहे थे'

सुनिके चिल्लाइल > सुन्के चिल्लाल चिलाल 'सुनने के उपरान्त (वह) चिल्लाया'

अजुवे जाइब > आजें जाब 'आज ही जाऊंगा'

एके त हम मारि घलली > एकेथम मारि घल्ली' 'इसे तो मैंने मार डाला'

आयल बाय > आइलबा 'आया है'

अनुभाग ३

व्याकरणिक अधिक्रम

३.१. भोजपुरी के व्याकरणिक अधिक्रम में शब्द स्तरण से लेकर संलाप स्तरण तक छः संरचनात्मक स्तरण हैं। ये हैं—शब्द स्तरण, फ्रेज स्तरण, क्लाज स्तरण, वाक्य स्तरण, अटरेंस स्तरण तथा संलाप स्तरण।

शब्द स्तरण

भोजपुरी की हायरार्की की व्यवस्था में शब्द या तो एकल रूपिम से बनता है अथवा प्रातिपदिक और प्रत्ययों के सयोग से बनता है। शब्द मुख्यतया फ्रेजों की संरचना मे स्लाटों की पूर्ति करते हैं परन्तु ये क्लाजों और वाक्यों की सरचनाओं में भी स्लाटों की पूर्ति कर सकते हैं।

शब्द स्तरणीय रचना दो या अधिक सम्भाव्य टेग्मीमो से बनती है जिनमें से एक प्रातिपदिक (अथवा धातु) द्वारा अभिव्यक्त होता है और दूसरा प्रत्यय द्वारा।

शब्दो का विभाजन तीन प्रधान वर्गों मे हो सकता है: (१) एकलरूपिम शब्द—ये शब्द केवल एक रूपिम के रूप में होते हैं और इनमे विस्तार की गुंजाइश नहीं होती। शब्द स्तरण पर इनका विश्लेषण नहीं हो सकता, क्योंकि ये रचना के रूप में ग्रहण नहीं किये जाते। (२) बहुल रूपिम शब्द १—ये शब्द प्रातिपदिक तथा विभक्तिक अथवा व्युत्पादनात्मक प्रत्ययो से मिलकर बनते हैं।

(३) बहुल रूपिम शब्द २—ये शब्द एक से अधिक प्रातिपदिक और धातु के सचयन से बनते हैं।

बहुल रूपिम शब्द १

शब्द संरचना अपने अवयवो के रूप मे विभक्तिक, व्युत्पादनात्मक और धातु टेग्मीमो को सम्मिलित करती है।

३.२. विभक्तिक रचना—भोजपुरी की विभक्तिक रचना में दो या अधिक सम्भाव्य टैग्मीम आते हैं। इनमें एक टैग्मीम प्रातिपदिक अथवा धातु द्वारा व्यक्त होता है जो केन्द्रक टैग्मीम है और दूसरे टैग्मीम विभक्तिक प्रत्ययों द्वारा अभिव्यक्त होते हैं, जो सीमान्तक हैं।

केन्द्रक स्लाट जिनकी पूर्ति प्रातिपदिकों द्वारा होती है और विभक्तिक स्लाट जिनकी पूर्ति विभक्तियों द्वारा होती है, शब्द स्तरणीय रचना की प्रथम परत के टैग्मीम हैं। इस व्यवस्था को निम्नलिखित फार्मूले में इस तरह व्यक्त किया जा सकता है :

शब्द = प्रातिपदिक + विभक्तियाँ

विभक्तिक शब्द

३.३. संज्ञा : संज्ञा कर्ता और। अथवा कर्म स्लाटों में आती है। यह कर्ता अथवा कर्म स्लाटों में आने वाले फ्रेजों के प्रधान स्लाट के रूप में भी आती है।

संज्ञा प्रातिपदिक वे हैं जो नामीय प्रत्ययों को ग्रहण करते हैं। ये दो लिंगों, पुल्लिंग और स्त्रीलिंग, में से एक से नियोजित (एसाइंड) हैं। संज्ञा प्रातिपदिक कारक और वचन के प्रत्यय द्वारा भी विशेषित होते हैं। भोजपुरी में कारक चार हैं—प्रत्यक्ष, विकारी, सम्बोधन और सम्प्रदान। प्रत्यक्ष और विकारी सभी संज्ञाओं पर लागू होते हैं, सम्बोधन संज्ञाओं की सीमित संख्या के साथ लगते हैं। सम्प्रदान केवल एकवचन में आते हैं और बहुत कम संज्ञाओं में लगते हैं। भोजपुरी में दो वचन हैं—एकवचन और बहुवचन।

संज्ञाओं को निम्नलिखित पाँच श्रेणियों में यहाँ दिया जा रहा है। । -आ । में अन्त होने वाली पुल्लिंग संज्ञाएँ श्रेणी १ में, । -ई- । में अन्त होने वाली पुल्लिंग संज्ञाएँ श्रेणी २ में, और व्यंजन में अन्त होने वाली पुल्लिंग संज्ञाएं श्रेणी ३ में वर्णित हैं। । -इ । में अन्त होने वाली स्त्रीलिंग संज्ञाएं श्रेणी ४ में तथा अन्य रूपों में अन्त होने वाली स्त्रीलिंग संज्ञाओं को श्रेणी ५ में लिया गया है।

श्रेणी १ निम्नलिखित कारक और वचन प्रत्ययों को सम्मिलित करती है :

	एक	बहु
१ प्रत्य	प्रातिप ।-आ।	प्रातिप ।-अ।
२. विक	प्रातिप ।-आ। या ।-वा।	प्रातिप ।-अन। या ।-वन।
३. सम्बो	प्रातिप ।-आ।	प्रातिप ।-ओ।
४ सम्प्र	प्रातिप ।-ए।	

नमूना शब्द रूपावली

	एक			
१. प्रत्य	लइका	लोटा	पोखरा	हाडा
२. विक	लइका~लइक्वा	लोटा~लोट्वा	पोखरा~पोख्रवा	हाडा~हड्वा
३. सम्बो	लइका	०	०	०

४. सम्प्र	०	०	पोखरे	०
	बहु			
१. प्रत्य	लड़का	लोटा	पोखरा	हाड़ा
२. विक	लड़कन~लड़क्वन	लोटन~लोट्वन	पोखरन~पोखर्वन	हाड़न~हड्वन
३. सम्बो	लड़को	०	०	०
४. सम्प्र	०	०	०	०
	'लड़का'	'लोटा'	'पोखरा'	'हड्डा'

श्रेणी २ निम्नलिखित कारक और वचन प्रत्ययों को सम्मिलित करती है :

	एक	बहु
१. प्रत्य	प्रातिप।-ई।	प्रातिप।-ई-।
२. विक	प्रातिप।-ई।	प्रातिप।-इग्रन।
३. सम्बो	प्रातिप।-इग्रा।	०
४. सम्प्र	०	०

नमूना शब्द रूपावली

	एक			
१. प्रत्य	तेली	कोइरी	धोबी	नाती
२. विक	तेली	कोइरी	धोबी	नाती
३. सम्बो	तेलिया	कोइरिग्रा	धोबिग्रा	नतिग्रा
४. सम्प्र	०	०	०	०
	बहु			
१. प्रत्य	तेली	कोइरी	धोबी	नाती
२. विक	तेलिग्रन	कोइरिग्रन	धोबिग्रन	नतिग्रन
३. सम्बो	०	०	०	०
४. सम्प्र	०	०	०	०
	'तेली'	'एक पिछड़ी जाति'	'धोबी'	'नाती'

श्रेणी ३ निम्नलिखित कारक और वचन प्रत्ययों को सम्मिलित करती है :

	एक	बहु
१. प्रत्य	प्रातिप—	प्रातिप—
२. विक	प्रातिप—	प्रातिप।-ग्रन।था।-वन।
३. सम्बो	०	०
४. सम्प्र	प्रातिप।-ए।	०

नमूना शब्द रूपावली

	एक		
१. प्रत्य	घर	बरघ	गोड़
२. विक	घर	बरघ	गोड़

३.२. विभक्तिक रचना—भोजपुरी की विभक्तिक रचना में दो या अधिक सम्भाव्य टैग्मीम आते हैं। इनमें एक टैग्मीम प्रातिपदिक अथवा धातु द्वारा व्यक्त होता है जो केन्द्रक टैग्मीम है और दूसरे टैग्मीम विभक्तिक प्रत्ययों द्वारा अभिव्यक्त होते हैं, जो सीमान्तक हैं।

केन्द्रक स्लाट जिनकी पूर्ति प्रातिपदिकों द्वारा होती है और विभक्तिक स्लाट जिनकी पूर्ति विभक्तियों द्वारा होती है, शब्द स्तरणीय रचना की प्रथम परत के टैग्मीम हैं। इस व्यवस्था को निम्नलिखित फार्मूले मे इस तरह व्यक्त किया जा सकता है :

शब्द = प्रातिपदिक + विभक्तियाँ

विभक्तिक शब्द

३.३ संज्ञा. संज्ञा कर्ता और। अथवा कर्म स्लाटों में आती है। यह कर्ता अथवा कर्म स्लाटों में आने वाले फ्रेजों के प्रधान स्लाट के रूप में भी आती है।

संज्ञा प्रातिपदिक वे हैं जो नामीय प्रत्ययों को ग्रहण करते हैं। ये दो लिंगों, पुल्लिंग और स्त्रीलिंग, में से एक से नियोजित (एसाइंड) हैं। संज्ञा प्रातिपदिक कारक और वचन के प्रत्यय द्वारा भी विशेषित होते हैं। भोजपुरी में कारक चार हैं—प्रत्यक्ष, विकारी, सम्बोधन और सम्प्रदान। प्रत्यक्ष और विकारी सभी संज्ञाओं पर लागू होते हैं, सम्बोधन संज्ञाओं की सीमित संख्या के साथ लगते हैं। सम्प्रदान केवल एकवचन में आते हैं और बहुत कम संज्ञाओं में लगते हैं। भोजपुरी में दो वचन हैं—एकवचन और बहुवचन।

संज्ञाओं को निम्नलिखित पाँच श्रेणियों में यहाँ दिया जा रहा है।। -आ। में अन्त होने वाली पुल्लिंग संज्ञाएँ श्रेणी १ में, । -ई-। में अन्त होने वाली पुल्लिंग संज्ञाएँ श्रेणी २ में, और व्यंजन में अन्त होने वाली पुल्लिंग संज्ञाएं श्रेणी ३ में वर्णित हैं।। -इ। में अन्त होने वाली स्त्रीलिंग संज्ञाए श्रेणी ४ में तथा अन्य रूपों में अन्त होने वाली स्त्रीलिंग संज्ञाओं को श्रेणी ५ में लिया गया है।

श्रेणी १ निम्नलिखित कारक और वचन प्रत्ययों को सम्मिलित करती है :

	एक	बहु
१ प्रत्य	प्रातिप ।-आ।	प्रातिप ।-आ।
२. विक	प्रातिप ।-आ। या ।-वा।	प्रातिप ।-अन। या ।-वन।
३ सम्बो	प्रातिप ।-आ।	प्रातिप ।-ओ।
४. सम्प्र	प्रातिप ।-ए।	

नमूना शब्द रूपावली

	एक			
१. प्रत्य	लड़का	लोटा	पोखरा	हाड़ा
२. विक	लड़का～लड़क्वा	लोटा～लोट्वा	पोखरा～पोख्रवा	हाड़ा～हड्वा
३. सम्बो	लड़का	०	०	०

४. सम्प्र	०	०	पोखरे	०
	वहु			
१. प्रत्य	लड़का	लोटा	पोखरा	हाड़ा
२. विक	लड़कन~लड़क्वन	लोटन~लोट्वन	पोखरन~पोखर्वन	हाड़न~हड़्वन
३. सम्वो	लड़को	०	०	०
४. सम्प्र	०	०	०	०
	'लड़का'	'लोटा'	'पोखरा'	'हड्डा'

श्रेणी २ निम्नलिखित कारक और वचन प्रत्ययों को सम्मिलित करती है :

	एक	वहु
१. प्रत्य	प्रातिप ।-ई ।	प्रातिप ।-ई- ।
२. विक	प्रातिप ।-ई ।	प्रातिप ।-इग्रन ।
३. सम्वो	प्रातिप ।-इग्रा ।	०
४. सम्प्र	०	०

नमूना शब्द रूपावली

	एक			
१. प्रत्य	तेली	कोइरी	धोबी	नाती
२. विक	तेली	कोइरी	धोबी	नाती
३. सम्वो	तेलिया	कोइरिग्रा	धोबिग्रा	नतिग्रा
४. सम्प्र	०	०	०	०
	वहु			
१. प्रत्य	तेली	कोइरी	धोबी	नाती
२. विक	तेलिग्रन	कोइरिग्रन	धोबिग्रन	नतिग्रन
३. सम्वो	०	०	०	०
४. सम्प्र	०	०	०	०
	'तेली'	'एक पिछडी जाति'	'धोबी'	'नाती'

श्रेणी ३ निम्नलिखित कारक और वचन प्रत्ययों को सम्मिलित करती है :

	एक	वहु
१. प्रत्य	प्रातिप—	प्रातिप—
२. विक	प्रातिप—	प्रातिप ।-ग्रन । या ।-वन ।
३. सम्वो	०	०
४. सम्प्र	प्रातिप ।-ए ।	०

नमूना शब्द रूपावली

	एक		
१. प्रत्य	घर	वरध	गोड़
२. विक	घर	वरध	गोड़

३. सम्बो	०	०	०
४. सम्प्र	घरे	०	०
	बहु		
१. प्रत्य	घर	बरध	गोड़
२. विक	घरन~घर्वन	बर्धन~बरध्वन	गोडन~गोड़्वन
३. सम्बो	०	०	०
४. सम्प्र	०	०	०

श्रेणी ४ निम्नलिखित कारक और वचन प्रत्ययों को सम्मिलित करती है :

	एक	बहु
१. प्रत्य	प्रातिप ।-ई।	प्रातिप ।-ई।
२ विक	प्रातिप ।-ई।	प्रातिप ।-इन।
३. सम्बो	प्रातिप ।-ई।	०
४. सम्प्र	०	०

नमूना शब्दरूपावली

	एक			
१. प्रत्य	बेटी	हाड़ी	टाडी	खुर्पी
२. विक	बेटी	हाड़ी	टाडी	खुर्पी
३. सम्बो	बेटी	०	०	०
४. सम्प्र	०	०	०	०
	बहु			
१. प्रत्य	बेटी	हाडी	टाडी	खुर्पी
२. विक	बेटिन	हाडिन	टाडिन	खुर्पिन
३. सम्बो	०	०	०	०
४. सम्प्र	०	०	०	०
	'बेटी'	'हाड़ी'	'कुल्हाड़ी'	'खुर्पी'

श्रेणी ५ निम्नलिखित कारक और वचन प्रत्ययों को सम्मिलित करती है :

	एक	बहु
१. प्रत्य	प्रातिप—	प्रातिप—
२. विक	प्रातिप—	प्रातिप ।-इन । या । -न । या । -इयन । ।या। -अन ।
३. सम्बो	०	०
४. सम्प्र	०	०

नमूना शब्द रूपावली

१. प्रत्य	छेर	मेहरारू	मँड़ि	लटिया
२. विक	छेर	मेहरारू	मँड़ि	लटिया

३. सम्बो	०	०	०	०
४. सम्प्र	०	०	०	०

बहु

१. प्रत्य	छेर	मेहरारू	भेंड़ि	खटिग्रा
२ विक	छेरिन~छेरिग्रन	मेहरारून~मेहरारुग्रन	भेंड़िन~भेंडिग्रन	खटिग्रन
३. सम्बो	०	०	०	०
४. सम्प्र	०	०	०	०
	'बकरी'	'स्त्री'	'भेंड'	'चारपाई'

टिप्पणी : जैसा कि ऊपर कहा गया है सम्प्रदान कारक बहुत कम संज्ञाओं के साथ लगते हैं। ये बहुधा जातिवाचक संज्ञाओं के साथ आते हैं, जैसे—गाँव, बजार, सहर आदि।

रूपस्वनिमात्मक परिवर्तन : द्विग्रक्षरी ग्रौर बहुग्रक्षरी शब्दों में दूसरे ग्रौर तीसरे ग्रक्षरो मे जहाँ दीर्घस्वर। ग्रा, ई, ऊ। ग्राते हैं वहाँ प्रत्ययों के लगने पर ये दीर्घस्वर या तो लुप्त हो जाते हैं ग्रथवा ह्रस्व मे परिवर्तित हो जाते हैं।

सामान्यतया सज्ञा के तीन रूप दिखलाई पड़ते हैं—ह्रस्व, दीर्घ ग्रौर दीर्घतर

। कंहार, कंह्‌रा, कंह्‌र्वा।	एक पिछड़ी जाति
। लोहार, लोह्‌रा, लोह्‌र्वा।	लुहार
। पासी, पसिग्रा, पसिग्रवा।	एक पिछड़ी जाति

३.३१. लिंग

भोजपुरी मे दो लिंग मिलते हैं, पुल्लिंग ग्रौर स्त्रीलिंग—। ग्र। में ग्रन्त होने वाली संज्ञाग्रों का ग्रधिकांश पुल्लिंग है तथा। ई। में ग्रन्त होने वाली संज्ञाग्रों का ग्रधिकांश स्त्रीलिंग है। यद्यपि यह पुल्लिंग स्त्रीलिंग विभाग रूप ग्रथवा ग्रर्थ से पूर्वानुमेय न होकर सर्वथा ऐच्छिक ग्राधार पर ग्राधारित है। एक ही संज्ञा प्रातिपदिक पर ग्राधारित लिंग व्यतिरेक नीचे दिया जा रहा है :

पुल्लिंग	स्त्रीलिंग
१. । ग्रा। में पुल्लिंग, । ई। में स्त्रीलिंग :	
। बेटा। बेटा	। बेटी। बेटी
। लड्का। लड़का	। लड्की। लड़की
। नाना। नाना	। नानी। नानी
। काका। पिता, चाचा	। काकी। माँ, चाची
। मामा। मामा	। मामी। मामी
। भतीजा। भतीजा	। भतीजी। भतीजी

२. । ग्रा। में पुल्लिंग, । ग्रा। के लुप्त होने से स्त्रीलिंग

। भंइसा। भैंसा । भंइस। भैंस

। मेंड़ा । मेंढ़ा । मेंड़ । मेंढ़

३ । आ । मे पुल्लिग, । आइन । में स्त्रीलिंग :

। नोनिआ । एक पिछडी जाति । नोनिआइन । नोनिआ की स्त्री

४. । वा । (दीर्घतर रूप) मे पुल्लिग, । इया । (दीर्घतर रूप) मे स्त्रीलिग :

। बुढ्वा । बूढा व्यक्ति		। बुढिया । बूढी स्त्री	
। पड़्वा । पाडा		। पड़िया । पाडी	

५. । ई । मे पुल्लिग, । इन~इनी । मे स्त्रीलिग ।

। माली । माली	। मालिन । मालिन
। तेली । तेली	। तेलिन । तेलिन
। नाती । नाती	। नातिन ।~। नतिनी । नतिनी
। धोबी । धोबी	। धोबिन । धोबिन

६. । ऊ । मे पुल्लिग, । उआनी । मे स्त्रीलिग :

। गुरु । गुरु	। गुरुआनी । गुरुआनी

७. । ऊ । मे पुल्लिग, । उन । मे स्त्रीलिग :

। नाऊ । नाई	। नाउन । नाइन

८ व्यंजन मे पुल्लिग, । ई । में स्त्रीलिग :

। बाम्हन । ब्राह्मण	। बाम्हनी । ब्राह्मणी

९. व्यंजन मे पुल्लिग, । इन । मे स्त्रीलिग :

। सोनार । सुनार	। सोनारिन । सुनारिन
। लोहार । लुहार	। लोहारिन । लुहारिन
। सिआर । सियार	। सिआरिन । सियारिन
। कहार । कहार	। कहारिन । कहारिन
। मजूर । मजदूर	। मजूरिन । मजदूरिन

१०. व्यंजन में पुल्लिग, । आइन । मे स्त्रीलिग ·

। ठाकुर । क्षत्रिय	। ठकुराइन । क्षत्राणी

११ व्यंजन मे पुल्लिग, आनी । मे स्त्रीलिग :

। देवर । देवर	। देवरानी । देवरानी
। जेठ । पति का बडा भाई	। जेठानी । पति के बड़े भाई की पत्नी

कुछ सज्ञाए, जो मनुष्यो या पशुओ के समूह को व्यक्त करती हैं, या तो पुल्लिग हो सकती हैं या स्त्रीलिग .

। जमाव । (पु)	जमाव
। भीड़ि । (स्त्री)	भीड़
। झूँड़ि । (स्त्री)	झुण्ड

कुछ सज्ञाए केवल एक श्रेणी को व्यक्त करती हैं, वे या तो केवल पुल्लिग मे व्यवहृत होती हैं या केवल स्त्रीलिग में :

।कउआ। (पु) कौआ
।नेउर। (पु) नेवला
।चील्हि। (स्त्री) चील्ह
।चिरई। (स्त्री) चिड़िया

अचेतन : अधिकतर अचेतन संज्ञाओं में बड़े आकार की चीजें पुल्लिंग हैं और छोटे आकार की चीजें स्त्रीलिंग :

।हुड़दा।	(पु) मिट्टी का बड़ा बर्तन	।हुड़दी।	(स्त्री) मिट्टी का अपेक्षाकृत छोटा बर्तन
।बटुला।	(पु) धातु का बड़ा बर्तन	।बटुली।	(स्त्री) धातु का छोटा बर्तन
।खुर्पा।	(पु) घास निकालने या खोदने का यंत्र	।खुर्पी।	(स्त्री) अपेक्षाकृत छोटा यंत्र
।पीढ़ा।	(पु) लकड़ी की बैठकी	।पिढ़ई।	(स्त्री) लकड़ी की छोटी बैठकी

३.४. सर्वनाम

सर्वनाम वचन और कारक के लिए रूपान्तरित होते हैं। इनमें दो वचन, एक वचन और बहुवचन, तथा तीन कारक, प्रत्यक्ष, विकारी और सम्बन्ध मिलते हैं। सम्बन्ध केवल एकवचन में मिलता है। भिन्न श्रेणियों के सात वर्ग हैं।

वर्ग १ श्रेणी १

	एक	बहु
१. प्रत्यक्ष	प्रातिप-	प्रातिप-।-हन।
२. विकारी	प्रातिप-	प्रातिप।- हन।
३. सम्बन्ध	प्रातिप।-आर। या।-र।	०

नमूना शब्द रूपावली

	एक	मुक्त एकान्तर[1]	बहु
१. प्रत्यक्ष	।हम।	।मों।	।हमहन।
२. विकारी	।हम।	।मों।	।हमहन।
३. सम्बन्ध	।हमार।	।मोर।	०

इसमें प्रथम पुरुष सर्वनाम के रूप सम्मिलित हैं।

श्रेणी २

		एक	बहु
१. प्रत्यक्ष	सामान्य	प्रातिप-	प्रातिप।-लोग।
	हीन	प्रातिप-	प्रातिप।-हन।

---

१. मुक्त रूपान्तर मुख्य शब्द रूपावली के मुक्त रूपान्तरण में हैं।

वर्ग २
श्रेणी ५

	एक	बहु
१ प्रत्यक्ष	प्रातिप । -एं ।	प्रातिप । -एं ।
२. विकारी	प्रातिप । -एं । या । -आ ।	प्रातिप । -अन ।
३. सम्बन्ध	प्रातिप । -एं । या । एं ।	प्रातिप । -अनें । या । -अनें ।

नमूना शब्दरूपावली

१. प्रत्यक्ष	। अपनें ।	। अपनें ।
२. विकारी	। अपनें । या । अपना ।	। अपनन ।
३. सम्बन्ध	। अपनें । या । अपनें ।	। अपननें । या । अपननँ ।

इसमे निजवाचक के रूप सम्मिलित हैं। सम्बन्ध बहुवचन का मिलना अपवाद है। जैसाकि ऊपर संकेत किया गया है सम्बन्ध बहुधा केवल एकवचन में मिलता है।

वर्ग ३
श्रेणी ६

व्यक्तिवाचक

	एक	बहु
१ प्रत्यक्ष	प्रातिप-	प्रातिप । -सम ।
२ विकारी	प्रातिप । -ए ।	प्रातिप । -अन ।
३. सम्बन्ध	प्रातिप । -कर ।	०
अव्यक्तिवाचक		
१. प्रत्यक्ष	प्रातिप -	०
२ विकारी	प्रातिप । -युआ ।	०

नमूना शब्द रूपावली

व्यक्तिवाचक

	एक	बहु
१ प्रत्यक्ष	। कउन । या । के ।	। कउनसम । या । केसम ।
२. विकारी	। कउने ।	। कउनन ।
३. सम्बन्ध	। केकर ।	०
अव्यक्तिवाचक		
१. प्रत्यक्ष	। का ।	
२. विकारी	। केयुआ ।	

इस श्रेणी, प्रश्नसूचक सर्वनाम, में दो उपशीर्षक हैं—व्यक्तिवाचक और अव्यक्तिवाचक। व्यक्तिवाचक विकारी में। के। रूप नहीं मिलता और सम्बन्ध में

। कउन । रूप । अव्यक्तिवाचक में प्रत्यक्ष और विकारी के बहुवचन रूप तथा सम्बन्ध नहीं मिलते ।

वर्ग ४

श्रेणी ७

व्यक्तिवाचक

	एक	बहु
१. प्रत्यक्ष	प्रातिप-	प्रातिप । -लोग ।
२. विकारी	प्रातिप-	प्रातिप । -लोगन ।

अव्यक्तिवाचक

१. प्रत्यक्ष	प्रातिप-
२. विकारी	प्रातिप-

नमूना शब्द रूपावली

व्यक्तिवाचक

१. प्रत्यक्ष	। कउनो । या । केहू ।	। कउनो लोग । या । केहुलोग ।
२. विकारी	। कउनो । या । केहू ।	। कउनोलोगन । या । केहुलोगन ।

अव्यक्तिवाचक

१. प्रत्यक्ष	। कुछु ।
२. विकारी	। कुछु ।

इसमें अनिश्चयसूचक के व्यक्तिवाचक और अव्यक्तिवाचक उपशीर्षकों के रूप सम्मिलित हैं। इनमें सम्बन्ध नहीं मिलते । अव्यक्तिवाचक में बहुवचन नहीं प्राप्त होते ।

वर्ग ५

श्रेणी ८

	एक	बहु
१. प्रत्यक्ष	प्रातिप-	प्रातिप । -लोग । या । -सम ।
२. विकारी	प्रातिप । -ए ।	प्रातिप । -अन । या । -समन । या । -लोगन ।
३. सम्बन्ध	प्रातिप । -कर ।	

नमूना शब्द रूपावली

	एक	बहु
१. प्रत्यक्ष	। जउन । या । जे ।	। जउनलोग । या । जउनसम । या । जेलोग । या । जेसब ।

२. विकारी	।जउने।या।जे।	।जउनन।या।जेसमन।या ।जेलोगन।
३. सम्बन्ध	।जेकर।	

इसमें, सम्बन्धसूचक के रूप सम्मिलित हैं। सम्बन्ध में ।जउन। रूप नहीं मिलता।

रूपस्वनिमात्मक परिवर्तन परप्रत्यय लगने पर परप्रत्यय ।-ए। और ।जे। का अन्त्य ।-ए। दोनो एक में मिल जाते हैं।

वर्ग ६

श्रेणी ६

	एक	बहु
१ प्रत्यक्ष	प्रातिप-	प्रातिप।-लोग।या।-सम
२ विकारी	प्रातिप।-ए।	प्रातिप।-अन।या।समन।या ।लोगन।
३ सम्बन्ध	प्रातिप।-कर।	

नमूना शब्द रूपावली

	एक	बहु
१ प्रत्यक्ष	।तउन।या।ते।	।तउनलोग।या।तउनसम।या। ।तेलोग।या।तेसम।
२. विकारी	।तउने।या।ते।	।तउनन।या।तेसमन।या। तेलोगन।
३. सम्बन्ध	।तेकर।	

इसमें अन्योन्याश्रित के रूप सम्मिलित हैं। सम्बन्ध में ।तउन। रूप नहीं मिलता।

रूपस्वनिमात्मक परिवर्तन परप्रत्यय लगने पर परप्रत्यय ।-ए। तथा ।ते। का अन्त्य ।-ए। दोनों एक में मिल जाते हैं।

३.५ विशेषण

विशेषण संज्ञा शब्द के विशेषक स्थान की पूर्ति करते हैं। ये लिंग और कारक के लिए रूपान्तरित होते हैं। विशेषणों में दो कारक प्रत्यक्ष और विकारी, मिलते हैं। परप्रत्यय निम्नलिखित हैं

	पु	स्त्री
प्रत्यक्ष	प्रातिप-या प्रातिप।-आ।	प्रातिप।-इ।या।-ई।
विकारी	प्रातिप।-ए।	प्रातिप।-इ।या।-ई।

नमूना शब्द रूपावली

हरिअर 'हरा'

	पु	स्त्री
प्रत्यक्ष	हरिअर	हरिअरि
विकारी	हरिअरे	हरिअरि

बड़का 'बड़ा'

प्रत्यक्ष	बड़्का	बड़्की
विकारी	बड़्के	बड़्की

परन्तु बहुत से अन्य विशेषण ऐसे हैं जो दोनो लिंगो और कारकों मे एक ही रूप को सम्मिलित करते हैं। जैसे। सुग्घर। सुन्दर। थराऊं। किसी 'विशेष मौके के लिये रखा हुआ' आदि

संज्ञाओं की भांति विशेषणों में भी तीन रूप—ह्रस्व, दीर्घ और दीर्घतर मिलते हैं। दीर्घ और दीर्घतर रूप ह्रस्व मे क्रमश: । -का। और। -कवा। के जुड़ने से बनते हैं।

। छोट, छोट्का, छोट्कवा। छोटा

। सोझ, सोझ्का, सोझ्कवा। सीधा

कुछ विशेषणों के साथ। -हन, -हर। परप्रत्यय उन पर बल देने के लिये जुड़ते हैं। बड़, बड़्हन, बड़्हर। बड़ा

३.५१. भोजपुरी में प्रयुक्त होने वाले सर्वनामीय विशेषण निम्नलिखित हैं.

। एत्‌ना, ओत्‌ना। इतना अधिक, उतना अधिक

। एत्‌तव~हेत्‌तत, होत्‌तत। इतना बड़ा, उतना बड़ा

। जेत्‌ना। जितना, जितना अधिक

। तेत्‌ना। उतना, उतना अधिक

। जेत्‌हत, जेत्‌तत। जितना बड़ा

। केत्‌ना। कितना अधिक, कितने

। केत्‌हव, केत्‌तत। कितना बड़ा

। अइसन। इस तरह का

। ओइसन। उस तरह का

। कइसन। किस तरह का ?

। जइसन। जिस तरह का

। तइसन। उस तरह का

३.५२. संख्याशब्द

संख्याशब्दो के पाच समूह हैं, जो निम्नलिखित हैं :

समूह १	समूह २	समूह ३	समूह ४	समूह ५
मुख्य अंक	क्रमसूचक अंक			
एक	पहिला	एकह्‌रा		

'एक'	'पहला'	'इकहरा'		
दू	दुसरा, दूसर	दोह् रा	दुगुना	दूनो
'दो'	'दूसरा'	'दुहरा'	'दुगुना'	'दोनो'
तीन	तिस्रा, तीसर	तेह् रा	तिन्गुना	तीनो
'तीन'	'तीसरा'	'तिह् रा'	'तिगुना'	'तीनों'
चार	चउथा	चउह् रा	चउगुना	चारो
'चार'	'चौथा'	'चौहरा'	'चौगुना'	'चारों'
पांच	पच्वा	पच्हरा	पंच्गुना	पांचो
'पाच'	'पाचवा'	'पचहरा'	'पाचगुना'	'पाचों'
छ	छठ्वा	छह् रा	छगुना	छम्रो
'छ:'	'छठा'	'छह् रा'	'छगुना'	'छ:ओ'
सात	सत्वा	सत्हरा	सत्गुना	सातो
'सात'	'सात्वा'	'सत्हरा'	'सातगुना'	'सातो
आठ	अठ्वा	अठ्हरा	अठ्गुना	आठो
'आठ'	'आठवा	'अठ्हरा'	'आठगुना'	'आठो'
नव	नउआ	नव्हरा	नव्गुना	नमो
'नौ'	'नौवा'	'नौहरा'	'नौगुना'	'नमो'
दस	दस्वा	दस्हरा	दस्गुना	दसो
'दस'	' दसवा'	'दसहरा'	'दसगुना'	'दसो'

आगे के अन्य क्रम सूचक अकों की रचना के लिये मुख्य अकों मे । -वां । जोड़ते हैं। परन्तु उच्चतर क्रमसूचक अकों की आवृत्ति कम है। दस के आगे तीसरे समूह के अक नही मिलते। चौथे समूह मे आगे के अन्य अक में । -गुना । जोड़कर बनते हैं।

पाँचवें समूह के आगे के अन्य अंकों की रचना मुख्य अक मे ।-ओ। जोड़कर होती है।

सौ के बाद के अको के द्योतन के लिए निम्नलिखित शब्द प्रयुक्त होते हैं :

हजार	'हजार'
लाख	'लाख'
कड़ोर	'करोड़'

इनके पूर्व अन्य लघुतर अंक लगाकर गुणक की रचना हो सकती है :

सउ अद्मी	'सौ आदमी'
पांच सउ अद्मी	'पांच सौ आदमी'
हजार रुपिया	'एक हजार रुपया'
दस हजार रुपिया	'दस हजार रुपये'

दो, चार और पाँच इकाइयों की गणना के लिए निम्नलिखित रूपों का प्रयोग होता है :

जोड़ा या जोड़ी	'जोड़ा'
गन्डा	'चार की इकाई'
गाही	'पाँच की इकाई'

निम्नलिखित का प्रयोग अपूर्णांक के लिए होता है :

पउआ	'पाव'
आधा	'आधा'
तिहाई	'तिहाई'
डेढ़ा	'डेढ़'
अढ़ाई	'ढाई'

निम्नलिखित अपूर्णांक का प्रयोग मुख्य अंक के पूर्व होता है :

सवा	'चतुर्थांश अधिक'
सवा पाँच	'पाँच तथा चतुर्थांश'
साढ़े	'अर्धांश अधिक'
साढ़े पाँच	'पाँच तथा अर्धांश'
पउने	'चतुर्थांश कम'
पउने पाँच	'चार साथ तीन चतुर्थांश'

। गो, ठो या ठे । मुख्य अंक के उपरान्त सहायक के रूप में प्रयुक्त होते हैं : पाचगो (ठो ठे) अदमी रहलें (पाच आदमी थे)

अंकों की गणना की वैकल्पिक पद्धति भी मिलती है । ये अंक बहुधा बीस और दस के ऊपर मिलते हैं । अंक बीस अधिक प्रचलित हैं ।

तीन बीस	'तीन बीस'	(साठ)
पाच दस	'पाँच दस'	(पचास)
पाँच कम तीन बीस	'तीन बीस से पाच कम'	(पचपन)

मुख्य अंकों की सूची निम्नलिखित है :

एक	'एक'	दू	'दो'
तीन	'तीन'	चार	'चार'
पाँच	'पाँच'	छ	'छ'
सात	'सात'	आठ	'आठ'
नव, नउ	'नौ'	दस	'दस'
इगारह	'ग्यारह'	बारह	'बारह'
तेरह	'तेरह'	चउदह	'चौदह'
पन्द्रह	'पन्द्रह'	सोरह	'सोलह'

सत्रह	'सत्रह'	अठारह	'अठारह'
ओनइस	'उन्नीस'	बीस	'बीस'
एकइस	'इक्कीस'	बाइस	'बाईस'
तेइस	'तेईस'	चौबिस	'चौबीस'
पचीस	'पच्चीस'	छब्बिस	'छब्बीस'
सताइस	'सत्ताईस'	अठाइस	'अट्ठाईस'
ओन्तिस	'उन्तीस'	तीस	'तीस'
एकतिस	'इकतीस'	बत्तिस	'बत्तीस'
तइतिस	'तेंतीस'	चउंतिस	'चौंतीस'
पइतिस	'पैंतीस'	छत्तिस	'छत्तीस'
सइतिस	'सैंतीस'	अड़तिस	'अड़तीस'
ओन्तालिस	'उन्तालीस'	चालिस	'चालीस'
एकतालिस	'इकतालीस'	बयालिस	'ब्यालीस'
तंइतालिस	'तितालीस'	चवालिस	'चवालीस'
पइतालिस	'पैंतालीस'	छिआलिस	'छियालीस'
संइतालिस	सैंतालीस'	अड़तालिस	'अड़तालीस'
ओन्चास	'उन्चास'	पचास	'पचास'
एकावन	'इक्यावन'	बावन	'बावन'
तिर्पन	'तिरपन'	चउअन	'चौअन'
पंचपन	'पचपन'	छप्पन	'छप्पन'
सत्तावन	'सत्तावन'	अट्ठावन	'अट्ठावन'
ओन्सठ	'उनसठ'	साठ	'साठ'
एकसठ	'इकसठ'	बासठ	'बासठ'
तिर्सठ	'तिरसठ'	चंउसठ	'चौंसठ'
पंइसठ	'पैंसठ'	छाछठ	'छियासठ'
सड़सठ	'सड़सठ'	अड़सठ	'अड़सठ'
ओन्हत्तर	'उनहत्तर	सत्तर	'सत्तर'
एकहत्तर	'इकहत्तर'	बहत्तर	'बहत्तर'
तिहत्तर	'तिहत्तर'	चउहत्तर	'चौहत्तर'
पचहत्तर	'पचहत्तर'	छिहत्तर	'छिहत्तर'
सतहत्तर	'सतत्तर'	अठहत्तर	'अठत्तर'
ओनासी	'उनासी'	असी	'अस्सी'
एकासी	'इक्यासी'	बयासी	'बयासी
तिरासी	'तिरासी'	चउरासी	'चौरासी'
पचासी	'पचासी'	छिआसी	'छियासी'
सतासी	'सतासी'	अठासी	'अठासी'

नवासी	'नवासी'	नब्बे	'नब्बे'
एकान्बे	'इक्यानवे'	बान्बे	'बानवे'
तिरान्बे	'तिरानवे'	चउरान्बे	'चौरानवे'
पचान्बे	'पचानवे'	छिग्रान्बे	'छियानवे'
सत्तानबे	'सत्तानवे'	अठानबे	'अट्ठानवे'
निनान्बे	'निन्यानवे'	सउ	'सौ'

३.६. क्रिया

क्रिया विपयक रूपों की संरचना : भोजपुरी में क्रिया विपयक रूप दो तत्वों से मिलकर बने हैं, प्रातिपदिक तथा विभक्तिक परप्रत्यय। क्रियाविपयक रूपों में काल, लिंग, पुरुप और वचन के अन्तर मिलते हैं। सबसे पहले यहाँ विभक्तिक परप्रत्ययों को लिया जा रहा है। ये निम्नलिखित श्रेणियों में विभक्त हैं :

श्रेणी १

वर्तमान	भूत	भविष्य
१. मूल। -एल-।	२. मूल। -ल-।	३. मूल। -ब-।
		४. मूल। -इह-।
		५. मूल। -ई।

१. ।-एल-। को वर्तमान काल द्योतित करने वाला परप्रत्यय कहा जा सकता है। ।-एल-। के उपरान्त आने वाले गणक (मार्कर) तीन व्याकरणिक विशेपताओं को व्यक्त करते हैं : (१) लिंग, (२) पुरुप, तथा (३) वचन

।-आ। पुल्लिंग एकवचन तथा बहुवचन परप्रत्यय है।

।-ई। स्त्रीलिंग एकवचन तथा बहुवचन परप्रत्यय है।

।-एल-। के स्थान पर। -ईल-। पुल्लिंग प्रथम तथा द्वितीय आदरसूचक एकवचन तथा बहुवचन और स्त्रीलिंग प्रथम एकवचन तथा बहुवचन को व्यक्त करता है।

।-ए। पुल्लिंग द्वितीय हीनतासूचक एकवचन तथा स्त्रीलिंग तृतीय हीनतासूचक एकवचन को व्यक्त करता है।

।-अं। पुल्लिंग तृतीय सामान्य तथा आदरसूचक एकवचन और बहुवचन तथा तृतीय हीनतासूचक बहुवचन को व्यक्त करता है।

।-ऊ। स्त्रीलिंग द्वितीय सामान्य तथा आदरसूचक एकवचन और बहुवचन को व्यक्त करता है।

।-ईं। स्त्रीलिंग तृतीय सामान्य तथा आदरसूचक एकवचन और बहुवचन तथा तृतीय हीनतासूचक बहुवचन को व्यक्त करती है।

२. ।-ल-। को भूतकाल द्योतित करने वाला परप्रत्यय कहा जा सकता है। ।-ल-। के उपरांत आने वाले गणक तीन व्याकरणिक विशेपताओं को व्यक्त करते हैं : (१) लिंग (२) पुरुप और (३) वचन

।-ईं। पुल्लिंग प्रथम तथा द्वितीय आदरसूचक एकवचन और बहुवचन तथा स्त्रीलिंग प्रथम और तृतीय सामान्य तथा आदरसूचक एकवचन और बहुवचन तथा तृतीय हीनतासूचक बहुवचन को व्यक्त करती है।

।-आ। पुल्लिंग द्वितीय सामान्य एकवचन तथा बहुवचन और हीनतासूचक बहुवचन को व्यक्त करता है।

।-ए। पुल्लिंग द्वितीय हीनतासूचक एकवचन को व्यक्त करता है।

।-ए। पुल्लिंग तृतीय सामान्य और आदरसूचक एकवचन तथा बहुवचन और हीनतासूचक बहुवचन को व्यक्त करता है।

।-ऐ, -अस। पुल्लिंग तथा स्त्रीलिंग तृतीय हीनतासूचक एकवचन को व्यक्त करते हैं।

।-ऊ। स्त्रीलिंग द्वितीय सामान्य और आदरसूचक एकवचन तथा बहुवचन को व्यक्त करता है।

।-ई। स्त्रीलिंग द्वितीय हीनतासूचक एकवचन तथा बहुवचन को व्यक्त करती है।

३ भविष्य काल के लिए तीन परप्रत्यय हैं, ।-ब-। प्रथम पुरुष एकवचन और बहुवचन के साथ प्रयुक्त होता है, ।-इह-। तृतीय सामान्य और आदरसूचक एकवचन तथा बहुवचन तथा हीनतासूचक बहुवचन के साथ प्रयुक्त होता है, तथा द्वितीय सामान्य, आदरसूचक और हीनतासूचक के लिये ।-ब-। और ।-इह-। प्रयुक्त होते हैं। पर-प्रत्यय ।-ई। केवल तृतीय हीनतासूचक के साथ प्रयुक्त होती है।

।-ब-। के उपरान्त आने वाले गणक तीन व्याकरणिक विशेषताओं को व्यक्त करते हैं (१) लिंग, (२) पुरुष तथा (३) वचन

।-आ। पुल्लिंग द्वितीय सामान्य एकवचन और बहुवचन तथा हीनतासूचक बहुवचन को व्यक्त करता है।

।-ए। पुल्लिंग द्वितीय हीनतासूचक एकवचन को व्यक्त करता है।

।-ऊ। स्त्रीलिंग द्वितीय सामान्य और आदरसूचक एकवचन और बहुवचन को व्यक्त करता है।

।-ईं। स्त्रीलिंग द्वितीयहीनतासूचक एकवचन तथा बहुवचन को व्यक्त करती है।

।-इह-। के बाद आनेवाले गणक पुल्लिंग-स्त्रीलिंग के भेद प्रकट नहीं करते।

।-आ। द्वितीय सामान्य एकवचन तथा बहुवचन और हीनतासूचक बहुवचन को व्यक्त करता है।

।-ए। द्वितीय हीनतासूचक एकवचन को व्यक्त करता है।

।-ए। तृतीय सामान्य और आदरसूचक एकवचन तथा बहुवचन और हीनता-सूचक बहुवचन को व्यक्त करता है।

प्रत्येक परप्रत्यय के विभिन्न रूप, लिंग, पुरुष और वचन के अनुसार, निम्न-लिखित हैं :

	एक	बहु	मुक्त एकांतर[1]	
वर्तमान पुल्लिंग				
प्रथम	-ईला	-ईला	-ऐली	-ऐली
द्वितीय (सामा)	-एला	-एला	-ऐला	-ऐला
(आदर)	-ईला	-ईला	०	०
(हीन)	-एले	-एला	-ऐले	-ऐला
तृतीय सामा / आदर	-एल	-एल्	-ऐलं्	-ऐलं्
हीन	-एला	-एल्ं	-ऐला	-ऐल्ं
स्त्रीलिंग				
प्रथम	-ईला	-ईला	-ऐली	-ऐली
द्वितीय सामा / आदर	-लू	-एलू	-ऐलू	-ऐलू
हीन	-एली	-एली	-ऐली	-ऐली
तृतीय सामा / आदर	-एली	-एली	-ऐली	-ऐली
हीन	-एले	-एली	-ऐले	-ऐली
भूत पुल्लिंग				
प्रथम	-ली	-लीं		
द्वितीय सामा	-ला	-ला		
आदर	-ली	-ली		
हीन	-ले	-ला		
तृतीय सामा / आदर	-लैं	-लैं	-लैं	-लें
हीन	लैं, -लस	- -	-लैं	-लैं
स्त्रीलिंग				
प्रथम	-ली	-ली		

---

१. मुक्त एकान्तर मुख्यसमूह की सूची के मुक्त रूपान्तरण में हैं।

द्वितीय सामा / आदर	-नू	-नू		
हीन	-सी	-सी		
तृतीय सामा / आदर	-नीं	-नीं		
हीन	-नें	-सीं		

भविष्य पुल्लिंग

प्रथम	-अब	-अब		
द्वितीय (सामा)	-या, -इहा	-या, -इहा	-अवा	-अवा
(आदर)	-अब,-इहा	-अब,-इहा		
(हीन)	-बे, -इहे	-आ, -इहा	-अबे	-अवा
तृतीय सामा / आदर	-इहें	-इहें		
हीन	-ई	-इहे		

स्त्रीलिंग

प्रथम	-अब	-अब		
द्वितीय सामा / आदर	-बू, इहा	-बू, -इहा	-अबू	-अबू
हीन	-बी, -इहे	-बी, इ-हा	-अबी	-अबी
तृतीय सामा / आदर	-इहें	-इहे		
हीन	-ई	-इहे		

३. ६१. परप्रत्ययों में रूपस्वनिमात्मक परिवर्तन ·

परप्रत्यय कुछ रूपस्वनिमात्मक परिवर्तनो को व्यक्त करते हैं । ये रूपस्वनिमात्मक परिवर्तन निम्नलिखित हैं।

१. ।-ईला। (प्रथम तथा द्वितीय आदर) । ई । मे अन्त होने वाले प्रातिपदिको के पश्चात् आने पर ।-ला। मे परिवर्तित हो जाता है।

पी 'पीना' + ईला. (हम) पीला '(मैं) पीता हूँ'

२. ।-ई,-ऊ। में अन्त होने वाले प्रातिपदिकों के पश्चात् लगने पर भूत पर-प्रत्यय ।-ल-।।-अल-। में परिवर्तित हो जाता है।

पी + -ल- (हम) पिअली '(मैंने) पीया'
छू + -ल- (हम) छुअली '(मैंने) छुआ'

३. ।-ए। में अन्त होने वाले प्रातिपदिकों के पश्चात् आने पर भूत परप्रत्यय ।-ल-। ह्-ल-। में परिवर्तित हो जाता है।

दे + -ल- (हम) देह्ली '(मैंने) दिया'
ले + -ल- (हम) लेह्लीं '(मैंने) लिया',

४. भविष्य परप्रत्यय। -व-। पुल्लिंग तथा स्त्रीलिंग प्रथम एकवचन और बहुवचन तथा पुल्लिंग द्वितीय आदरसूचक एकवचन और बहुवचन में। -अव। में परिवर्तित हो जाता है। परन्तु।ए। में अन्त होने वाले प्रातिपदिकों के पश्चात् यह। -व। ही रहता है।

काट + -अव भविष्य (हम) काटव '(मैं) काटूंगा'
दे + -व भविष्य (हम) देव '(मैं) दूंगा'

३.६२. प्रातिपदिकों में रूपस्वनिमात्मक परिवर्तन

१. । -ई, -ऊ। में अन्त होने वाले प्रातिपदिकों में, वर्तमान परप्रत्यय लगने पर, प्रातिपदिक के। -ई, -ऊ। क्रमशः ।-इ, -उ। में परिवर्तित हो जाते हैं।

पी + -एला (तू) पिएला '(आप) पीते हैं'.
छू + -एला (तू) छुएला ('आप) छूते हैं'

२. प्रातिपदिक की अन्त्य स्थिति के। -ई, -ऊ।, भूत परप्रत्यय लगने पर क्रमशः । -इ,-उ। में परिवर्तित हो जाते हैं।

पी + -ल- (तू) पिअला '(आप) ने पिया'
छू + ल- (तू) छुअला '(आप) ने छुआ'

३. प्रातिपदिक की अन्त्य स्थिति के। -आ-अ [~अः]।, भूत परप्रत्यय लगने पर संयुक्त स्वर में परिवर्तित हो जाते हैं।

बता- + -ल- [हम] बतउली '[मैंने] बताया'
अचः + -ल- [हम] अचउली '[मैंने[[भोजन के बाद] हाथ-मुंह धोये'

४. बहुधा क्रियाप्रातिपदिक के दीर्घ स्वर भूत परप्रत्यय लगने पर ह्रस्व में परिवर्तित हो जाते हैं।

सकार 'स्वीकार करना' + -ल- [हम] सकरली '[मैंने] स्वीकार किया'
काट 'काटना' + -ल- [हम] कट्ली ['मैंने] काटा',
बाट 'बांटना' + -ल- [हम] बट्ली '[मैंने] बांटा',

५ भूत परप्रत्यय लगने पर निम्नलिखित क्रियाएँ अनियमित प्रातिपदिक रखती हैं :

कर + -ल- [हम] कइली '[मैंने] किया'
धर + -ल- [हम] धइली '[मैंने] रखा'

६ । जा- । क्रिया के मूल में रूप से सम्पूर्ण परिवर्तन की प्रवृत्ति¹ मिलती है।

जा- + -ल- गइ- [हम] गइली '[मैं] गया'

७ प्रातिपदिक की अन्त्यध्वनि में ।-ई- ऊ । भविष्य परप्रत्यय लगने पर क्रमशः ।-इ, -उ । में परिवर्तित हो जाते हैं।

पी + -ब- [तू] पियबा '[आप] पीएँगे'
छू + -ब- [तू] छुअबा '[आप] छूएँगे'

८ प्रातिपदिक की अन्त्यध्वनि का । -ई ।, तृतीय पुरुष पुंल्लिंग, स्त्रीलिंग और एकवचन भविष्य परप्रत्यय । -ई । के लगने पर, अन्त्यध्वनि का । -ई । तथा परप्रत्यय । -ई । दोनों एक में मिल जाते हैं।

पी + -ई [ऊ] पी '[वह] पीयेगा [या पीयेगी]'

३. ६३. श्रेणी २ कृदन्त

वर्तमान	भूत
१ मूल । -अत ।	२ मूल । -आइल ।

आकृति १ के लिए नियमित वितरण वाले तीन संरूप मिलते हैं। जोतत में ।-अत ।, जात में । -त । और बनावत में । -वत ।। । -अत । सभी व्यंजनों तथा । ओ । के पश्चात् आता है, । -त । । ओ । के अतिरिक्त एकाक्षरी मूल में सभी स्वर ध्वनियों के पश्चात् आता है, तथा । -वत । द्विअक्षरी मूल में सभी स्वर ध्वनियों के पश्चात् आता है।

उदाहरण निम्नलिखित हैं :

। रोअत । रोता हुआ	। बूड़त । डूबता हुआ
। दउरत । दौड़ता हुआ	। देत । देता हुआ
। लेत । लेता हुआ	। बनावत । बनाता हुआ
। छुआइल । छुआ हुआ	। कहाइल । कहा हुआ
। देखाइल । देखा हुआ	। रखाइल । रखा हुआ

३.६४. श्रेणी ३ आज्ञापक

१. मूल । -आ । या । ० ।
२. मूल । -ओ । या । ० ।
३. मूल । -ईं । या । ~ ।
४ मूल । -एँ । या । ~ ।
५. मूल । -उ । या । -ओ ।

---

१ । जा- । का प्रथम संरूप । जा- । है जो आकृति १ [वर्तमान] तथा ३ [भविष्य] में मिलता है और द्वितीय संरूप । गइ- । जो आकृति २ [भूत] में मिलता है।

आज्ञापक परप्रत्ययों का वितरण निम्नलिखित है :

(१) द्वितीय-सामा-एक वहु तथा हीन वहु (।) । ग्रा । में ग्रन्त होने वाले प्रातिपदिक शून्य परप्रत्यय को सम्मिलित करते हैं।

जा	ग्राज्ञापक जा	'जाइये'

(।।) ग्रन्य प्रातिपदिक । -ग्रा । परप्रत्यय को सम्मिलित करते हैं।

जोत	ग्राज्ञापक	जोता	'जोतिये'
बान्ह	ग्राज्ञापक	बान्हा	'बाँधिये'
पी	ग्राज्ञापक	पीग्रा~पिग्रा	'पीजिये'

(२) द्वितीय—हीन एक (।) प्रातिपदिक के ग्रन्त का । -ग्रा । । -ग्रो । में बदल जाता है।

खा	ग्राज्ञापक	खो	'खाग्रो'
जा	ग्राज्ञापक	जो	'जाग्रो'

(।।) ग्रन्य प्रातिपदिकों में परिवर्तन नहीं होता।

पी	ग्राज्ञापक	पी	'पीग्रो'
जोत	ग्राज्ञापक	जोत	'जोतो'
छू	ग्राज्ञापक	छू	'छूग्रो'

(३) द्वितीय ग्रादर एक वहु

(।) । -ई । में ग्रन्त होने वाले प्रातिपदिकों में स्वर ग्रनुनासिक हो जाता है।

पी	ग्राज्ञापक	पीं	'पीजिये'

(।।) ग्रन्य प्रातिपदिकों में । -ईं । परप्रत्यय जुड़ता है।

काट	ग्राज्ञापक	काटीं	'काटिये'
छू	ग्राज्ञापक	छूईं, छुईं	'छूइये'
जोत	ग्राज्ञापक	जोतीं	'जोतिये'

(४) तृतीय सामा तथा ग्रादर एक वहु ग्रौर हीन वहु

(।) प्रातिपदिकों के ग्रन्त में ग्राने वाला । -ग्रा । । -ग्रा । में बदल जाता है।

खा	ग्राज्ञापक	खा	'खायें'
जा	ग्राज्ञापक	जा	'जायें'

(।।) ग्रन्य प्रातिपदिकों में । -एं । परप्रत्यय जुड़ता है :

जोत	ग्राज्ञापक	जोतें	'जोतें'
पी	ग्राज्ञापक	पीएं, पिएं	'पीयें'

(५) तृतीय-हीन एक (।) । ग्रा । में ग्रन्त होने वाले प्रातिपदिकों में । -उ । परप्रत्यय जुड़ता है।

आज्ञापक परप्रत्ययों का विवरण निम्नलिखित है :

(१) द्वितीय-सामा-एक वहु तथा हीन वहु (।) । आ । में अन्त होने वाले प्रातिपदिक शून्य परप्रत्यय को सम्मिलित करते हैं।

जा	आज्ञापक जा	'जाइये'

(।।) अन्य प्रातिपदिक । -आ । परप्रत्यय को सम्मिलित करते हैं।

जोत	आज्ञापक	जोना	'जोतिये'
बान्ह्	आज्ञापक	बान्हा	'बाधिये'
पी	आज्ञापक	पीआ~पिया	'पीजिये'

(२) द्वितीय—हीन एक (।) प्रातिपदिक के अन्त का । -आ । । -ओ । में बदल जाता है।

खा	आज्ञापक	खो	'खाओ'
जा	आज्ञापक	जो	'जाओ'

(।।) अन्य प्रातिपदिकों में परिवर्तन नहीं होता।

पी	आज्ञापक	पी	'पीओ'
जोत	आज्ञापक	जोत	'जोतो'
छू	आज्ञापक	छू	'छूओ'

(३) द्वितीय आदर एक वहु

(।) । -ई । में अन्त होने वाले प्रातिपदिकों में स्वर अनुनासिक हो जाता है।

पी	आज्ञापक	पीं	'पीजिये'

(।।) अन्य प्रातिपदिकों में । -ई । परप्रत्यय जुड़ता है।

काट	आज्ञापक	काटी	'काटिये'
छू	आज्ञापक	छूई, छुई	'छूइये'
जोत	आज्ञापक	जोती	'जोतिये'

(४) तृतीय मामा तथा आदर एक वहु और हीन वहु

(।) प्रातिपदिकों के अन्त में आने वाला । -आ । । -आ । में बदल जाता है।

खा	आज्ञापक	खा	'खायें'
जा	आज्ञापक	जा	'जायें'

(।।) अन्य प्रातिपदिकों में । -एं । परप्रत्यय जुड़ता है :

जोत	आज्ञापक	जोतें	'जोतें'
पी	आज्ञापक	पीएं, पिएं	'पीयें'

(५) तृतीय-हीन एक (।) । आ । में अन्त होने वाले प्रातिपदिकों में । -उ । परप्रत्यय जुड़ता है।

जा	आज्ञापक	जाउ	'जाये'

(ii) अन्य प्रातिपदिकों के साथ । -ओ । परप्रत्यय आता है :

जोत	आज्ञापक	जोतो	'जोते'
पी	आज्ञापक	पीओ~पिओ	'पीये'
छू	आज्ञापक	छूओ~छुओ	'छूये'

(६) द्वितीय स्त्री सामा तथा आदर एक बहु

(i) प्रातिपदिकों के अन्त में । -आ । आने पर शून्य परप्रत्यय आता है ।

खा	आज्ञापक	खा	'खाइये'

(ii) अन्य प्रातिपदिकों के साथ । -आ । परप्रत्यय आता है ।

तोर	आज्ञापक	तोरा	'तोड़िये'
छू	आज्ञापक	छूआ	'छूइये'

३.६५. श्रेणी ४ इच्छासूचक

१ मूल । -ईं ।
२. मूल । -आ ।
३. मूल । -उ ।
४ मूल । -एं ।
५ मूल । -ओ ।

इच्छासूचक परप्रत्यय का वितरण निम्नलिखित है

पुंल्लिग तथा स्त्रीलिंग

	एक	बहु
प्रथम	-ईं	-ईं
द्वितीय (सामा)	-आ	-आ
द्वितीय (आदर)	-ईं	-ईं
द्वितीय (हीन)	-उ	-आ
तृतीय (सामा, आदर)	-एं	-ओ
तृतीय (हीन)	-ओ	-ए

आदर । -ई, -ईं । स्त्रीलिंग में नहीं मिलते ।

। -आ, -आ । स्त्रीलिंग में द्वितीय सामा और आदर दोनों में प्रयुक्त होता है ।

जोत

प्रथम	जोतीं	जोतीं
द्वितीय (सामा)	जोता	जोता
द्वितीय (आदर)	जोतीं	जोतीं
स्त्री	जोता	जोता

द्वितीय (हीन)	जोतु	जोता
तृतीय (सामा आदर)	जोतें	जोतो
तृतीय (हीन)	जोतो	जोतें

प्रातिपदिक की अन्त्य। -ई। प्रथम तथा द्वितीय आदर आकृतियों में लुप्त हो जाती है।

नमूना शब्द रूपावली काट

१. वर्तमान :

पुल्लिंग

	एक	बहु
प्रथम	काटीला	काटीला
द्वितीय (सामा)	काटेला	काटेला
द्वितीय (आदर)	काटीला	काटीला
द्वितीय (हीन)	काटेलें	काटेला
तृतीय (सामा तथा आदर)	काटेलं	काटेलं
तृतीय (हीन)	काटेला	काटेलं

स्त्रीलिंग

प्रथम	काटीला	काटीला
द्वितीय (सामा तथा आदर)	काटेलू	काटेलू
द्वितीय (हीन)	काटेली	काटेली
तृतीय (सामा तथा आदर)	काटेलीं	काटेली
तृतीय (हीन)	काटेले	काटेली

२. भूत

पुल्लिंग

प्रथम	कट्लीं	कट्ली
द्वितीय (सामा)	कट्ला	कट्ला
द्वितीय (आदर)	कट्लों	कट्ली
द्वितीय (हीन)	कट्ले	कट्ला
तृतीय (सामा तथा आदर)	कट्लें	कट्लें
तृतीय (हीन)	कट्ले, कट्लम	कट्लें

स्त्रीलिंग

प्रथम	कट्लीं	कट्ली
द्वितीय (सामा तथा आदर)	कट्नू	कटम

द्वितीय (हीन)	कट्ली	कट्ली
तृतीय (सामा तथा आदर)	कट्नी	कट्ली
तृतीय (हीन)	कट्नै	कट्नो

३ भविष्य

	पुल्लिंग	
प्रथम	काटब	काटब
द्वितीय (सामा)	कट्बा, कटिहा	कट्बा, कटिहा
द्वितीय (आदर)	काटब, कटिहा	काटब, कटिहा
द्वितीय (हीन)	कट्बे, कटिहे	कट्बा, कटिहा
तृतीय (सामा तथा आदर)	कटिहे	कटिहे
तृतीय (हीन)	काटी	कटिहें

	स्त्रीलिंग	
प्रथम	काटब	काटब
द्वितीय (सामा तथा आदर)	कट्बू	कट्बू
द्वितीय (हीन)	कट्बी	कट्बी
तृतीय (सामा तथा आदर)	कटिहे	कटिहे
तृतीय (हीन)	काटी	कटिहे

४ वर्तमान कृदन्त काटत
५ भूत कृदन्त कटाइल
६ आज्ञापक

	पुल्लिंग	
द्वितीय (सामा)	काटा	काटा
द्वितीय (आदर)	काटी	काटी
द्वितीय (हीन)	काट	काटा
तृतीय (सामा तथा आदर)	काटे	काटे
तृतीय (हीन)	काटो	काटे

	स्त्रीलिंग	
द्वितीय (सामा तथा आदर)	काटा	काटा
द्वितीय (हीन)	काट	काटा
तृतीय (सामा तथा आदर)	काटें	काटें
तृतीय (हीन)	काटो	काटें

७. इच्छासूचक

प्रथम	काटी	काटी
द्वितीय (सामा)	काटा	काटा
द्वितीय (आदर)	काटी	काटी
द्वितीय (हीन)	काटु	काटा
तृतीय (सामा तथा आदर)	काटो	काटो
तृतीय (हीन)	काटो	काटें

३.६६ श्रेणी ५ (१)

वर्तमान

१. । ह्-।

२. । बाट-। या । बाड़-।

इस श्रेणी के अन्तर्गत । ह्-। 'होना' क्रिया सम्मिलित है।

१. । ह्-। के उपरांत आने वाले गणक तीन व्याकरणिक विशेषताओं को व्यक्त करते हैं—(१) लिंग (२) पुरुष और (३) वचन।

। -ईं । पुल्लिंग तथा स्त्री-प्रथम एक तथा बहु, पु० द्वितीय आदर-एक तथा बहु और स्त्री तृतीय सामा तथा आदर एक और बहु तथा हीन बहु को व्यक्त करती है।

। -उआ । पु द्वितीय सामा एक तथा बहु और हीन बहु को व्यक्त करता है।

। -उए । पु द्वितीय हीन एक को व्यक्त करता है।

। उए । पु तृतीय सामा तथा आदर एक और बहु तथा हीन बहु को व्यक्त करता है।

। ॰ । पु तथा स्त्री तृतीय हीन एक को व्यक्त करता है।

। -ऊ । स्त्री-द्वितीय सामा तथा आदर एक और बहु को व्यक्त करता है।

। -ई । स्त्री द्वितीय हीन एक और बहु को व्यक्त करती है।

२. । बाट- ।~। बाड । के उपरान्त आने वाले गणक तीन व्याकरणिक विशेषताओं को व्यक्त करते है—(१) लिंग, (२) पुरुष और (३) वचन।

। -ईं । पु तथा स्त्री प्रथम एक बहु, पु द्वितीय आदर एक और बहु तथा स्त्री तृतीय सामा और आदर एक तथा बहु और हीन बहु को व्यक्त करती है।

। -आ । पु द्वितीय सामा एक तथा बहु और हीन बहु को व्यक्त करता है।

। -ए । पु द्वितीय तथा तृतीय हीन एक और स्त्री तृतीय हीन एक को व्यक्त करता है।

। -एं । पु तृतीय सामा तथा आदर एक तथा बहु और हीन बहु को व्यक्त करता है।

। -ऊ । स्त्री द्वितीय सामा तथा आदर एक और बहु को व्यक्त करता है।

। -ई । स्त्री द्वितीय हीन एक तथा बहु को व्यक्त करती है।

१. ।हू-।

	पुंल्लिग	मुक्त एकान्तर	
प्रथम	-ई	-ई	
द्वितीय (सामा)	-उआ	-उआ	
द्वितीय (आदर)	-ई	-ई	
द्वितीय (हीन)	-उए	-उआ	
तृतीय (सामा तथा आदर)	-उएं	-उएं	
तृतीय (हीन)	-०	-उएं	

	स्त्रीलिंग		
प्रथम	-ई	-ई	
द्वितीय (सामा तथा आदर)	-ऊ	-ऊ	
द्वितीय (हीन)	-ई	-ई	उई
तृतीय (सामा तथा आदर)	-ई	-ई	
तृतीय (हीन)	-०	-ई	

उदाहरण निम्नलिखित हैं :

	पुंल्लिग	
प्रथम	हुई	हुई
द्वितीय (सामा)	हुउआ	हुउआ
द्वितीय (आदर)	हुई	हुई
द्वितीय (हीन)	हुउए	हुउआ
तृतीय (सामा तथा आदर)	हुउएं	हुउएं
तृतीय (हीन)	हु	हुउएं

	स्त्रीलिंग	
प्रथम	हुई	हुई
द्वितीय (सामा तथा आदर)	हुऊ	हुऊ
द्वितीय (हीन)	हुई	हुई
तृतीय (सामा तथा आदर)	हुई	हुई
तृतीय (हीन)	हु	हुई

।बाट-।या।बाड-।

	पुंल्लिग	
प्रथम	-ईं	-ईं
द्वितीय [सामा]	-आ	-आ

द्वितीय [आदर]	-ईं	-ईं
द्वितीय [हीन]	-ए	-आ
तृतीय [सामा तथा आदर]	-एं	-एं
तृतीय [हीन]	-ए	-एं

स्त्रीलिंग

प्रथम	-ईं	-ईं
द्वितीय [सामा तथा आदर]	-ऊ	-ऊ
द्वितीय [हीन]	-ई	-ई
तृतीय [सामा तथा आदर]	-ईं	-ईं
तृतीय [हीन]	-ए	ईं

उदाहरण निम्नलिखित हैं :

पुल्लिंग

प्रथम	वाटी~वाड़ी	वाटी~वाड़ी
द्वितीय [सामा]	वाटा~वाड़ा	वाटा~वाड़ा
द्वितीय [आदर]	वाटी~वाड़ी	वाटी~वाड़ी
द्वितीय [हीन]	वाटे~वाडे	वाटा~वाड़ा
तृतीय [सामा तथा आदर]	वाटें~वाड़ें	वाटें~वाड़ें
तृतीय [हीन]	वाटे	वाटें~वाड़ें

स्त्रीलिंग

प्रथम	वाटी~वाड़ी	वाटी~वाड़ी
द्वितीय [सामा तथा आदर]	वाटू~वाड़ू	वाटू~वाड़
द्वितीय [हीन]	वाटी~वाडी	वाटी~वाड़ी
तृतीय [सामा तथा आदर]	वाटी~वाड़ी	वाटी~वाड़ी
तृतीय [हीन]	वाटे	वाटी~वाड़ी

३.६७ श्रेणी ५ [२]

वर्तमान	भूत	भविष्य
१. । रह्- ।	२. । रह् - ।	३. । रह् - ।

। रह् - । के उपरान्त आने वाले परप्रत्यय वर्तमान, भूत तथा भविष्य हैं। इनमे प्रत्येक परप्रत्यय के उपरात आनेवाले गणक तीन व्याकरणिक विशेषताओं को व्यक्त करते हैं—[१] लिंग, [२] पुरुष और [३] वचन। इनका वितरण श्रेणी १ [१, २, ३, ४ तथा ५] के सदृश है।

वर्तमान

पुंल्लिंग

	एक	बहु
प्रथम	-ईला	-ईला
द्वितीय [सामा]	-एला	-एला
द्वितीय [आदर]	-ईला	-ईला
द्वितीय [हीन]	-एले	-एला
तृतीय [सामा तथा आदर]	-एल	-एल
तृतीय [हीन]	-एला	-एलं

स्त्रीलिंग

प्रथम	-ईला	-ईला
द्वितीय [सामा तथा आदर]	-एलू	-एलू
द्वितीय [हीन]	-एली	-एली
तृतीय [सामा तथा आदर]	-एली	-एली
तृतीय [हीन]	-एले	एली

उदाहरण निम्नलिखित हैं

पुंल्लिंग

प्रथम	रहीला	रहीला
द्वितीय [सामा]	रहेला	रहेला
द्वितीय [आदर]	रहीला	रहीला
द्वितीय [हीन]	रहेले	रहेला
तृतीय [सामा तथा आदर]	रहेलं	रहेल
तृतीय [हीन]	रहेला	रहेलं

स्त्रीलिंग

प्रथम	रहीला	रहीला
द्वितीय [सामा तथा आदर]	रहेलू	रहेलू
द्वितीय [हीन]	रहेली	रहेली
तृतीय [सामा तथा आदर]	रहेली	रहेली
तृतीय [हीन]	रहेले	रहेली

भूत

पुंल्लिंग

	एक	बहु
प्रथम	-ली	-लीं

द्वितीय [सामा]	-ला	-ला
द्वितीय [आदर]	-ली	-ली
द्वितीय [हीन]	-ले	-ला
तृतीय [सामा तथा आदर]	-लें	-लें
तृतीय [हीन]	-सँ~अल	-लें

स्त्रीलिंग

प्रथम	-ली	-ली
द्वितीय [सामा तथा आदर]	-लू	-लू
द्वितीय [हीन]	-ली	-ली
तृतीय [सामा तथा आदर]	-ली	-ली
तृतीय [हीन]	-अलि~लै	-ली

उदाहरण निम्नलिखित हैं :

पुल्लिंग

प्रथम	रह्ली	रह्ली
द्वितीय [सामा]	रह्ला	रह्ला
द्वितीय [आदर]	रह्ली	रह्ली
द्वितीय [हीन]	रह्ले	रह्ला
तृतीय [सामा तथा आदर]	रह्लें	रह्लें
तृतीय [हीन]	रहल	रह्लें

स्त्रीलिंग

प्रथम	रह्ली	रह्ली
द्वितीय [सामा तथा आदर]	रह्लू	रह्लू
द्वितीय [हीन]	रह्ली	रह्ली
तृतीय (सामा तथा आदर)	रह्ली	रह्ली
तृतीय [हीन]	रहलि	रह्ली

भविष्य

पुल्लिंग

प्रथम	-अब	-अब
द्वितीय [सामा]	-बा	-बा
द्वितीय [आदर]	-अब~इहा	-अब~इहा
द्वितीय [हीन]	-बे~इहे	-बा~-इहा

तृतीय [सामा तथा आदर]	-इहें	-इहें
तृतीय [हीन]	-ई	-इहें

स्त्रीलिंग

प्रथम	-अब	-अब
द्वितीय [सामा तथा आदर]	-वू~इहा	-वू, -इहा
द्वितीय [हीन]	-वी~ -इहे	-वी, -इहा
तृतीय [सामा तथा आदर]	-इहे	-इहें
तृतीय [हीन]	-ई	-इहे

उदाहरण निम्नलिखित हैं :

पुल्लिंग

प्रथम	रहब	रहब
द्वितीय [सामा]	रह्वा	रह्वा
द्वितीय [आदर]	रहब	रहब
द्वितीय [हीन]	रह्वे	रह्वे
तृतीय [सामा तथा आदर]	रहिहे	रहिहे
तृतीय [हीन]	रही	रहिहे

स्त्रीलिंग

प्रथम	रहब	रहब
द्वितीय [सामा तथा आदर]	रह्वू	रह्वू
द्वितीय [हीन]	रह्वी	रह्वी
तृतीय [सामा तथा आदर]	रहिहे	रहिहे
तृतीय [हीन]	रही	रहिहे

६ ६८. भोजपुरी क्रियाओं में से अधिकतर या तो अकर्मक हैं या सकर्मक। अकर्मक क्रियाएं सकर्मक में रचनान्तरित हो सकती हैं। इस रचनान्तरण के लिए अकर्मक में निम्नलिखित परिवर्तन अपेक्षित होते हैं—

[१] एकाक्षरी प्रातिपदिक के ह्रस्व स्वर का दीर्घ में परिवर्तित होना :

।पट।	।पाट।
।पिस।	।पीस।
।पिट।	।पीट।
।कट।	।काट।
।दब।	।दाब।

[१] द्विअक्षरी प्रातिपदिक के अन्त्य अक्षर के ह्रस्व स्वर का दीर्घ में परिवर्तित होना।

। उखड़ ।	। उखाड़ ।
। बिगर ।	। बिगार ।
। निकल ।	। निकाल ।

[३] एकाक्षरी प्रातिपदिक में । इ । तथा । उ । का । ए । तथा । ओ । में परिवर्तित होना।

। खुल ।	। खोल ।
। फिर ।	। फेर ।
। दिख ।	। देख ।
। मुर ।	। मोर ।

[४] कुछ प्रातिपदिकों में अन्त्य । ट । का । ड । में परिवर्तित होना।

। जुट ।	। जोड ।
। फुट ।	। फोड़ ।
। फट ।	। फाड । ~ ।-र।

कुछ क्रियाएँ अकर्मक तथा सकर्मक दोनों तरह से प्रयुक्त होती हैं :
हमार देंह खजुआति ह [अक]
ओकर देंह खजुआ के ऊ सुति गइल [सक]
हमार जीव ललचात ह [अक]
रानी गहना खातिन राजा के ललचावे लगलो [सक]

अरूपान्तरित अंश

३.७. परसर्ग

परसर्गों का स्वतंत्र आगमन नही होता, वे सदैव दूसरे शब्दों के साथ आते हैं। ये आबद्ध रूप किसी भी श्रेणी के साथ ठीक नही बैठते। न तो ये पूर्व और पर प्रत्यय के रूप में प्रयुक्त होते हैं और न ही स्वतत्र रूप में इस्तेमाल होते हैं। ये शब्द और वाक्य स्तरों पर स्लाटो की पूर्ति करते हैं, और यह शब्द से इनको [illegible] करता है। शब्द स्तरण पर स्लाटों की पूर्ति ये नही करते।

भोजपुरी मे परसर्गों के दो वर्ग हैं —

वर्ग १

। के ।	को	। ड ।	डा
। से ।	सें	। डें ।	[illegible]

अन्ते	'अन्य स्थान पर'	निअर~निअर	'नजदीक'
पार	'पार'	तरे	'नीचे'
भित्तर	'भीतर'	बाहर	'बाहर'

वर्ग ३

एहर, हेहर	'इस ओर'	ओहर, होहर	'उस ओर'
जेहर	'जिस ओर'	तेहर	'वहाँ'
केहर	'किस ओर'		

वर्ग ४

अइसे, एइसे	'इस प्रकार'	जइसे	'जैसे'
तइसे	'तैसे'	ओइसे	'वैसे'
कइसे	'कैसे ?'	ठीक	'ठीक'
सचमुच	'सचमुच'		

वर्ग ५

ना, नाही	'नहीं'	मत	'मत'

वर्ग ६

हुं, हा	'हां'	निहिचे	'निश्चय'
जरूर	'अवश्य'		

वर्ग ७

एक् दाईं	'एक समय'

वर्ग ८

ढेर	'अधिक'	अउरी	'और'
बेसी	'पर्याप्त'	कम	'कम'
बेल्कुल	'बिल्कुल'		

क्रियाविशेषणों में, भाव को अधिक सार्थक करने के लिए, द्विरावृत्ति मिलती है।

। कल्ले कल्ले ।	धीरे धीरे	। घरी घरी ।	थोड़ी थोड़ी देर के बाद
। फेर फेर ।	फिर फिर	। ढेर ढेर ।	अधिक अधिक

३.९. संयोजक

भोजपुरी में पाये जाने वाले संयोजक निम्नलिखित हैं :

। अ, आ, अउरी ।	और	। बाकी ।	परन्तु
। या, कि ।	अथवा	। कि, जैसे ।	कि
। त ।	तब	। काहेंकि ।	क्योंकि
। जो ।	यदि	। मानो ।	मानो
। नहिंत ।	नहीं तो		

३.१०. विस्मयादिबोधक

विस्मयादिबोधक को दो समूहों में बाटा जा सकता है .

(१) वे, जो सम्बोधन के रूप में व्यक्त होते हैं।

(२) वे, जो विविध संवेगों को संवहित करते हैं।

(१)	। हे ।	हे	। अरे ।	अरे
	। हो ।	हे	। रे ।	अरे

। हे, अरे । सम्बोधित संज्ञा के पूर्व तथा । हो, रे । संज्ञा के बाद प्रयुक्त होते हैं।

(२) । आह । आह

। दोहाई । सहायता, न्याय अथवा पक्ष के लिए संवेग को व्यक्त करता है।

। हाय ।	हाय
। ओह ।	ओह
। उह ।	उह
। छी छी ।	छी छी
। एँ~अह ।	विस्मय को व्यक्त करते हैं।
। ओहो ।	अहा
। वाह ।	शाबाश

३.११ व्युत्पादनात्मक रचना (डेरिवेशनल कन्स्ट्रक्शन्स)

भोजपुरी में व्युत्पादनात्मक रचना दो सम्भाव्य टैग्मीमों से मिलकर बनती है। एक टैग्मीम प्रातिपदिक अथवा धातु है जो आन्तरक टैग्मीम है और दूसरी व्युत्पादनात्मक प्रत्यय (परप्रत्यय अथवा पूर्व प्रत्यय) है जिसे व्युत्पादनात्मक टैग्मीम कह सकते हैं। यह प्रातिपदिक स्तरीय स्लाटों की पूर्ति करता है। यह व्यवस्था निम्नलिखित फार्मूले में व्यक्त की जा सकती है

व्युत्पन्न प्रातिपदिक = आन्तरक + व्युत्पादक

यह शब्द-बनावट की दूसरी परत है जिसमें आन्तरक स्लाट हैं जिनकी पूर्ति प्रातिपदिकों द्वारा होती है और व्युत्पादनात्मक स्लाट हैं जिनकी पूर्ति व्युत्पादनात्मक प्रत्ययों

द्वारा होती है। भोजपुरी में ओढ़ना द्वारा व्यक्त होने वाली रचना को फार्मूले में इस प्रकार व्यक्त किया जा सकता है :

संप्रा = + आन्त : क्रिया + नाम : —ना

अर्थात् एक प्रकार के संज्ञा प्रातिपादिक के अन्तर्गत, अनिवार्य आन्तरक स्लाट जिसकी पूर्ति क्रिया धातु द्वारा होती है और अनिवार्य नामकीय स्लाट जिसकी पूर्ति -ना परप्रत्यय द्वारा होती है, आते है।

बहता द्वारा व्यक्त होने वाली रचना का फार्मूला प्रतिनिधित्व इस प्रकार होगा :

विप्रा = + आन्त : क्रिया + वि —ता

अर्थात् एक प्रकार के विशेषण प्रातिपदिक के अन्तर्गत, अनिवार्य आन्तरक स्लाट जिसकी पूर्ति क्रिया धातु द्वारा होती है और अनिवार्य विशेषणात्मक स्लाट जिसकी पूर्ति -ता परप्रत्यय द्वारा होती है, आते हैं।

पिरा द्वारा व्यक्त होने वाली रचना का फार्मूला प्रतिनिधि :

क्रिप्रा = + आन्त : सधा + कि : —आ

अर्थात् एक तरह के क्रिया प्रातिपदिक के अन्तर्गत, अनिवार्य आन्तरक स्लाट जिसकी पूर्ति संज्ञा धातु द्वारा होती है और अनिवार्य क्रियात्मक स्लाट जिसकी पूर्ति -आ परप्रत्यय द्वारा होती है, आते हैं।

तब्बो द्वारा व्यक्त होने वाली रचना का फार्मूला प्रतिनिधि :

क्रिविप्रा = + आन्त : क्रिवि + क्रिवि : —वो

अर्थात् एक तरह के क्रियाविशेषण प्रातिपदिक के अन्तर्गत, अनिवार्य आन्तरक स्लाट जिसकी पूर्ति क्रियाविशेषण द्वारा होती है तथा अनिवार्य क्रियाविशेषणात्मक स्लाट जिसकी पूर्ति -वो परप्रत्यय द्वारा होती है, आते हैं।

शब्द की मुख्य श्रेणी में परिवर्तन लाने वाले व्युत्पादनात्मक प्रत्ययों को नामकीय (नाम), जो किसी अन्य प्रातिपदिक श्रेणी से संज्ञा बनाते हैं, विशेषणात्मक, जो किसी अन्य प्रातिपदिक श्रेणी से विशेषण बनाते हैं, क्रियात्मक, जो किसी अन्य प्रातिपदिक श्रेणी से क्रिया बनाते हैं, और क्रियाविशेषणात्मक, जो स्वयं की प्रातिपदिक श्रेणी से क्रिया विशेषण बनाते हैं, कह सकते हैं।

३.१२. नामकीय (नॉमिनलाइज़र्स)

व्युत्पादनात्मक प्रत्यय, जो संज्ञा बनाने के लिए संज्ञा, क्रिया और विशेषण प्रातिपदिकों के पश्चात् और पूर्व प्रयुक्त होते हैं, यहाँ वर्णमाला के क्रम से दिये जा रहे हैं। यद्यपि इन प्रत्ययों में से कुछ या तो संज्ञा या केवल क्रिया या केवल विशेषण के पूर्व और पश्चात् लगते हैं परन्तु बहुत से अन्य प्रत्यय तीनों श्रेणियों के पूर्व या पश्चात् लग सकते हैं, अतः नामीय, क्रियाविषयक अथवा विशेषणात्मक प्रत्यय जैसे विभाजन नहीं किये गए हैं।

३.१२१. परप्रत्यय

।-पन।	।चमार-।	एक निम्न जाति	।चमर्पन।[1] तुच्छ हरकत
।-दान, -दानी।	।पान-।	पान	।पनदान। पान सुपारी आदि रखने का पात्र
	।मच्छर-।	मच्छर	।मछरदानी।[2] मच्छरदानी
।-दार, -दारी।	।करज-।	कर्ज	।करज्दार। कर्जदार
	।दुकान-।	दुकान	।दुकान्दार। दुकानदार
	।इमान-।	ईमान	।इमन्दारी। ईमानदारी
।-टा।	।नाक-।	नाक	।नक्टा। नकटा
।-ठा।	।सूख-।	सूखना	।सुख्ठा। सूखी हुई कोई चीज
।-की।	।बइठ-।	बैठना	।बइट्की। बैठकी
	।डूब-।	डूबना	।डुब्की। डुबकी
	।धुन-।	धुनना	।धुन्की। धुनाई की मशीन
।-का।	।सट-।	शीघ्रता करना	।सटका। ग्रास
।-कार।	।कास्त-।	काश्त	।कास्तकार। काश्तकार
।-खाना।	।दवा-।	औषधि	।दवाखाना। औषधालय
	।डाक-।	डाक	।डक्खाना। डाकघर
।-खोर।	।घूस-।	रिश्वत	।घुसखोर। रिश्वत लेनेवाला
	।सूद-।	ब्याज	।सुदखोर। अधिक ब्याज दर रखनेवाला
।-गीर।	।राह-।	पथ	।रह्गीर। पथिक
।-गिरी।	।बाबू-।	क्लर्क	।बाबूगिरी। क्लर्की
।-गर।	।गोड़-।	पैर	।गोड़गर। पैरों वाला
।-गार।	।मदद-।	सहायता	।मदद्गार। सहायक
	।गुनाह-।	अपराध	।गुनह्गार। अपराधी
।-गाह।	।कब्बुर-।	कब्र	।कबुर्गाह। कब्रिस्तान
।-ची।	।नकल-।	नकल करना	।नकल्ची। नकल करने वाला
	।अफीम-।	अफीम	।अफिमची। अफीमची
	।मिडिल-।	मिडल कक्षा	।मिडिल्ची। मिडल कक्षा उत्तीर्ण व्यक्ति

---

१. दीर्घ स्वर का ह्रस्व स्वर मे परिवर्तन रूपस्वनिमात्मक है।

२. प्रत्यय लगने पर गुच्छ एकल हो जाते हैं।

	।तव्‌ला-।	तबला	।तवल्‌ची। तबलची
।-नी।	।सोह्‌-।	निराना	।सोह्‌नी। निराने का यंत्र
।-ना।	।पोत-।	लीपना	।पोत्‌ना। लीपने का वस्त्र
	।ओढ़-।	ओढ़ना	।ओढ़्‌ना। ओढ़ने का वस्त्र
	।बेल-।	रोटी बेलना	।बेल्‌ना। रोटी बेलने का यंत्र
।-ड़ी।	।खोल-।	ढक्कन, कवर	।खोल्‌ड़ी। चमड़ी
।-री।	।गाठ-।	गांठ	।गंठ्‌री। गठरी
।-हरु।	।पंड्‌हा-।	पथ	।पंड्‌हरू। पथिक
।-हा।	।पानी-।	पानी	।पनिहा। सिंचाई में पानी उलीचने का यंत्र
	।काट-।	काटना	।कट्‌हा। काटने की आदत वाला
।-हारा।	।चूड़ी-।	चूड़ी	।चुड़िहारा। चूड़ी बेचने वाला
	।पानी-।	पानी	।पनिहारा। पानी लाने वाला
।-वान।	।गाड़ी-।	गाड़ी	।गड़िवान। गाड़ीवाला
	।हाथी-।	हाथी	।हथिवान। हाथीवाला
।-वाला।	।गाड़ी-।	गाड़ी	।गाड़ीवाला। गाड़ीवाला
।-वार।	।रख-।	रखना	।रखवार। रखने वाला
	।कीन-।	खरीदना	।किनवार। खरीदने वाला
।-वारी।	।माह्‌-।	महीना	।महवारी। मासिक
।-वाह।	।हर्‌-।	हल	।हर्‌वाह। हल चलाने वाला
।-वइआ।	।गा-।	गाना	।गवइआ। गायक
	।खा-।	खाना	।खवइआ। खाने वाला
।-ई।	।खुस-।	प्रसन्न	।खुसी। प्रसन्नता
	।दोस्त।	मित्र	।दोस्ती। मित्रता
।-इन।	।सउक-।	शौक	।सउकीन। शौकीन
	।नमक-।	नमक	।नम्‌कीन। नमकीन
।-इस।	।बन्द-।	बन्द करना	।बन्दिस। बन्दी
	।अज्‌मा-।	आज़माना	।अजमाइस। आज़माइश
।-इआरा।	।आध-।	आधा	।अधिआर। आधे हिस्से वाला
	।हत-।	मारना	।हतिआर। हत्यारा
।-ए।	।ससुर-।	श्वसुर	।ससुरे। ससुराल
।-एला।	।बाघ-।	बाघ	।बघेला। बाघ के सदृश, बहादुर
।-एड़ी।	।भाङ-।	भांग	।भङेड़ी। भांग छानने वाला

। -एरा ।	। लूट्- ।	लूट	। लुटेरा । लुटेरा
	। साँप- ।	सर्प	। सपेरा । सपेरा
। -ऊ ।	। खा- ।	खाना	। खाऊ । अधिक खाने वाला
। -उत ।	। काठ- ।	काठ	। कठउत । काठ का एक बर्तन
	। मउसिआ- ।	माता की बहन	। मउसिआउत । माता की बहन से सम्बन्धित सम्बन्ध (जैसे मउसिआउत भाई)
। -उआ ।	। टहल- ।	सेवा	। टहलुआ । सेवक
। -ओला ।	। आम- ।	आम	। अमोला । आम का पौधा
	। खाट- ।	चारपाई	। खटोला । छोटी चारपाई
	। साप- ।	सर्प	। सपोला । साप का बच्चा
। -अनी ।	। बो- ।	बोना	। बोअनी । बुआई
। -अन ।	। चल- ।	चलना	। चलन । प्रथा
	। बाज- ।	बजना	। बाजन । वाद्ययंत्र
। -अई ।	। नात- ।	रिश्ता	। नतई । रिश्तेदारी
। -अक ।	। बइठ- ।	बैठना	। बइठक । बैठक
	। चम- ।	चमकना	। चमक । चमक
	। मन- ।	फुसफुसाहट की ध्वनि	। मनक । महीन ध्वनि
। -अत ।	। खप- ।	खपना	। खपत । खपत
। -अल ।	। दाढ़ी- ।	दाढ़ी	। दढ़िअल । दाढ़ीवाला
। -अहा ।	। पच्छिम- ।	पश्चिम	। पछिमहा । पश्चिम वाला
। -अट ।	। लप- ।	चमक	। लपट । लपट
। -अक्कड़ ।	। घूम- ।	घूमना	। घुमक्कड़ । घुमक्कड़
	। बूझ- ।	समझना	। बुझक्कड़ । समझने वाला
	। पी- ।	पीना	। पियक्कड़ । पियक्कड़
। -अइला ।	। घर- ।	घर	। घरइला । परिवार से संबंधित
	। बन- ।	जंगल	। बनइला । जंगली
	। तोन- ।	तोंद	। तोनइला, तोनइल । तोंदवाला
। -अइत ।	। डाका- ।	डाका	। डकइत । डाकू
	। आल्हा- ।	आल्हा	। अल्हइत । आल्हागायक
। -अउड़ा ।	। हाथ- ।	हाथ	। हथउड़ा । हथौड़ा
। -अउती ।	। बाप- ।	पिता	। बपउती । पैतृक
। -अउनी ।	। मीच- ।	आंख बंद करना	। मिचउनी । आंखमिचौनी खेल

। -अड़्कू ।	। पढ़- ।	पढ़ना	। पढ़ड़्कू । अधिक पढ़ने वाला
	। बढ़- ।	बढ़ना	। बढ़ड़्कू । बढ़ने की प्रवृत्ति
। -अन्त ।	। गाड़- ।	गाड़ना	। गड़न्त । गाड़ा गया प्रबंध शिशु
। -आ ।	। घेर- ।	घेरना	। घेरा । घेरा
	। मेल- ।	मेल करना	। मेला । मेला
	। ठेल- ।	ठेलना	। ठेला । ठेला गाड़ी
। -आई ।	। लड़- ।	लड़ना	। लड़ाई । लड़ाई
	। पढ़- ।	पढ़ना	। पढ़ाई । पढ़ाई
	। चतुर- ।	चतुर	। चतुराई । चतुरता
। -आक ।	। पउर- ।	तैरना	। पउराक । तैरने वाला
	। लड़- ।	झगड़ना	। लड़ाक । झगड़ालू
। -आऊ ।	। बीक- ।	बिकना	। बिकाऊ । बिकाऊ
	। चल- ।	चलना	। चलाऊ । काम चलाने लायक
। -आरी ।	। जूआ- ।	जुआ	। जुआरी । जुआड़ी
	। पूजा- ।	पूजा	। पुजारी । पुजारी
	। भीख- ।	भीख	। भिखारी । भिखारी
। -आना ।	। घर- ।	घर, परिवार	। घराना । निकट के परिवार का सम्बन्ध
। -आन ।	। समधी- ।	समधी	। समधिआन । समधी का घर
	। थक- ।	थकना	। थकान । थकान
	। उठ- ।	उठना	। उठान । उठान
। -आपा ।	। बूढ़- ।	बूढ़ा	। बुढ़ापा । बुढ़ापा
	। मोट- ।	मोटा	। मोटापा । मोटापन
	। राड़- ।	विधवा	। रँड़ापा । वैधव्य
	। बहिन- ।	बहिन	। बहिनापा । बहिन का संबंध
। -आप ।	। मेल- ।	मेल	। मेलाप । मिलाप
। -आर ।	। चाम- ।	चमड़ा	। चमार । एक निम्न जाति
। -आव ।	। लग- ।	जुड़ना	। लगाव । सम्बन्ध
	। बह- ।	बहना	। बहाव । बहाव
	। बच- ।	बचना	। बचाव । बचाव
। -आवन ।	। मिल- ।	मिलना	। मिलावन । मिलावट
	। चूम- ।	चूमना	। चुमावन । विवाह के समय का एक अनुष्ठान
। -आस ।	। पी- ।	पीना	। पिआस । प्यास
। -आवट ।	। बन- ।	बनना	। बनावट । बनावट

	। सज- ।	सजाना	। सजावट । सजावट
। -आउर ।	। नाना- ।	नाना	। ननिआउर । नाना का घर
। -आइत ।	। पंच- ।	पंच	। पंचाइत । पंचायत
। -आहट ।	। बोल- ।	बोलना	। बोलाहट । पुकार

३. १२२. पूर्वप्रत्यय

। पर- ।	। -दादा ।	दादा	। परदादा । पूर्वज
	। -नाना ।	नाना	। परनाना । माँ के पूर्वज
	। -आजा ।	पिता के पिता	। पराजा । पिता के पिता के पिता
। बद- ।	। -बोय ।	गंध	। बदबोय । दुर्गंध
। बे- ।	। -इमान ।	ईमान	। बेइमान । बेईमान
। दु- ।	। -काल ।	समय	। दुकाल । बुरा समय
। दुर- ।	। -दिन ।	दिन	। दुर्दिन । बुरे दिन
	। -दसा ।	हालत	। दुर्दसा । बुरी हालत
। दुस- ।	। -करम ।	कर्म	। दुस्करम । दुष्कर्म
। कु- ।	। करम ।	कर्म	। कुकरम । कुकर्म
	। -ठउर ।	ठौर	। कुठउर । कुठौर
। क- ।	। -पूत ।	पुत्र	। कपूत । कुपुत्र
। खुस- ।	। -हाल ।	दशा	। खुस्हाल । अच्छी दशा
	। -बोय ।	गन्ध	। खुस्बोय । सुगंधि
। न- ।	। -बालिक ।	बालिग	। नबालिक । नाबालिग
	। -पसन्न ।	पसंद	। नपसन्न । नापसंद
। ल- ।	। -पता ।	पता	। लपता । लापता
। स- ।	। -पूत ।	पुत्र	। सपूत । सुपुत्र
। सु- ।	। -फल ।	परिणाम	। सुफल । अच्छा परिणाम
	। -दिन ।	दिन	। सुदिन । अच्छे दिन
। सर- ।	। -पन्च ।	पंच	। सर्पन्च । सरपंच
। हेड- ।	। -महटर ।	मास्टर	। हेडमहटर । हैडमास्टर
। हाफ- ।	। -कमीज ।	कमीज	। हफ्कमीज । हाफ कमीज
। अ- ।	। -काज ।	कार्य	। अकाज । कार्य का नुकसान
	। -छूत ।	छूत	। अछूत । अछूत
	। -समइ ।	समय	। असमइ । असमय
। अप- ।	। -सग्गुन ।	सकुन	। अपसग्गुन । अपशकुन
। अन- ।	। -भल ।	भलाई	। अन्भल । अभलाई
	। -मोल ।	मूल्य	। अन्मोल । अमूल्य

। अल- ।	। -गरज ।	जरूरत	। अल्गरज । लापरवाही
। अव- ।	। -गुन ।	गुण	। अवगुन । अवगुण

३.१३. विशेषणात्मक (एडजॅक्टिवाइज़र्स) : व्युत्पादनात्मक प्रत्यय, जो विशेषण की रचना के लिये, संज्ञा, क्रिया और विशेषण प्रातिपदिकों के पश्चात् और पूर्व प्रयुक्त होते हैं, निम्नलिखित हैं।

३.१३१. परप्रत्यय

। -ता ।	। बह्- ।	बहना	। बह्ता । बहता
। -कहा ।	। मार- ।	मारना	। मर्कहा । मारने वाला (बैल आदि)
। -लू ।	। झगड़ा- ।	झगड़ा	। झगड़ालू । झगड़ालू
। -हरा ।	। पाच- ।	पांच	। पच्हरा । पांच तहों वाला
	। सात- ।	सात	। सत्हरा । सात तहों वाला
	। आठ- ।	आठ	। अठ्हरा । आठ तहों वाला
। -हा ।	। घाव- ।	घाव	। घव्हा । घाव वाला
। -वान~-मान ।	। धन- ।	धन	। धनवान~धनमान । धनी
	। बल- ।	शक्ति	। बलवान । शक्तिशाली
। -ई ।	। धन- ।	धन	। धनी । धनी
	। गुन- ।	गुण	। गुनी । गुणी
। -अना ।	। रो- ।	रोना	। रोअना । अधिक रोने वाला
। -अड ।	। दब- ।	दबना	। दबड । रोबदाब वाला
। -अत ।	। उड़- ।	उड़ना	। उड़त । उड़ता हुआ (जैसे पक्षी)
। -अल ।	। मर- ।	मरना	। मरल । ~ । मुअल । मृत
। -आल~-आइल ।	। बिक- ।	बिकना	। बिकाल ~ बिकाइल । बिका हुआ
	। भूख- ।	भूख	। भुखाल ~ भूखाइल । भूखा

३.१३२. पूर्व प्रत्यय

। बे- ।	। -इमान ।	ईमान	। बेइमान । बेईमान
	। -जान ।	जान	। बेजान । बेजान
	। -होस ।	होश	। बेहोस । बेहोश
। कु- ।	। -रूप ।	रूप	। कुरूप । कुरूप
। कम- ।	। -जोर ।	बल	। कमजोर । कमजोर
। खुस- ।	। -दिल ।	हृदय	। खुस्दिल । प्रसन्नचित्त
। नि- ।	। -डर ।	डर	। निडर । निडर

। निर- ।	। -बल ।	बल	। निर्बल । कमजोर
	। -बन्स ।	वंश	। निर्बन्स । वंशहीन
। ल- ।	। -परवाह् ।	सावधान	। लपर्वाह । असावधान, लापरवाह
। अ- ।	। -चेत ।	चेतना	। अचेत । अचेत
	। -बोध ।	जानकारी	। अबोध । अनजान, अबोध
	। -थाह ।	थाह	। अथाह् । अथाह
। अन- ।	। -पढ़ ।	पढ़ना	। अनपढ़ । अपढ़
	। -मेल ।	उपयुक्त	। अनमेल । अनुपयुक्त, अनमेल
	। -मोल ।	भाव, मूल्य	। अनमोल । अमूल्य

३.१४ क्रियात्मक (वर्बलाइजर्स)

क्रियात्मक दो भागों में विभाजित हो सकता है। पहले भाग के अन्तर्गत प्रारम्भिक क्रियात्मक आता है, जिसके बहुत कम उदाहरण मिलते हैं, और दूसरे भाग के अन्तर्गत प्रेरणार्थक विस्तार आते हैं।

भाग (१) —प्रारम्भिक क्रियात्मक । -आ । है, जो संज्ञाओं और विशेषणों में जुड़ता है।

। पिरा ।	दर्द होना	। पनिआ ।	सिंचाई करना
। फेना ।	फेन देना	। बउरा ।	पागल होना
। बतिआ ।	बात करना	। तिता ।	कड़वा होना
। थिरा ।	स्थिर होना	। दुखा ।	दर्द अनुभव करना
। दुडिआ ।	गेहूँ, जौ की बालों को तोड़ना	। ठेहुनिआ ।	घुटनों पर बैठना
। खटा ।	खट्टा होना	। धोखा ।	तेज करना
। जुडा ।	ठंडा होना	। जरिआ ।	मजबूत जड़ बांधना
। सोभा ।	सीधा करना	। लोभा ।	प्रलुब्ध होना
। हरिआ ।	हरा होना	। पिअरा ।	पीला होना

भाग (२) --प्रेरणार्थक विस्तार (कॉजेटिव एक्सटेन्शन्स)

धातुओं से प्रेरणार्थक बनाने में जो रूपात्मक प्रक्रिया संलग्न है वह परप्रत्ययी है। भोजपुरी में प्रेरणार्थक के दो वर्ग हैं, सहज और द्विगुण। कुछ क्रिया प्रातिपदिकों में दोनों प्रेरणार्थक मिलते हैं, कुछ में केवल एक। सहज प्रेरणार्थक, प्रातिपदिक में । -आव । जोड़ने से बनता है, तथा द्विगुण प्रेरणार्थक प्रातिपदिक में । -वाव । जोड़ने से। कुछ क्रिया प्रातिपदिक प्रेरणार्थक विस्तार को सम्मिलित नहीं करते।

क्रिया प्रातिपदिकों का अधिकांश जो प्रेरणार्थक विस्तार को सम्मिलित करता है, एकाक्षरी है। सामान्यतया, इनमें अन्त्य स्थिति मे व्यंजन है।

। बोल ।	बुलाना	। बोलाव ।	। बोल्वाव ।
। रख ।	रखना	। रखाव ।	। रख्वाव ।
। टुङ ।	गेहूँ की बाल को तोड़ना	। टुङाव ।	। टुङ्वाव ।
। ओढ ।	ओढ़ना	। ओढाव ।	। ओढ्वाव ।
। तउल ।	तोलना	। तउलाव ।	। तउल्वाव ।
। बइठ ।	बैठना	। बइठाव ।	। बइट्वाव ।
। सुत ।	सोना	। सुताव ।	। सुत्वाव ।
। खन ।	खोदना	। खनाव ।	। खन्वाव ।

प्रातिपदिक के दीर्घस्वर । आ, ई, ऊ । प्रेरणार्थक विस्तार के आने पर ह्रस्व मे परिवर्तित हो जाते हैं।

। काट ।	काटना	। कटाव ।	। कट्वाव ।
। नाच ।	नाचना	। नचाव ।	। नच्वाव ।
। घीच ।	खीचना	। घिचाव ।	। घिच्वाव ।
। माज ।	साफ करना	। मंजाव ।	। मज्वाव ।
। बांट ।	बाटना	। बंटाव ।	। बट्वाव ।
। कीन ।	खरीदना	। किनाव ।	। किन्वाव ।

। झार ।   झाड़ना

। झराव ।   । झर्वाव ।

व्यंजन मे अन्त होने वाले द्विअक्षरी प्रातिपदिकों मे, सहज प्रेरणार्थक विस्तार के उपरात दूसरे अक्षर का स्वर लुप्त हो जाता है। द्विगुण प्रेरणार्थक के आने पर स्वर लुप्त नही होता।

। पकड़ ।   पकड़ना

। पक्ड़ाव ।   । पकड़्वाव ।

। पटक ।   पटकना

। पट्काव ।   । पटक्वाव ।

। पसार ।   फैलाना

। पस्राव ।   । पसर्वाव ।

दोनो प्रेरणार्थको के मध्य का अन्तर सदैव लक्षित नही होता।

३.१५. क्रियाविशेषणात्मक (ऐडवर्बियलाइजर्स)

क्रियाविशेषण दूसरे क्रियाविशेषणों की रचना के लिए मूल का कार्य करते हैं।

। -वो ।	। तब- ।	तब	। तब्वो ।	तब भी
। -अहिन ।	। अब- ।	अब	। अब्हिन ।	इस समय, अभी
। -अही ।	। जइस- ।	जैसे	। जइसही ।	जैसे ही
। -हूं ।	। कब- ।	कब	। कबहूं ।	कभी

बहुलरूपिम शब्द (पोलिमॉरफिक वर्ड्स)

यौगिक रचना : यौगिक रचना दो सम्भाव्य आन्तरक टेग्मीमो से मिलकर बनती है। ये टेग्मीम धातुओं द्वारा अभिव्यक्त होते हैं। फार्मूला इस प्रकार है :

यौगिक प्रातिपदिक=आन्तरक+आन्तरक

यौगिक अव्यपान्तरित शब्द हैं। इनमे एक से अधिक धातुएं सम्मिलित होती हैं, जो सन्निधानित होती हैं।

भोजपुरी की यौगिक रचना प्ररूप श्रेणियो की दृष्टि से तीन समूहो मे विभाजित हो सकती है।

१. स+स रात 'रात्रि' — दिन 'दिवस' राद्दिन[1] 'प्रत्येक समय'
स+स लोहा 'लोहा' — लकड़ी 'लकड़ी' लोहालकड़ी 'प्रत्येक सामान'

२. वि+वि निमन 'अच्छा' — बाउर 'खराब' निमन बाउर 'किसी भी तरह का' 'मजबूत' (अच्छा या खराब)

---

१. त का द में परिवर्तन रूपस्वनिमात्मक है।

३. क्रिवि + क्रिवि आगे 'आगे' — पीछे 'पीछे' आगे पीछे 'आनाकानी', 'द्विविधा की स्थिति'

क्रिवि + क्रिवि आजु 'आज' — काल्हि 'कल' आजु काल्हि 'शीघ्र'

क्रिवि + क्रिवि कम 'कम' — वेसी 'अधिक' कमवेसी 'कम अधिक'

यौगिक रचना

संज्ञा	स + स
	रात—दिन
विशेषण	वि + वि
	निमन—बाउर
क्रिया विशेषण	क्रिवि + क्रिवि
	आगे—पीछे

अनुभाग चार

फ्रेज़ स्तरण

४ १ भाषा की अधिक्रमिक व्यवस्था (हायरार्किकल सिस्टम) मे फ्रेज एक ऐस स्तरण है जिसको बनाने के लिए दो या अधिक शब्दों[1] के सम्भाव्य संघटन की आवश्यकता होती है, अर्थात् भोजपुरी फ्रेज दो या अधिक शब्दो का सम्भाव्य-अनुक्रम है। ये अनुक्रम क्लाजस्तरणीय स्लाटो की पूर्ति के लिए एकल इकाई के रूप मे कार्य करते है। भिन्न वर्ग के फ्रेज भिन्न स्लाटो की पूर्ति करते है। साथ ही एक फ्रेज दूसरे फ्रेज मे न्यस्त हो सकता है। जैसे बहुत सुन्नर लइकी 'बहुत सुन्दर लड़की', दूसरी ओर ये ऐसे वाक्य की भांति भी प्रयुक्त हो सकते हैं जो बहुधा आश्रित प्रकृति का हो, जैसे हम कहवां जाईं ? मैं कहां जाऊँ ? प्रश्न के उत्तर रूप मे बजारे 'बाजार' का प्रयोग।

४.२. फ्रेज स्तरणीय टैग्मीमो का विश्लेषण

ऊ लइका रोज नद्दी पर जाला 'वह लड़का प्रतिदिन नदी पर जाता है' इस क्लाज मे निम्नलिखित टैग्मीम है :

कर्ता	रीति	स्थान	विधेय
ऊ लइका	रोज	नद्दी पर	जाला

कर्ता स्लाट के पूरक पर ध्यान देने पर हम देखते हैं कि इसमे फ्रेज दो शब्दो से मिलकर बना है और इस तरह दो स्लाट हैं। वह स्लाट जिसकी पूर्ति लइका द्वारा होती है, केन्द्रक है, अत इसे प्रधान स्लाट कह सकते हैं। ऊ द्वारा पूर्ति होने वाला स्लाट एक तरह का विशेषक या परिसीमक स्लाट है।

---

१ फ्रेज के अन्तर्गत ऐसे एकल शब्दो को भी जोड़ा जा सकता है जिनमे विस्तार की सम्भाव्यता हो। जैसे लइका से छोटका लइका 'छोटा लड़का'।

जहाँ तक प्रत्येक फ्रेज में आने वाली श्रेणियों का सम्बन्ध है लड़का **को संज्ञा** श्रेणी में रखेंगे। यह फ्रेज विशेपक संज्ञा फ्रेज है। इस प्रकार कर्त्ता स्लाट की पूर्ति करने वाला फ्रेज निम्नलिखित सचरना वाला है :

विशेपक संज्ञा फ्रेज= + विशे : सर्व + प्र : स

कर्ता स्लाट को पूर्ति या तो इस तरह के फ्रेज द्वारा हो रही है अथवा एकल शब्द लड़का द्वारा जो जातिवाचक संज्ञा श्रेणी का है।

अर्थात् एक तरह के विशेपक सज्ञा फ्रेज के अन्तर्गत, विशेपक स्लाट जिसकी पूर्ति सर्वनाम द्वारा होती है और प्रधान स्लाट जिसकी पूर्ति सज्ञा द्वारा होती है, आते हैं।

स्थान स्लाट पर जब हम विचार करते है तो देखते हैं कि वह फ्रेज भी दो स्लाटों को रखने वाला है : एक रिलेटर स्लाट जो पर परसर्ग द्वारा व्यक्त हो रहा है तथा एक अक्ष स्लाट जो संज्ञा द्वारा व्यक्त हो रहा है। यह फ्रेज स्थान रिलेटर-अक्ष फ्रेज कहा जा सकता है। इसकी संरचना इस प्रकार है :

स्थान रिलेटर-अक्ष फ्रेज (स्थरिअ) = + रि : पर + अ : स

४.३. फ्रेजों के वर्ग--फ्रेजों के विभिन्न वर्ग इस प्रकार हैं . (१) प्रधान विशेपक फ्रेज (२) बहुविधप्रधान फ्रेज (प) समपदस्थ (फ) अभिस्थापित (३) रिलेटर-अक्ष फ्रेज।

४.३१ प्रधान विशेपकफ्रेज—प्रधान-विशेपक फ्रेज के अन्तर्गत एक प्रधान टेग्मीम होता है और एक या अधिक विशेपक टेग्मीम प्रधान विशेपक शृखला वाला यह भेद चार उप वर्गों में विभाजित हो सकता है। इस तरह के फ्रेजों का नाम प्रधान टेग्मीम को व्यक्त करने वाले शब्द की श्रेणी के नाम पर दिया गया है। ये हैं (१) विशेपित संज्ञा फ्रेज (२) विशेपित क्रिया फ्रेज (३) विशेपित विशेपण फ्रेज तथा (४) विशेपित क्रियाविशेपण फ्रेज।

४·३११. विशेपित संज्ञा फ्रेज—संज्ञा फ्रेज की रचना में संज्ञा प्रधान स्लाटों की पूर्ति करती है और बहुधा अन्त में आती है। प्रधान के साथ अनेक वर्गों के विशेपक आ सकते हैं जो अधिकतर संज्ञा से पूर्व आते हैं। ये विशेपक निम्नलिखित वर्गों के हो सकते हैं :

वर्ग १. विशेपण+संज्ञा

विशेपक टेग्मीम+प्रधान टेग्मीम

लाल सारी (बडी नीक लगेले) लाल साड़ी बड़ी अच्छी लगती है।

तोहार बड़वा खेत (का भयल) आपका बडा वाला खेत क्या हुआ ?

वर्ग २. स्वत्वीय टेग्मीम+प्रधान टेग्मीम

(सीता) रामू क मेहरारू (ह) सीता राम की स्त्री है।

(ई) रामू क खेत (ह) यह रामू का खेत है।

हमार आदत (तू ना जनता) मेरी आदत आप नही जानते हैं।

वर्ग ३ संख्या टेग्मीम + प्रधान टेग्मीम

तीन लइका (नहीं गइलें) तीन लड़के नहीं गए

(हमरे) दस नोकरवा (हउवें) मेरे दस नौकर हैं।

वर्ग ४ प्रदर्शक टेग्मीम + प्रधान टेग्मीम

हऊ पेड़ (हवा ह) वह पेड़ है

ई पेड़ (सूखल ह) यह पेड़ सूखा है।

४.३१२ विशेषित क्रिया फ्रेज़ इसकी रचनाएँ क्रिया को प्रधान टेग्मीम के रूप में और क्रिया विशेषण, सहायक क्रिया तथा निषेधात्मक को विशेषक टेग्मीम के रूप में सम्मिलित करती है। इसमें क्रिया बहुधा सर्वाधिक केंद्रीय इकाई के प्रधान शब्द की भाँति कार्य करती है। विशेषक निम्नलिखित वर्गों के हो सकते हैं:

(वर्ग १) रीति टेग्मीम + प्रधान क्रिया टेग्मीम. रीति टेग्मीम बहुधा प्रधान क्रिया टेग्मीम के तुरन्त पूर्व में आता है और प्रधान क्रिया को विशेषित करता है।

(त) ऊ हाली हाली गइल 'वह जल्दी गया'

(थ) ऊ ए गोरुअन के बोला के बइठाईं 'इन गायों को बुलाकर उठा दो'

दु दिन बाद आके ले जइहा 'दो दिन बाद आकर ले जाना'

जे तोहार मन होखे ऊ कोठरी में से जाइ के लेलऽ

'जो तुम्हारा मन हो वह कोठरी में से जाकर ले लेना'

बहरे सब्बो अहीर ढोलक बजा के गावे लगलें

'बाहर सभी अहीर ढोलक बजाकर गाने लगे'

(द) निम्नलिखित वाक्य के क्रिया फ्रेज़ों में मिश्र विशेषित टेग्मीम आये हैं:

अउरी सब्बो अहीर बेवहारी बन्न कइ के फगुआ गावे खातिर बाजा ओजा लेइ के खड़ा रहलें 'और सभी अहीर व्यापार बन्द करके फाग गाने के लिए बाजा वाजा लेकर खड़े रहे'

(वर्ग २) निषेधात्मक टेग्मीम + प्रधान क्रिया टेग्मीम. निषेधात्मक टेग्मीम, विशेषित क्रिया फ्रेज़ में क्रिया विशेषक की भाँति आ सकता है। यह प्रधान क्रिया टेग्मीम के तुरन्त पूर्व (अधिकांश उदाहरणों में), अथवा तुरन्त पश्चात् आ सकता है।

(त) ऊ घरे ना गयल 'वह घर नहीं गया'

सब्बो दुकनदार नाहीं करत गइलें 'सभी दुकानदार नहीं करते गये'

(थ) ऊ आखिर गयल ना 'वह आखिर गया नहीं'

तोहार बाति ऊ मानी नाहीं 'आपकी बात वह मानेगा नहीं'

(वर्ग ३) पुनरावर्ती टेग्मीम + प्रधान क्रिया टेग्मीम पुनरावर्ती टेग्मीम बहुधा प्रधान क्रिया टेग्मीम के तुरन्त पूर्व आता है।

(फेर) फेर अइहा 'फिर आना'

४.३१३ विशेषित विशेषण फ्रेज़—इसमें विशेषण टेग्मीम फ्रेज़ का प्रधान टेग्मीम है।

[वर्ग १] तीव्रतावाचक विशेषित टेग्मीम+विशेषण टेग्मीम—
विशेषण टेग्मीम के तुरन्त पूर्व तीव्रतावाचक विशेषित टेग्मीम आता है -
बहुत बड़हर 'बहुत बड़ा' बहुत छोट 'बहुत छोटा'

[वर्ग २] घनतावोधक विशेषित टेग्मीम+विशेषण टेग्मीम : घनतावोधक विशेषित टेग्मीम विशेषण टेग्मीम के तुरन्त पूर्व अथवा तुरन्त पश्चात् आता है।
चटक लाल 'गहरा लाल'
हरियर कचनार 'गहरा हरा'

४.३१४. विशेषित क्रिया विशेषण फ्रेज - ऐसे फ्रेजों में एक प्रधान टेग्मीम, जो क्रियाविशेषण है और एक विशेपक टेग्मीम होता है।

(१) विशेपक के रूप में घनतावोधक आ सकता है जो प्रधान टेग्मीम को विशेषित करता है। यह विशेपक टेग्मीम+प्रधान टेग्मीम के रूप में है।
बहुत तेज चला 'बहुत तेज चलिये'

(२) विशेपक प्रधान टेग्मीम के तुरन्त बाद भी आ सकता है, अर्थात् प्रधान टेग्मीम+विशेपक टेग्मीम, जैसे—
हम घरे कब्बों ना जाइब 'मैं घर कभी नहीं जाऊँगा'।

४.३२ .बहुविध प्रधान फ्रेज —ऐसे फ्रेजों में एक से अधिक प्रधान टेग्मीम होते हैं। इन्हें दो उपवर्गों में विभाजित किया जा सकता है—[१] समपदस्थ, जिसमें दो प्रधान एक ही निर्दिष्ट में द्योतित नहीं होते, और [२] अभिस्थापित, जिसमें दो प्रधान एक ही निर्दिष्ट से द्योतित होते हैं।

४.३२१. समपदस्थ फ्रेज—इन फ्रेजों में एक से अधिक अनिवार्य प्रधान टेग्मीम तथा एक या अधिक योजक टेग्मीम होते हैं, जो वैकल्पिक भी हो सकते हैं। प्रधान टेग्मीम को जोड़ने वाले शून्य, एकल अथवा दो योजक हो सकते हैं। ये योजक प्रकार्य-शब्द हैं। ये हैं—सकाली-अ, अउर 'और' तथा वैकल्पिक या। या

४.३२११. समपदस्थ फ्रेजों के वर्ग —समपदस्थ फ्रेज चार उपवर्गों में बाँटे जा सकते हैं : समपदस्थ संज्ञा फ्रेज, समपदस्थ विशेषण फेज, समपदस्थ क्रिया फ्रेज और समपदस्थ क्रियाविशेषण फ्रेज।

४.३२१२. समपदस्थ संज्ञा फ्रेज—दो या अधिक नामीय रूपों का समन्वय है।

माई बाप	'माता पिता'
रामू अ सामू	रामू और सामू'
तूँ अउर ऊ	'तुम और वह'
खेत बागि अ ऊसर	'खेत, बाग और ऊसर'

रामू अ सामू को फार्मूले में इस प्रकार दिखलाया जा सकता है :

ससम = प्रध^1 : स + यो . यो + प्रध^2 : स

एक प्रकार के समपदस्थ सज्ञा फ्रेज के अन्तर्गत, प्रधान स्लाट जिसकी पूर्ति सज्ञा द्वारा होती है, योजक स्लाट जिसकी पूर्ति योजक द्वारा होती है और प्रधान स्लाट जिसकी पूर्ति संज्ञा द्वारा होती है, आते है।

४.३२१३. समपदस्थ क्रिया फ्रेज —दो या अधिक क्रिया रूपों का समन्वय है।

लोग गावत अ बजावत समसानघाट गइलें 'लोग गाते और बजाते श्मशान-घाट गये।'

कहाँर नाचत अ गावत हउवें 'कहार नाच-गा रहे हैं'

नाचत अ गावत को फार्मूले मे इस तरह व्यक्त किया जा सकता है .

क्रिसम = + प्रध^1 क्रि + यो : यो + प्रध^2 · क्रि

अर्थात् एक प्रकार के समपदस्थ क्रिया फ्रेज मे प्रधान स्लाट जिसकी पूर्ति क्रिया द्वारा होती है, योजक स्लाट जिसकी पूर्ति योजक द्वारा होती है तथा प्रधान स्लाट जिसकी पूर्ति क्रिया द्वारा होती है, आते हैं।

४.३२१४ समपदस्थ विशेषण फ्रेज—दो या अधिक विशेषण रूपों का समन्वय है एकल विशेषण और सघन विशेषण इसके अन्तर्गत आ सकते है।

बेलि बहुत नरम अ खोबसूरति ह 'लता बहुत मुलायम और सुन्दर है'

राधिका बहुत सुन्नर अ अच्छी ह 'राधिका बहुत सुन्दर और अच्छी है'

दस बीस लाल गुलाब ले अइहा 'दस बीस लाल गुलाब ले आना'

बहुत सुन्नर अ अच्छी को फार्मूले मे निम्नलिखित तरह से व्यक्त किया जा सकता है :

विसम = + प्रध^1 वि + यो = यो + प्रध^2 वि

एक प्रकार के समपदस्थ विशेषण फ्रेज मे निम्नलिखित सम्मिलित हैं— प्रधान स्लाट जिसकी पूर्ति विशेषण फ्रेज द्वारा होती है, योजक स्लाट जिसकी पूर्ति योजक द्वारा होती है तथा प्रधान स्लाट जिसकी पूर्ति विशेषण द्वारा होती है।

४.३२१५ समपदस्थ क्रियाविशेषण फ्रेज—क्रियाविशेषण वर्ग के दो या अधिक शब्दों अथवा फ्रेजों का समन्वय है।

ऊ बहुत धीरे अ सवधानी से चलै लगलें 'वे बहुत धीरे और सावधानी से चलने लगे'।

इसे फार्मूले में निम्नलिखित तरह से व्यक्त किया जा सकता है ·

क्रिवि सम = + प्रध^1 : क्रिवि + यो . यो + प्रध^2 · क्रिवि

अर्थात् एक तरह के समपदस्थ क्रिया विशेषण फ्रेज मे प्रधान स्लाट जिसकी पूर्ति क्रियाविशेषण फ्रेज द्वारा होती है, योजक स्लाट जिसकी पूर्ति योजक द्वारा होती है तथा प्रधान स्लाट जिसकी पूर्ति क्रियाविशेषण फ्रेज द्वारा होती है, सम्मिलित हैं।

४.३२. प्रकरण-अभिस्थापित फ्रेज —प्रकरण-अभिस्थापित फ्रेजों मे दोनो

प्रधान टेग्मीम एक ही निर्दिष्ट को सम्मिलित करते है। एक प्रधान प्रकरण टेग्मीम और दूसरा ग्रमिस्थापित टेग्मीम होता है। दोनो टेग्मीम ग्रनिवार्य होते है।

राम्, तोहार साथी 'राम्, ग्रापका साथी'

तोहार पट्टीदार ग्र साभेदार, राम् 'ग्रापके पट्टीदार ग्रौर साभीदार, राम्'

राम्, तोहार साथी फ्रेज को फार्मूले मे इस तरह व्यक्त कर सकते है :

प्रक्ग्रमिस= + प्रक : स+ग्रमिस : सफ

ग्रर्थात् एक प्रकार के प्रकरण ग्रमिस्थापित फ्रेज के ग्रन्तर्गत प्रकरण स्लाट जिसकी पूर्ति व्यक्तिवाचक संज्ञा द्वारा होती है तथा ग्रमिस्थापित स्लाट जिसकी पूर्ति संज्ञाफ्रेज़ द्वारा होती है, ग्राते है।

४.३३. रिलेटर-ग्रक्ष फ्रेज—इन फ्रेजो को दो भागो मे बाँटा जा सकता है—

(१) फ्रेज रिलेटर तथा (२) ग्रक्ष जो रिलेटर से शासित होता है। दोनो भाग सम्मिलित रूप से क्लाजस्तरणीय स्लाटों की पूर्ति करते हैं। कोई एक भाग ग्रकेले इसे नही कर सकता ग्रौर इस प्रकार ये फ्रेज वहिर्मुखी (ऐक्सोसेंट्रिक) हैं। दूसरे ग्रन्य फ्रेज ग्रन्तर्मुखी (इन्डोसेंट्रिक) हैं। रिलेटर ग्रक्ष फ्रेज मे दोनो टेग्मीम ग्रनिवार्य होते हैं परन्तु कोई भी टेग्मीम प्रधान नही होता।

भोजपुरी मे इन फ्रेजो के रिलेटर परसर्ग हैं, इन्हें प्रकार्य शब्द भी कहा जा सकता है।

		हमरे खातिन	'हमारे लिए'
ग्रोकरे खातिन	'उसके लिए'	एह तरे	'इस तरह'
ग्रोह तरे	'उस तरह'	कवनो तरे	'किसी तरह'

अनुभाग ५

क्लाज़ स्तरण

५ १ व्याकरणिक अधिक्रमिक व्यवस्था के अन्तर्गत क्लाज फ्रेज स्तरण के ऊपर और वाक्य स्तरण के नीचे के स्तरण को बनाता है। क्लाज स्तरणीय रचना और वाक्य स्तरणीय रचना में प्रमुख भेद यह है कि अनेक वाक्यों में दो या दो से अधिक क्लाज आ सकते हैं जबकि दूसरी ओर अनेक वाक्यों की रचना एकल शब्दों से होती है जो कि क्लाज नहीं होते। उदाहरण के लिए प्रश्नों के उत्तर न, ना, हाँ आदि। क्लाज स्तरणीय और फ्रेज स्तरणीय रचनाओं में प्रमुख भेद यह है कि क्लाज में विधेय टैग्मीम होता है।

यहाँ इस बात की ओर संकेत करना आवश्यक है कि विधेय से हमारा तात्पर्य ठीक वह नहीं है जो परम्परागत व्याकरणों में इससे द्योतित होता है। क्योंकि सम्पूर्ण क्लाज को हम कर्ता और विधेयक दो भागों में विभक्त नहीं समझते। विधेय से यहाँ हमारा तात्पर्य क्लाज के केवल उस भाग से है जिसे क्रिया अथवा तुल्यार्थ शब्द व्यक्त करते हैं। दूसरी बात यह है कि वे टैग्मीम जो परम्परागत व्याकरण ग्रंथों में विधेय के अंग—कर्म, दिशा, समय, प्रयोजन, उपकरण, रीति आदि—के रूप में मिलते हैं, यहाँ विधेय और कर्ता के समकक्ष गिने गये हैं। यह दूसरी बात है कि अपने प्रकार्य के आधार पर ये यहाँ विधेय के भाग का कार्य करें। ऐसे विधेय और कर्ता विशिष्ट क्लाजस्तरणीय टैग्मीम हैं।

५ २ क्लाजस्तरणीय टैग्मीमों का विश्लेषण

इसमें क्लाजस्तरण पर पाये जाने वाली संरचनाओं के विभिन्न वर्ग लिए गए हैं। भोजपुरी क्लाजों के विश्लेषण के लिए जो पद्धति अपनायी गई है, वह है वृहत्तर व्याकरणिक इकाई - वाक्य—में उनका आगमन और इसके सन्दर्भ में उनका वर्गीकरण।

भोजपुरी क्लाज वाक्यों में स्लाटों की पूर्ति करते हैं। एक भोजपुरी क्लाज एक पूर्ण वाक्य की रचना कर सकता है, एक वाक्य के मुख्यांश की रचना कर सकता है जिससे उपांश क्लाज जुड़ते हैं अथवा उपांश क्लाज हो सकता है।

५ ३. वृहत्तर व्याकरणिक इकाई में क्लाजों के आगमन के सन्दर्भ मे क्लाजों को दो प्रमुख मार्गों में विभाजित किया जा सकता है—स्वतंत्र और आश्रित। स्वतंत्र क्लाज मुख्य वाक्य की भाँति प्रयुक्त हो सकते है, आश्रित क्लाज मुख्य वाक्य की तरह प्रयुक्त नही हो सकते। स्वतंत्र क्लाज बहुधा वाक्यो के मुख्य स्लाटों की पूर्ति करते हैं, आश्रित क्लाज वाक्य सरचना मे सीमान्त स्लाटों की पूर्ति करते है। साथ ही आश्रित क्लाज क्लाजस्तरणीय स्लाटों की पूर्ति कर सकते है, जैसे कर्ता, कर्म, स्थान, उपकरण तथा समय, स्वतंत्र क्लाजों के साथ ऐसा नही होता। इस तरह क्लाज के अन्तर्गत क्लाज का न्यस्तीकरण होता है। उदाहरण के लिए जब हम बड़हर होइब, हम कमाइब 'जब मैं बड़ा होऊँगा, मैं कमाऊँगा'

५ ३१. आश्रित क्लाज : जैसाकि ऊपर कहा गया है कि आश्रित क्लाज, क्लाज मे स्लाट की पूर्ति कर सकते है।

आश्रित क्लाज जो स्वतंत्र क्लाज में कर्ता या कर्म स्लाट की पूर्ति करते हैं : अदमियाँ जवन गयल रहल काल्हि लउट आइल 'आदमी जो गया था कल लौट आया' अदमिया जेके तू देखला काल्हि चलि गइल '(वह) आदमी जिसे आपने देखा था कल चला गया'

हम ओके चाहत हई जवने के हम काल्हि पहिनले रहली 'मैं उसे चाहता हूँ जिसे मैं कल पहने था'

आश्रित क्लाज जो स्वतंत्र क्लाज में स्थान स्लाट की पूर्ति करते हैं—

ऊ ओही गयल जहवा हमहन काल्हि गयल रहली 'वह वहीं गया जहाँ हम कल गए थे'

आश्रित क्लाज जो स्वतंत्र क्लाज मे समय स्लाट की पूर्ति करते हैं—

हम तोहके देखली जब हम खरिहाने जात रहली। 'मैंने आपको देखा, जब मैं खलिहान जा रहा था'

५.३२. स्वतंत्र क्लाज : इसके निम्नलिखित उपवर्ग हैं :

५.३२१. सक्रिय क्लाज —सक्रिय और निष्क्रिय क्लाज में भेद यह है कि सक्रिय मे कर्ता व्यापार करने वाला होता है, जबकि निष्क्रिय मे कर्ता व्यापार को प्राप्त करने वाला अथवा व्यापार का लक्ष्य होता है।

क्लाज मे कर्म उपस्थित है अथवा हो सकता है या नही, इस दृष्टि से सक्रिय क्लाजों के दो मूल भेद किये गये है—सकर्मक और अकर्मक। सकर्मक क्लाज अकर्मक से कर्म की अनिवार्यता मे भिन्न है, विधेयो का प्रकार्यात्मक अर्थ भी दोनों मे भिन्न होता है—सकर्मक विधेय लक्ष्य निर्देशित व्यापार को व्यक्त करते हैं, अकर्मक-विधेय जिस व्यापार को व्यक्त करते हैं वे लक्ष्य निर्देशित नही होते। साथ ही प्रत्येक विधेय की पूर्ति करने वाली क्रियाओं की श्रेणी भिन्न है।

उदाहरण — सकर्मक

बाम्हन लोग फगुवा गावत रहलें 'ब्राह्मण लोग फाग गा रहे थे'

ऊ अँचरा फहरवलें 'उसने आँचल फहराया'

हम श्रोके छुवली 'मैंने उसे छुआ'

ऊ अँचरा फहरवलें का फार्मूले द्वारा समाधान इस प्रकार है .

सक्वल = + क सर + कर स + वि . सक्रि

अर्थात् एक तरह के सकर्मक क्लाज में कर्ता स्लाट जिसकी पूर्ति सर्वनाम द्वारा होती है, कर्म स्लाट जिसकी पूर्ति संज्ञा द्वारा होती है तथा विधेय स्लाट जिसकी पूर्ति सकर्मक क्रिया द्वारा होती है, सम्मिलित है।

अकर्मक

हम गइली	'मैं गया'
ऊ घर गइल	'वह घर गया'
एगाव में किछु अहीर रहत रहलें	'एक गाँव में कुछ अहीर रह रहे थे'
रामू बजार गयल	'रामू बाजार गया'

रामू बजार गयल क्लाज को फार्मूले द्वारा इस प्रकार व्यक्त कर सकते हैं :

अकक्ल = + क स + स्थ . स्थ + वि अकक्रि

अर्थात् एक तरह के अकर्मक क्लाज में कर्ता स्लाट जिसकी पूर्ति संज्ञा द्वारा होती है, वैकल्पिक स्थानस्लाट जिसकी पूर्ति स्थान द्वारा होती है तथा विधेय स्लाट जिसकी पूर्ति अकर्मक क्रिया द्वारा होती है, सम्मिलित है।

५.३२२ निष्क्रिय क्लाज निष्क्रिय क्लाज में कर्ता व्यापार को पाने वाला अथवा व्यापार का लक्ष्य होता है। अभिकर्ता उपस्थित रह सकता है अथवा अनुपस्थित रह सकता है चोर मार खइलें 'चोर पीटा गया'

चोर सीता द्वारा देखल गयल 'चोर सीता द्वारा देखा गया'

भोजपुरी निष्क्रिय क्लाज की मुख्य विशेषताएँ ये हैं .

कर्ता टैग्मीम, निष्क्रिय विधेय टैग्मीम तथा वैकल्पिक अभिकर्ता टैग्मीम।

चोरमार खइलें क्लाज का फार्मूला निम्नलिखित है :

निक्ल = + कर . स + वि क्रिफ नि

अर्थात् एक तरह के निष्क्रिय क्लाजमे कर्म स्लाट जिसकी पूर्ति संज्ञा द्वारा होती है और विधेय स्लाट जिसकी पूर्ति (निष्क्रिय) क्रिया फ्रेज द्वारा होती है, सम्मिलित हैं।

५.३३ स्टेटिव क्लाज—स्टेटिव क्लाज अकर्मक से उन प्रकरणों में भिन्न है जो विधेय स्लाट की पूर्ति करते हैं। सकर्मक से इसकी भिन्नता उन प्रकरणों में है जो विधेय स्लाट की पूर्ति करते हैं, तथा कर्म की अनुपस्थिति में है।

रामू के पास पेड़ ह क्लाज का फार्मूला

स्वतक्ल = + क स + स्वन . स्वनग + विगु : स + वि : क्रि

अर्थात् एक प्रकार के स्वत्वीय क्लाज में कर्ता स्लाट जिसकी पूर्ति संज्ञा द्वारा होती है, स्वत्वीय स्लाट जिसकी पूर्ति स्वत्वीय गणक द्वारा होती है, विधेय गुण स्लाट जिसकी पूर्ति सज्ञा द्वारा होती है और विधेय स्लाट जिसकी पूर्ति क्रिया द्वारा होती है, सम्मिलित है।

स्टेटिव क्लाज के तीन उपवर्ग है—स्वत्वीय, विशेषणात्मक और समीकरणात्मक (१) स्वत्वीय स्टेटिव क्लाज, सहज अभिधायक रूप मे, सज्ञा या सर्वनाम अनिवार्य कर्ता के रूप मे तथा नामीय क्रिया अनिवार्य विधेय के रूप मे सम्मिलित करता है। हमरे पास गोजी ह 'हमारे पास लाठी है' तोहरे पास खेत ह 'तुम्हारे पास खेत है'

रामू के पास पेड ह 'रामू के पास पेड है'

तू दोस्त हउवा क्लाज का फार्मूला :

समीक्ल = + क : सर + विगु : स + वि : समीक्रि

अर्थात् एक प्रकार के समीकरणात्मक क्लाज मे कर्ता स्लाट जिसकी पूर्ति सर्वनाम द्वारा होती है, विधेय गुण स्लाट जिसकी पूर्ति संज्ञा द्वारा होती है और विधेय स्लाट जिसकी पूर्ति समीकरणात्मक क्रिया द्वारा होती है, सम्मिलित है।

(२) समीकरणात्मक स्टेटिव क्लाज, सहज अभिधायक रूप मे, नामीय क्रिया अनिवार्य विधेय के रूप मे तथा कर्ता में संज्ञा या सर्वनाम वैकल्पिक वैयक्तिक निर्दिष्ट के रूप मे सम्मिलित करता है।

तू दोस्त हउवा	'आप मित्र है'
रामू लड़का ह	'रामू लड़का है'
सीता लड़की ह	'सीता लड़की है'

लड़का नीक ह क्लाज का फार्मूला :

विशक्ल = + क : स + विगु : विश + वि : क्रि

अर्थात् एक प्रकार के विशेषणात्मक स्टेटिव क्लाज के अन्तर्गत कर्तास्लाट जिसकी पूर्ति संज्ञा द्वारा होती है, विधेय गुण स्लाट जिसकी पूर्ति विशेषण द्वारा होती है और विधेय स्लाट जिसकी पूर्ति क्रिया द्वारा होती है, आते हैं।

(३) विशेषणात्मक स्टेटिव क्लाज, सहज अभिधायक रूप मे, अभिस्थायी संज्ञा या सर्वनाम फ्रेज वैकल्पिक कर्ता के रूप मे तथा विशेषणात्मक क्रिया अनिवार्य विधेय के रूप में सम्मिलित करता है

तू बड़का हउवा	'आप बड़े है'
लड़का नीक ह	'लडका अच्छा है'

५·३४. प्रत्यावर्तित क्लाज—ऐसे क्लाजों मे कर्ता का व्यापार स्वयं के लिए है अथवा यदि वे बहुवचन हैं तो एक दूसरे पर।

ऊ अपने के मरले 'उसने अपने आप को मारा'

ऊ एक दुसरे के मरले 'उन्होंने एक दूसरे को मारा'

ऊ अपने के मरले क्लाज का फार्मूला

प्रत्याक्ल = + क . सर + कर . प्रत्याग + वि क्रि

अर्थात् एक प्रकार के प्रत्यावर्तित क्लाज में कर्ता स्लाट जिसकी पूर्ति सर्वनाम से होती है, कर्म स्लाट जिसकी पूर्ति प्रत्यावर्तित गणक से होती है, तथा विधेय स्लाट जिसकी पूर्ति क्रिया से होती है, सम्मिलित है।

५ ३५ अनिश्चित क्लाज यह निष्क्रिय क्लाज (५ ३३२) के काफी नजदीक है। निष्क्रिय क्लाज से इसमे भिन्नता यह है कि इसमें अभिकर्ता को दिखाया नहीं जा सकता है।

कउनो जात रहल 'कोई जा रहा था'

कउनो बइठल रहल 'कोई बैठा हुआ था'

कउनो जात रहल क्लाज का फार्मूला

अनिक्ल = + क : अनिग + वि क्रिक

अर्थात् एक प्रकार के अनिश्चित क्लाज में कर्ता स्लाट जिसकी पूर्ति अनिश्चित गणक से होती है और विधेय स्लाट जिसकी पूर्ति क्रिया केन्द्र द्वारा होती है, सम्मिलित है।

५ ३६ प्राश्निक क्लाज : ऐसे क्लाजों में क्लाजस्तर पर प्राश्निक प्रश्न एक स्लाट की पूर्ति करता है।

के कहत रहल ह ? 'कौन कह रहा था ?'

रामू कहवाँ ह ? 'रामू कहाँ है ?'

तू कब जइबा ? 'आप कब जाएंगे ?'

ऊ केके मरले ? 'उसने किसे पीटा ?'

इन क्लाजों में प्राश्निक प्रश्न कर्ता, स्थान, समय, कर्म स्लाटों की पूर्ति करता है।

रामू कहवाँ ह क्लाज का फार्मूला :

प्राश्क्ल = + क : सा + स्थ . प्रश + वि : क्रि

अर्थात् एक प्रकार के प्राश्निक क्लाज में कर्ता स्लाट जिसकी पूर्ति सज्ञा द्वारा होती है, स्थान स्लाट जिसकी पूर्ति प्रश्न शब्द द्वारा होती है और विधेय स्लाट जिसकी पूर्ति क्रिया द्वारा होती है, सम्मिलित है।

५ ३७ आज्ञापक क्लाज—अन्य क्लाजों से इसमे प्रमुख अन्तर यह है कि इसमें बहुधा कर्ता वैकल्पिक होता है और यह अन्य क्लाजों की अपेक्षा छोटा होता है अर्थात् कम टेग्मीमों को रखने वाला होता है।

खरिहाने जो 'खलिहान जाओ' दउर 'दौड़ो'

रामू चल 'रामू चलो' रामू पेड़ काट 'रामू पेड़ काटो'

रामू पेड़ काट क्लाज का फार्मूला :

आक्ल = + क : स + कर : स + वि . आ क्रि

—

अर्थात् एक तरह के आज्ञापक क्लाज मे वैकल्पिक कर्ता स्लाट जिसकी पूर्ति सज्ञा द्वारा होती है, कर्म स्लाट जिसकी पूर्ति सज्ञा द्वारा होती है, और विधेय स्लाट जिसकी पूर्ति आज्ञापक क्रिया द्वारा होती है, सम्मिलित है।

५.३८ बलात्मक क्लाज—ऐसे क्लाजो मे ऐसे किसी टेग्मीम की स्थिति ही उस टेग्मीम की बलात्मकता को प्रकट करती हैं।

ऊ घरे गइल 'वह घर गया' ऊ घरे गइल 'वह घर गया'

ऊ घरे गइल क्लाज़ का फार्मूला :

बलक्ल = + क . सर + स्थ : स्थ बल + वि : क्रि

अर्थात् एक तरह के बलात्मक क्लाज मे कर्ता स्लाट जिसकी पूर्ति सर्वनाम द्वारा होती है, स्थान स्लाट जिसकी पूर्ति स्थानिक (बलात्मक) द्वारा होती है और विधेय स्लाट जिसकी पूर्ति क्रिया द्वारा होती है, सम्मिलित है।

५.३९. औद्धरणिक क्लाज—औद्धरणिक क्लाज अन्य क्लाजों मे इस रूप मे भिन्न है कि इसमे उद्धरण टेग्मीम अनिवार्य होता है। उद्धरण टेग्मीम की यह विशेषता है कि इसकी पूर्ति करने वाला समूचा वाक्य होता है।

उ कहलस 'हम जात हई' 'उसने कहा "मैं जा रहा हूँ"'

ऊ कहलस "हम जात हई" क्लाज का फार्मूला :

औक्ल = + क¹ · सर + वि¹ : क्रि + क² : सर + वि : क्रिफ

अर्थात् एक तरह के औद्धरणिक क्लाज मे कर्ता स्लाट जिसकी पूर्ति सर्वनाम द्वारा होती है, विधेय स्लाट जिसकी पूर्ति क्रिया द्वारा होती है, कर्ता स्लाट जिसकी पूर्ति सर्वनाम द्वारा होती है और विधेय स्लाट जिसकी पूर्ति क्रिया फेज द्वारा होती है, सम्मिलित हैं।

५.३१०. निषेधात्मक क्लाज : निषेधात्मक क्लाज मे अनिवार्य टेग्मीम के रूप मे निषेधात्मक टेग्मीम होता है।

हम बजारे ना जात हई 'मैं बाजार नही जा रहा हूँ'

सामू काम ना कइले 'सामू ने कार्य नही किया'

हम बजारे ना जात हई क्लाज का फार्मूला :

निषक्ल = + क : सर + स्थ . स्थग + निष : निष + वि : क्रिफ

अर्थात् एक प्रकार के निषेधात्मक क्लाज मे कर्ता स्लाट जिसकी पूर्ति सर्वनाम द्वारा होती है, वैकल्पिक स्थान स्लाट जिसकी पूर्ति स्थानिक द्वारा होती है, निषेधात्मक स्लाट जिसकी पूर्ति निषेधात्मक गणक द्वारा होती है तथा विधेय स्लाट जिसकी पूर्ति क्रिया फेज द्वारा होती है, सम्मिलित हैं।

अनुभाग ६

वाक्य स्तरण

६ १ प्रस्तुत अध्ययन मे भाषा की अधिक्रमिक व्यवस्था मे वाक्य को एक स्तरण माना गया है जो इस व्यवस्था मे क्लाजस्तरण से ऊपर और अनुच्छेद स्तरण से नीचे का स्तरण बनाता है। भोजपुरी वाक्य एक क्लाज अथवा एक से अधिक क्लाजो के अनुक्रम से बनता है, जो अनुच्छेद स्तरणीय स्लाटों की पूर्ति के लिए इकाई का कार्य करता है।

भाषा की अधिक्रमिक व्यवस्था लघुतम रूपिम समूहनो से आरम्भ होकर वाक्यो को समेटती हुई उससे ऊपर अनेक उच्चतर सरचनाओं (अनुच्छेद, सलाप तथा अन्य) तक पहुँचती है। वैसे व्याकरणिक परम्परा के अनुसार वाक्य व्याकरणिक अध्ययन की सबसे ऊपरी सीमा है, इससे उच्चतर स्तरण का अध्ययन, परम्परा रूप मे, केवल अर्थ विज्ञान, और तर्कशास्त्र आदि के आधार पर किया गया है।

वाक्यों के सम्बन्ध मे ऊपर दी गयी इस बात, कि यह क्लाज स्तरण से ऊपर और अनुच्छेद स्तरण से नीचे का एक स्तरण है, के अलावा इस बात को भी स्वीकार किया गया है कि इनमे सुरलहर और विराम सम्बन्धी विशेषताए भी सम्मिलित है। साथ ही यहाँ वाक्य को पूर्ण उच्चार के रूप मे ग्रहण किया गया है। इस सम्बन्ध मे परम्परागत धारणाओं कर्ता-विधेय सचयन या पूर्ण विचार, को स्वीकार नही किया गया है।

६ २ वाक्यस्तरणीय टैग्मीमों का विश्लेषण—वाक्य स्तणीय टैग्मीम तीन तरह के है—एक मूल टैग्मीम जो एक या अधिक मुख्यान टैग्मीम से बने होते हैं, जिनकी पूर्ति स्वतन्त्र क्लाजों द्वारा होती है, दूसरे उपान्त टैग्मीम जिनकी पूर्ति आश्रित क्लाजो द्वारा होती है, और तीसरे सुरलहर टैग्मीम जिनकी पूर्ति सुरलहर परिरेखा द्वारा होती है। इस प्रकार रा॑मू गाँ॑व गइ॑ल ↓ की टैग्मीमिक सरचना निम्नलिखित होगी

वाक = +मू स्वक्ल—सुर २३१ ↓

अर्थात् (एक तरह के) वाक्य मे, मूल स्लाट जो स्वतन्त्र क्लाज द्वारा व्यक्त होता है तथा सुरलहर स्लाट जो २ ३ १→द्वारा व्यक्त होता है, सम्मिलित हैं।

६.३. वाक्यों के वर्ग—आश्रित और स्वतन्त्र वाक्य : किसी भी भाषा में कुछ संरचनाएँ आश्रित होती हैं और कुछ स्वतन्त्र। संरचना के ये दोनों भेद भाषा के विभिन्न स्तरणों पर दिखलाई पड़ते हैं। शब्दों के अन्तर्गत मुक्त रूपिम (लइका, घर) स्वतन्त्र हैं और आबद्ध रूपिम (–त,–ई) आश्रित हैं, फ्रेजों के अन्तर्गत–छोटका लइका–विशेषक (छोटका) आश्रित है और प्रधान (लइका) स्वतन्त्र है। क्लाजों के अन्तर्गत ऐच्छिक परिधीय विस्तार जैसे समय का द्योतन (तीन बजे, राति क) या स्थान (गाँव) आश्रित हैं और कर्ता विधेय मचयन (रामू गयल) अथवा विधेय केन्द्रक (जा, चल) स्वतन्त्र हैं। आश्रित वाक्य वे हैं जो पूर्ण उच्चार की भाँति नहीं आ सकते अथवा बिना लक्षित सन्दर्भ के सलाप का प्रारम्भ नहीं कर सकते। स्वतन्त्र वाक्य वे हैं जो एक या अधिक क्लाजों को सम्मिलित करें, जिनमें से एक स्वतन्त्र क्लाज हो।

६.३१. आश्रित वाक्य—ऐसे वाक्य स्वतन्त्र क्लाज को सम्मिलित नहीं करते और अपने संदर्भ पर आश्रित हैं। वास्तव में आश्रितवाक्य सभी लघु वाक्य वर्गों को सम्मिलित करते है। इन्हे चार उपवर्गों में विभाजित किया जा सकता है अनुक्रम, संकलन, क्रमभंग युक्त और प्रतिवचन।

६.३११. अनुक्रम आश्रित वाक्य – वे हैं जो एक स्वतन्त्र क्लाज धन एक अनुक्रम चिन्हित टैग्मीम को सम्मिलित करते है। ये टैग्मीम, अउर, लेकिन, तब, एहलिये, उप्पर से आदि शब्दो और फ्रेजा द्वारा द्योतित होते हैं। इस प्रकार एहलिये हम जायल ना चाहत हुई 'इसलिए मैं जाना नहीं चाहता हूँ' वाक्य के विश्लेषण में तीन टैग्मीम निकलते हैं– एक अनुक्रम टैग्मीम जो एहलिये द्वारा व्यक्त है, एक मूल टैग्मीम जो हम जायल ना चाहत हुई द्वारा व्यक्त है और एक साथ का सुरलहर टैग्मीम। दूसरा उदाहरण उप्पर से ऊ मारेला वाक्य में उप्पर से है जो स्पष्ट रूप से वाक्य को उस अंश से जोड़ता है जो पहले कहा जा चुका है।

इसे फार्मूले द्वारा इस प्रकार व्यक्त किया जा सकता है :

अनु-वाक = +यो · योग +मू : स्वक्ल –सुर . अंसुप

अर्थात एक प्रकार के अनुक्रम वाक्य में योजक स्लाट जिसकी पूर्ति योजक गणक द्वारा होती है, मूल स्लाट जिसकी पूर्ति स्वतन्त्र क्लाज द्वारा होती है, तथा सुरलहर स्लाट जिसकी पूर्ति अन्तिम सुरलहर परिरेखा द्वारा होती है, सम्मिलित हैं।

६.३१२ संकलन आश्रित वाक्य भी आश्रित क्लाज, फ्रेज या एकल शब्दों से बन सकते हैं, ये बहुधा अपने से पूर्व के वाक्य पर आश्रित होते हैं और उसे स्पष्ट करते हैं सुरलहर परिरेखा साथ मिली होती है।

रामू के ई चाही, गोलका 'रामू को यह चाहिए, गोल वाला'

तू उहाँ जात हउवा ? ओही, बड़के इनारे' आप वहाँ जा रहे हैं ? वही बड़े कुएँ पर'

इसे फार्मूले में इस तरह व्यक्त किया जा सकता है :

संकल वाक = +मू : आ क्लाज। फ्रेज। शब्द–सुरलहर : अंसुप

६.३१३ क्रमभंगयुक्त आश्रित वाक्य वहाँ मिलते है जहाँ भाषा प्रवाह में किसी कारणवश अवरोध आ जाय। ये अवरोध आतंरिक भी हो सकते है और बाह्य भी। वाक्य के आरम्भ करने पर दूसरे वाक्य को लाने के आग्रह से उसे बीच में भग कर देना आतंरिक अवरोध है। किसी के आ जाने पर वाक्य का भग हो जाना या बोलने वाले का ध्यान किसी बाहरी चीज़ में खिंच जाना बाह्य अवरोध है। ऐसे वाक्य गलत आरम्भ और अन्तर्गभित कथन हैं। ये सामान्यतया एक मूल और सुरलहर रखते हैं।

क्रमभग युक्त वाक्य दो उपवर्गों मे विभाजित किये जा सकते है—पुनः प्रारम्भ उच्चार और असमाप्त उच्चार।

६.३१४ प्रतिवचन आश्रित वाक्यो की आवृत्ति बहुत अधिक है। प्रतिवचन आश्रित क्लाज हो सकते हैं, फ्रेज हो सकते है या फिर एकल शब्द हो सकते हैं। उदाहरण

(१)	'कहाँ जात हउवा ?'	'कहाँ जा रहे हैं ?'
(२)	'खते'	'खेत पर'
(३)	'उहाँ से ?'	'वहाँ से ?'
(४)	'नद्दी'	'नदी'
(५)	'नद्दी ?'	'नदी ?'
(६)	'हाँ'	'हाँ'

इसे फार्मूले मे इस प्रकार व्यक्त कर सकते हैं .

प्रति वाक= + मू आ क्लाज। फ्रेज।शब्द--सुरलहर असुप

आश्रित वाक्य पूर्ववर्ती क्रिया या क्रिया से इतर प्रसग के प्रतिवचन भी है प्रक्रिया सम्बन्धी प्रसग के अन्तर्गत ऐसे प्रश्न आते हैं जो स्वीकारात्मक (हाँ), नकारात्मक (न, ना, नाहीं) या विशेष विवरण (ई हम हई, उहाँ जा) के प्रतिवचन की माग करते हैं। क्रियेतर या आचरण प्रसग ऐसी स्थिति रखते हैं जो समान स्वीकारात्मक, नकारात्मक अथवा विशेष विवरण के प्रतिवचन की माँग करते हैं। उदाहरण के लिए यदि कोई आदमी किसी कार्य को गलत ढग से कर रहा है तो उसके साथ काम करने वाला यह कहे ना, अइसे ना 'न, ऐसे नही'।

६.३२. स्वतंत्र वाक्य — ऐसे वाक्य कम से कम एक स्वतन्त्र क्लाज को सम्मिलित करते हैं। इन्हें तीन उपवर्गों मे विभाजित किया जा सकता है : सहज, समपदस्थ और सहायक।

६.३२१. सहज स्वतत्र वाक्य केवल एक स्वतन्त्र क्लाज को सम्मिलित करते हैं। जैसे हम खात हईं 'मैं खा रहा हूँ', रामू गयल 'रामू गया', सामू बिमार ह 'सामू बीमार है' इसे फार्मूले मे इस तरह व्यक्त कर सकते हैं :

सहज वाक = + मू : स्व क्ला–सुर : असुप

अर्थात् एक तरह का सहज स्वतन्त्र वाक्य, मूल स्लाट जिसकी पूर्ति स्वतन्त्र क्लाज

द्वारा होती है और सुर लहर स्लाट जिसकी पूर्ति अंतिम सुरलहर परिरेखा द्वारा होती है, को सम्मिलित करता है।

इसके अतिरिक्त प्राश्निक वाक्य हैं जो प्राश्निक क्लाजों को रख सकते हैं या अप्राश्निक स्वतंत्र क्लाज धन प्रश्न सुरलहर को रखते है जैसे—

उ² गाव³ गयल³ ↑ 'वह गाव गया' ?

रामू² आ³ गयल³ ↑ 'रामू आ गया ?'

इसे फार्मूले मे इस तरह व्यक्त कर सकते है—

सहज प्रा वाक = + मू: स्व-क्ल —सुर ' प्रासुरथ

अर्थात् एक तरह का प्राश्निक वाक्य, मूल स्लाट जिसकी पूर्ति स्वतंत्र क्लाज द्वारा होती है, और सुरहर स्लाट जिसकी पूर्ति प्राश्निक सुरलहरो की श्रेणी द्वारा होती है, को सम्मिलित करता है।

६ ३२२. समपदस्थ स्वतंत्र वाक्य कम से कम दो स्वतंत्र क्लाजो को सम्मिलित करते हैं। असमपदस्थ वाक्यों के स्वतंत्र क्लाजों के मध्य विराम आता है और वाक्य के टर्मिनस का निर्देश करता है। परन्तु समपदस्थ वाक्य में स्वतंत्र क्लाज बिना किसी विराम के सन्निपातित आते हैं।

समपदस्थ वाक्यों में अर्थ सम्बन्धी सम्बन्ध के दो भेद मिलते हैं : निश्चायक तथा व्यतिरेकी। निश्चायक सम्बन्ध मे द्वितीय क्लाज का विचार तत्त्व प्रथम क्लाज के विचार का तार्किक परिणाम प्रस्तुत करता है।

हम भुखायल हई, हम अभ्मे खाइब 'मैं भूखा हूँ, मैं अभी खाऊंगा'

व्यतिरेकी सम्बन्ध मे द्वितीय क्लाज का विचार तत्त्व प्रथम क्लाज से व्यतिरेक को प्रस्तुत करता है। हम ओके भगवले रहली, उ फेरो आ गयल 'मैंने उसे भगा दिया था, पर वह फिर आ गया'।

सूक्ष्म अन्तर के साथ एक भेद यह भी हो सकता है जिसमें दो स्वतंत्र क्लाज जुड़कर वाक्य बन जाते हैं और इस तरह समपदस्थ सम्बन्ध वाले होते हैं।

हम खेते गइली अ हम नहीं गइली 'मैं खेत पर गया था और नहीं गया था'

इन उदाहरणों को फार्मूले मे इस तरह व्यक्त किया जा सकता है:

सम-वाक = +मू¹ : स्वक्ल — सुर : अनमुप +यो : योग : मू² स्वक्ल—सुर : अमुप

अर्थात् एक प्रकार के समपदस्थ वाक्य मे मूल स्लाट जिसकी पूर्ति स्वतंत्र क्लाज द्वारा होती है, सुरलहर स्लाट जिसकी पूर्ति अनतिम सुरलहर परिरेखा द्वारा होती है, योजक स्लाट जिसकी पूर्ति योजक गणक द्वारा होती है, मूल स्लाट जिसकी पूर्ति स्वतंत्र क्लाज द्वारा होती है तथा सुरहलर स्लाट जिसकी पूर्ति अन्तिम सुरलहर परिरेखा द्वारा होती है, सम्मिलित हैं।

६.३२३. **सहायक स्वतंत्र वाक्य** एक मूल टेग्मीम जो स्वतंत्र क्लाज द्वारा व्यक्त होता है तथा एक सीमान्त टेग्मीम जो आश्रित क्लाज़ द्वारा व्यक्त होता है, को सम्मिलित करता है।

अगर तू जइवा, तोहके रुपिया मिली 'अगर तुम जाओगे तुम्हे रुपया मिलेगा'

इसे फार्मूले मे इस तरह व्यक्त कर सकते है

सह-वाक = + सीमा आ क्ल + मू . स्व-क्ल--सुर : अमुप

अर्थात् एक प्रकार के सहायक वाक्य में सीमान्त स्लाट जिसकी पूर्ति आश्रित क्लाज द्वारा होती है, मूलस्लाट जिसकी पूर्ति स्वतत्र क्लाज द्वारा होती है, तथा सुरलहर स्लाट जिसकी पूर्ति अंतिम सुरलहर परिरेखा द्वारा होती है, सम्मिलित हैं।

अनुभाग ७

उच्चार स्तरण

७.१. वाक्य से उच्चतर स्तरणों का अध्ययन अभी तक बहुत कम हुआ है। इन उच्चतर स्तरणो मे इतनी बारीकी और इनकी सीमारेखाओं में इतनी जटिलता है कि इन पर विशेष रूप से ध्यान केन्द्रित करके ही किसी अच्छे परिणाम पर पहुँचा जा सकता है। प्रस्तुत अध्ययन मे इन्हे विशेष रूप से नही लिया जा सका। एक रूपरेखा मात्र यहाँ दी जा रही है।

व्याकरणिक अधिक्रमिक व्यवस्था मे उच्चार स्तरण वाक्य से ऊपर और सलाप से नीचे के स्तरण को बनाता है, तथा संलाप स्तरण में स्लाटों की पूर्ति करता है।

७.२. उच्चार स्तरणीय टैग्मीमों का विश्लेषण : उच्चारों के दो वर्ग है: आश्रित और स्वतन्त्र।

७.२१. आश्रित उच्चारों को सात उपवर्गों मे विभाजित किया जा सकता है—अभिवादन सवाद उद्‌घाटक, प्राश्निक सवाद उद्‌घाटक, पुकार सवाद उद्‌घाटक, प्रतिवचन अनुक्रम उच्चार, प्रतिवचन-प्राश्निक अनुक्रम उच्चार, विदा समापक, प्रतिवचन समापक।

(१) अभिवादन सवाद उद्‌घाटक—इस उपवर्ग के अन्तर्गत एक टैग्मीम आता है। जैसे जै रामजी की 'जै रामजी की'

सलाम	'नमस्कार'

फार्मूला : + मून ; अभिव

(२) प्राश्निक संवाद उद्‌घाटक—इसके अन्तर्गत भी एक टैग्मीम आता है।

कहाँ जात हउवा	'कहाँ जा रहे है ?'
का हाल बा	'क्या हाल है ?'
कुछु खरीदे जातहउवा	'कुछ खरीदने जा रहे है ?'
कहवाँ से आवत हउवा	'कहाँ से आ रहे हैं ?'

फार्मूला = + मूल . प्रा

(३) पुकार सवाद उद्घाटक . इसके अन्तर्गत भी एक टेग्मीम है।

हे रामू	'हे रामू : !
रामू इहां आवा	'रामू यहां आओ'
रामू हो	'हे रामू'!

फार्मूला : + मूल पुकार

(४) प्रतिवचन अनुक्रम उच्चार—इसमें भी एक टेग्मीम मिलता है।

हां	'हां'
ना	'नही'
कुछ ना	'कुछ नही'
हम सहरे जातहईं	'मैं शहर जा रहा हूँ'

फार्मूला = + मूल : प्रतिअनु

(५) प्रतिवचन प्राश्निक अनुक्रम उच्चार—इस उपवर्ग के अन्तर्गत दो टेग्मीम आते हैं।

ठीक हईं अ तूं	'ठीक हूँ और आप'
ठीकं हईं खेते जातहउवा	'मैं भी ठीक हूँ, खेत जा रहे हैं'

फार्मूला = + मूल¹ · प्रति + मूल² . प्रा

(६) विदा समापक—इसमें एक टेग्मीम आता है।

अच्छा सलाम	'अच्छा, नमस्कार'
अच्छा भगवान भला करें	'अच्छा भगवान भला करें'

फार्मूला = +मूल विदासम

(७) प्रतिवचन समापक—इसके अन्तर्गत भी एक टेग्मीम आता है।

अच्छा	'अच्छा'

फार्मूला = + मूल . प्रतिसम

७ २२ स्वतन्त्र उच्चार के अन्तर्गत वृत्त आता है।

वृत्त के अन्तर्गत उच्चार उद्घाटक जो वृत्त की भूमिका के रूप मे आता है, उच्चार मूल जो वृत्त के शरीर के रूप मे आता है तथा उच्चार समापक जो वृत्त का स्थापन करता है, आते हैं।

उदाहरण—

वृत्त उद्घाटक कथन = एठे रहलें राजा 'एक राजा थे'

वृत्त मूल कथन : उनके सात लइका रहलें...'उनके सात लड़के थे...'

वृत्त समापक कथन—ओकरे बाद ऊ चोरी कयल छोड देहलें 'इसके पश्चात उसने चोरी करना छोड दिया।'

फार्मूला = + वृत्तउद . वृत्तउदकथ+वृत्तमूल . वृत्तमूलकथ + वृत्तसम : वृत्तसमकथ

पारिभाषिक शब्दावली

(१) हिन्दी-अंग्रेजी

प्रत्यय	Affix
प्रकरण	Item
परप्रत्यय	Suffix
पूर्व प्रत्यय	Prefix
पार्श्ववर्ती	Adjacent
प्रवण	Abrupt
पश्च	Back
प्रतिबद्ध	Conditioned
प्रतिबद्ध रूपान्तर	Conditioned Variant
परिरेखा	Contour
परिवेश	Environment
परिवर्त	Variant
पार्श्विक	Lateral
पार्श्विक विवर्तन	Lateral opening
पश्चवर्त्स्य	Post alveolar
पूर्ववर्ती	Antecedent
प्रसंग	Context
प्रेरणार्थक	Causative
प्रेरणार्थक विस्तार	Causative extension
प्रत्यक्ष	Direct
प्रदर्शक	Demonstrative
प्रकार्यात्मक अर्थ	Functional meaning
पूरक	Filler
प्रधान	Head, Principal
प्ररूप श्रेणी	Form Class
परत	Layer

पृथकता	Isolation
पृथक	Isolated
प्राश्निक	Interrogative
पुनरुक्ति	Iteration
परिसीमक	Limiter
प्रमुख	Major
परिधीय	Peripheral
परिधीय विस्तार	Peripheral eztension
प्रगामी	Progressive
प्रयोजन	Purpose
पूर्वग	Preceding
परसर्ग	Post position
पुरुष	Person
प्रश्न-सुरलहर	Question intonation
परिमाणक	Quantifier
पूरक	Complementary
पूरकवितरण	Complementary distribution
पूरण	Complementation
प्रतिवचन	Response
प्रत्यावर्तित	Reflexive
पुनःप्रारम्भ उच्चार	Restarted utterance
पुनरुक्त	Repeated
प्रातिपदिक	Stem
प्रातिपदिक गठनात्मक	Stem forming
पूर्ण संवरण	Complete closure
प्रवाही	Continuant
फार्मूला	Formula
बहुअक्षरी	Multi syllabic
बहुरूपिम शब्द	Polymorphic words
बहुविधप्रधानफ्रेज	Multiplehead phrase
बलाघात	Stress
बाह्य वितरण	External distribution
बल	Emphatic
बहुवचन	Plural
भाषा प्रवाह	Flow of speech

भाषा ध्वनि	Speech sound
भविष्य	Future
महाप्राण	Aspirated
महाप्राणत्व	Aspiration
मुक्त रूपान्तर	Free Variant
मुक्त रूपान्तरण	Free Variation
मध्य	Mid, medial
मधुर सक्रम	Melodic modulation
मध्यस्थ	Normal
मुखरता का शिखर	Peak of sonority
मूलस्वर	Pure Vowel
मूर्धन्य	Retroflex
मसृण	Smooth
मूल	Base
मिश्र	Complex
मुख्यप्रक	Cardinal
मुक्त एकान्तर	Free alternate
मुख्य	Main
मुख्याश	Nuclear
मात्रा	Quantity
मूलान्तरण, रचनातरण	Transformation
मूलान्तरित, रचनातरित	Transformed
तालु	Palate
तालव्य	Palatal
तारसुर	Pitch
तारसुर-सम	Pitch level
तीव्र	Strong
तालिका	Table
तदक्षर विषयक	Taut osyllabic
तुल्यार्थ शब्द	Equivalent
तीव्रतावाचक	Intensive
ताडन	Tapping
द्वयोष्ठ्य	Bilabial
दन्त्य	Dental
द्विअक्षरी	Disyllabic

दीर्घ	Long
दांत	Teeth
दन्तपृष्ठ	Teethridge
दिशा	Direction
द्विअक्षरी मूल	Disyllabic-base
दीर्घतर	Redundant
दूरवर्ती	Remote
द्विरावृत्ति	Reduplication
दरार, स्लाट	Slot
दृढ	Tense
ध्वन्यात्मक समानता	Phonetic similarity
ध्वनीय अस्तित्व	Phonetic entity
ध्वनि	Sound
धन	Plus
धारक	Possessor
धातु	Root
निचला ओष्ठ	*Lower lip*
निम्नमध्य	Lower mid
निम्न	Low
नामकीय	Nominalizer
निम्न उच्च	Lower high
नासिक्य	Nasal
नासिकी विवर्तन	Nasal opening
नासिका मार्ग	Nasal passage
निरनुनासिक	Unnasalized
निष्कर्षीय	Conclusive
निर्देशक	Directive
नामधातु	Denominative
नकारात्मक	Negation
नामीय	Nominal
निषेधात्मक	Nominalizing affix
नामीय प्रत्यय	Nominal
निकटवर्ती	Near
निक्षिप्तकथन	Parenthesis
निष्क्रिय क्लाज़	Passive clause

निर्दिष्ट	Referent
नियमित	Typical
नैयमिक एकान्तरण	Regular alternation
निजवाचक सर्वनाम	Reflexive pronoun
नमूना	Sample
निकुंचन	Constriction
टर्मिनस	Terminus
टाग्मा	Tagma
ढाँचा	Pattern
चतुर्थांश	Quarter
छद्मप्रेरणार्थक	Pseudo-causative
जिह्वा	Tongue
जिह्वानोक	Apex
जिह्वापश्च	Dorsum
जिह्वाफलक	Blade of the tongue
जिह्वाग्र	Front of the tongue
जिह्वामध्य	Mid part of the tongue
जोर	Emphasis
कालमात्रा	Duration
कम्पित	Trill
कोमलतालु	Velum
क्रिया-विशेषण	Adverb
कारक	Case
क्रमभंगयुक्त	Interrupted
क्रिया का सामान्य रूप	Infinitive
क्रियेतर	Non-verbal
कर्तृ	Nominative
केन्द्रक	Nucleus
कर्म	Object
कृदन्तीय	Participial
कृदन्त	Participle
कथित	Stative
कर्ता विधेय संचयन	Subject predicate composition.
कर्ता	Subject

श्रमिक	Serial
कालिक	Temporal
काल	Tense
क्रिया	Verb
क्रियाविषयक	*Verbal*
क्रियात्मक परप्रत्यय	Verbalizing suffix
क्रमसूचक अंक	Ordinals
क्षीण	Weak
खंडात्मक ध्वनिम	Segmental phoneme
खंडेतर	Suprasegmental
गुच्छ	Cluster
गुच्छस्तरण	*Clusterlevel*
गुण	Quality
गलत आरम्भ	False Start
गणक	Marker
गुणक	Multiplier
गौण, सहायक	Subordinate
घनताबोधक	Intensifier
घोष	*Voiced*
घर्षणरहित प्रवाही	Frictionless continuant
घोषसंघर्षी	Voicedfricative
लयात्मक	Rhythemic
लघु, ह्रस्व	Short
लघु प्राण	*Weakly aspirated*
लक्ष्य निर्देशित व्यापार	Goal-directed action
लक्ष्य	Goal
लिंग	Gender
रूपयुक्त	Inflection
रूपयुक्त परप्रत्यय	Inflectional suffix
रूपान्तर	Variant
रूपान्वय	Concord
रूपान्तरित	Inflected
रीति	Manner
रूप	Morph
रूपिम	Morpheme

रचनांतरण	Transformation
रचनांतरणव्याकरण	Transformational Grammer
रूपस्वनिम विज्ञान	Morphophonemics
रूपविज्ञान	Morphology
श्वास-झोंका	Puff of breath
शून्य	Zero
शब्द बलाघात	Word stress
शब्द रूपावली	Paradigm
शब्द श्रेणी	Word class
श्रेणी	Degree, class
शृंखला	String
शृंखला अवयव	String constituent
संस्वन	Allophone
स्वन	Phone
स्वन प्रक्रियात्मक	Phonological
स्वनप्रक्रियात्मक अधिक्रम	Phonological hierarchy
स्वनिम	Phoneme
स्वनिमविज्ञान	Phonemics
स्पर्श संघर्षण	Affrication
स्पर्शसंघर्षी	Affricative
संस्वनात्मक अनुनासिकता	Allophonic nasalization
संवरण	Closure
संवृत	Close
सन्निकृष्ट संहिता	Close juncture
संयुक्त स्वर	Diphthong
संयुक्त व्यंजन	Double consonant
संलाप	Discourse
संघर्षी उन्मोचन	Fricative
श्वास द्वार, स्वरयंत्रमुख	Glottis
श्वासद्वारीय, स्वरयंत्रमुखी	Glottal
श्रुति	Glide
स्वरमध्य	Intervocalically
सुरलहर	Intonation
संहिता	Juncture
सम	Level

स्वनिमिक स्तरण	Phonemic Level
संकाली	Additive
स्थिति	Position
स्थितीय	Positional
स्पर्श	Stop
समकालिक	*Simultaneous*
सहज	Simple
सुर	Tone
स्वरक	Vocoid
स्वर तंत्रियाँ	Vocal cords
स्वर	Vowel
स्वर अनुक्रम	Vowel sequence
स्वीकारात्मक	Affirmation
संकलन	Addition
सक्रिय क्लाज़	Active Clause
संरूप	Allomorph
संचयन	Combination
संघटन	Composition
संटाग्मा	Allotagma
समपदस्थ	*Coordinate*
समपदस्थत्व	*Coordination*
संयोगशील	Cohesive
सवर्गीय	Coordinate
समोजक	Conjunction
समचिन्ह	Equal sign
समीकरणात्मक, समीकृत	Equational
सुरलहर परिरेखा	Intonation
सुरलहरीय	Intonational
स्वतंत्र	Independent
सन्निधानित	Juxtaposed
सन्निधान	Juxtaposion
स्थान	Location
स्थानिक	Locational
स्तरण	Level
सीमान्त	Margin

व्याकरणिक अधिक्रम	Grammatical hierarchy
विग्रहात्मक स्वनिमिक इकाई	Configurative phonemic-entities
इकाई स्वनिम	Unit phoneme
इच्छा सूचक	Optative
एटिक इकाई	Etic unit
एमिक इकाई	Emic unit
एकान्तरण	Alternate
एकलरूपिम शब्द	Monomorphic word
एकान्तरण	Alternation
एकाक्षरी	Monosyllabic
एकाक्षरी मूल	Monosyllabic base
एकल	Single
अतिलघु	Extrashort
अधिक्रम	Hierarchy
अग्र	Front
अग्रतालव्य	Front palatal
अन्त्य	Final
अनुवर्ती व्यंजन	Following consonant
अवपात	Fall
अवरोह	Coda
अक्षर प्रभाग	Syllable division
अक्षरस्तरण	Syllable Level
अनुनासिक	Nasalized
अव्यतिरेकी	Non-Contrastive
अस्वनिमिक	Non-phonemic
अवयव	Organs
अग्रसरित	preceded
अनुनाद	resonance
अक्षर	Syllable
संरचना	Syllabic structure
अप्राण	Unaspirated
अवृत्ताकार	Unrounded
अवस्था	State
अनुक्रम	Sequence

अनुक्रम टेग्मीम	Sequence tagmeme
अनुभाग	Section
अर्धशब्द	Semiword
अवसायी	Terminate
अरूपान्तरित	Uninflected
अन्योन्याश्रित	Correlative
अभिकर्ता	Agent
अभिकर्तृत्व	Agency
अभिस्थापन	Apposition
अभिस्थापित	Appositional
अभिस्थापी	Appositive
अंशावृत्ति	Anaphora
अंशावृत्ति स्थापन	Anaphoric Substitutes
अक्ष	Axis
अवयव	Consituent
अनियमित	Atypical
अभिधायक	Declarative
अनुलग्न	Enclitic
अंश	Fragments
अनुवर्ती	Following
अपूर्णांक	*Fraction*
अनिश्चयसूचक, अनिश्चित	Indefinite
अव्यक्तिवाचक	*Impersonal*
अप्रत्यक्षकर्म	Indirect object
अभिज्ञानक	Identifier
अभिज्ञान	Identification
अकर्मक	Intransitive
अभिज्ञा	Identity
अचेतन	Inanimate
अनैयमिक एकान्तरण	Irregular alternation
अभ्यन्तर	Kernel
अप्राश्निक	Non-interrogative
अमुख्य	Non-principal
अनिवार्य	Obligatory
अनुकृतिमूलक	Onomatopoetic
अन्तर्गभित कथन	Parenthetical expressions

व्याकरणिक अधिक्रम	Grammatical hierarchy
विग्रहात्मक स्वनिमिक इकाई	Configurative phonemic-entities
इकाई स्वनिम	Unit phoneme
इच्छा सूचक	Optative
एटिक इकाई	Etic unit
एमिक इकाई	Emic unit
एकान्तरण	Alternate
एकरूपिम शब्द	Monomorphic word
एकान्तरण	Alternation
एकाक्षरी	Monosyllabic
एकाक्षरी मूल	Monosyllabic base
एकल	Single
अतिलघु	Extrashort
अधिक्रम	Hierarchy
अग्र	Front
अग्रतालव्य	Front palatal
अन्त्य	Final
अनुवर्ती व्यंजन	Following consonant
अवपात	Fall
अवरोह	Coda
अक्षर प्रभाग	Syllable division
अक्षरस्तरण	Syllable Level
अनुनासिक	Nasalized
अव्यतिरेकी	Non-Contrastive
अस्वनिमिक	Non-phonemic
अवयव	Organs
अग्रसारित	preceded
अनुनाद	resonance
अक्षर	Syllable
गरचना	Syllabic structure
अप्राण	Unaspirated
अवृत्ताकार	Unrounded
अवस्था	State
अनुक्रम	Sequence

अनुक्रम टेग्मीम	Sequence tagmeme
अनुभाग	Section
अर्धशब्द	Semiword
अवसायी	Terminate
अरूपान्तरित	Uninflected
अन्योन्याश्रित	Correlative
अभिकर्ता	Agent
अभिकर्तृत्व	Agency
अभिस्थापन	Apposition
अभिस्थापित	Appositional
अभिस्थापी	Appositive
अंशावृत्ति	Anaphora
अंशावृत्ति स्थापन	Anaphoric Substitutes
अक्ष	Axis
अवयव	Consituent
अनियमित	Atypical
अभिधायक	Declarative
अनुलग्न	Enclitic
अंश	Fragments
अनुवर्ती	Following
अपूर्णांक	Fraction
अनिश्चयसूचक, अनिश्चित	Indefinite
अव्यक्तिवाचक	Impersonal
अप्रत्यक्षकर्म	*Indirect object*
अभिज्ञानक	Identifier
अभिज्ञान	Identification
अकर्मक	Intransitive
अभिन्नता	*Identity*
अचेतन	Inanimate
अनैयमिक एकान्तरण	Irregular alternation
अभ्यन्तर	Kernel
अप्राश्निक	Non-interrogative
अमुख्य	Non-principal
अनिवार्य	Obligatory
अनुकृतिमूलक	Onomatopoetic
अन्तर्गभित कथन	Parenthetical expressions

अनुच्छेद	Paragraph
अल्पांश	Particle
आकृति	Form
आद्य	Initial
आगम	Occur
आरोह	Onset
आरोहण	Rise
आबद्ध	Bound
आश्रित	Dependent
आन्तरक	Core
आदरसूचक, आदरार्थक	Honorific
आन्तरिक रचना	Internal construction
आन्तरिक विप्रकृष्ट संहिता	Internal open juncture
आज्ञापक	Imperative
आनुक्रमिक	Serial
ऊँचाई	Height
उच्चारण	Articulation
उच्चारण स्थान	Place of articulation
उच्चारण प्रयत्न	Manner of articulation
उच्चारणात्मक	Articulatory
उपरूप	By-form
उधार	Borrowed
उत्क्षिप्त	Flap
उच्च	High
उच्चतरमध्य	Higher-mid
उपागम	Occurrence
उन्मोचन	Release
उपकारी	Benefactive
उपविरामचिह्न	Colon
उपकरण	Instrument
उपकरणीय	Instrumental
उद्धरण	Quotation
उपांश	Satellite
उपाधि	Title
उच्चार	Utterance

संक्षेप तथा विशेष चिन्ह

प्रत्या		प्रत्यावर्तित			
प्र, प्रध	:	प्रधान	प्रा	:	प्रातिनक
प्रातिप	:	प्रातिपदिक	प्रक	:	प्रकरण
प्रत	:	प्रत्यक्ष	पर	:	परसर्ग
प्रति	:	प्रतिवचन	पु	:	पुल्लिंग
फ्रे	:	फ्रेज	बहु	:	बहुवचन
बल	:	बलात्मक	टे	:	टेग्मीम
			क्रिविप्रा	:	क्रियाविशेषण प्रातिपदिक
बल'	:	बलाज	क	:	कर्ता
			क्रि	:	क्रिया प्रातिपदिक
कर	:	कर्म	क्रिप्र	:	क्रिया, क्रियात्मक
ग	:	गणक	क्रिधा	:	क्रिया धातु
मू	:	मूल	नि	:	निष्क्रिय
			नाम	:	नामकीय
रि	:	रिलेटर	रू	:	रूपान्वय
श	:	शब्द	श्र	:	श्रेणी
स	:	संज्ञा	सक	:	सकर्मक
स्थ	:	स्थान	स्ट	:	स्टेटिव
समी	:	समीकरणात्मक, समीकृत	सर	:	सर्वनाम
ससम	:	संज्ञा समपदस्थ			
सम	:	समय	सयो	:	संयोजक
सफ	:	संज्ञा फ्रेज			
स्व	:	स्वतंत्र	सुर	:	सुरलहर

सु	:	सुर	समप	:	समपदस्थ
सीमा	:	सीमान्त	संक	:	संकलन
स्वत	:	स्वत्तीय	स्ल	:	स्लाट
समी	:	समीकरण	समीस्ल	:	समीकरण स्लाट
सह	:	सहायक	स्व	:	स्वर
			सप्र	:	संज्ञा प्रातिपदिक
स्त्री	:	स्त्रीलिंग	सहज	:	सहज
सम्बो	:	सम्बोधन	सम्प्र	:	सम्प्रदान
सामा		सामान्य	हीन	:	हीनतासूचक
			यो	:	योजक
यौ	:	यौगिक	वि	:	विधेय
विश	:	विशेषण	विशे	:	विशेषक
निष	:	निषेधात्मक	विप्र	:	विशेषण प्रातिपदिक
			विश	:	विशेषण, विशेषणात्मक
वाक	:	वाक्य	व्यं	:	व्यंजन
विक	:	विकारी	एक	:	एकवचन
			अनि	:	अनिश्चित
अभि	:	अभिकर्ता	अन	:	अन्त्य
			अनु	:	अनुक्रम
अभिस		अभिस्थापित, अभिस्थापक	आदर	:	आदरसूचक
			अंसुप	:	अन्तिम सुरलहर परिरेखा
अभिव	:	अभिवादन	अनंसुप	:	अनन्तिम सुरलहर परिरेखा
आ	:	आशापरक	आ	:	आश्रित
आन्त	:	आन्तरक			
उप	:	उपकरण	औ	:	औद्धरणिक

विशेष चिन्ह

+	अनिवार्य टेग्मीम
+	वैकल्पिक टेग्मीम
—	
—	घन, अनिवार्य टेग्मीम (सुरलहर के सन्दर्भ में)
:	विस्तार
[ ]	स्वनिक अथवा संस्वनिक चिह्न
/ /	स्वनिमिक चिन्ह
>	कुछ पीछे से उच्चरित, रूपान्तरण का द्योतक
<	कुछ आगे से उच्चरित
/	महाप्राणत्व
ˌ	ध्वन्यात्मक बलाघात
~	अनुनासिकता
U	ह्रस्व उच्चारण
~	अथवा

संदर्भ

Allen, Harold B ed. Readings in Applied English Linguistics, *2nd ed. New York . Appleton-Century-Crofts. 1964.*

Bloomfield, Leonard. Language. New York, Holt, Rinehart and Winston, Inc , 1933

Boas, Franz, Introduction to the Handbook of American Indian Languages Washington, D. C., Georgetown University Press, 1963.

Chomsky, Noam, Syntactic Structures. The Hague, Mouton & Co., 1957.

— Aspects of the Theory of Syntax. Cambridge, Mass .,The M. I. T Press. 1965.

Chomsky, Noam and Morris Halle, The Sound Pattern of English, New York, Harper bnd Row, 1968.

Cook, Walter A., Introduction to Tagmemic Analysis. New York, Holt, Rinehart and Winston, Inc. 1969

— The Generative Power of a Tagmemic Grammar. Monograph Series on Languages and Linguistics, No. 20, Washington D.C Georgetown University Press, 1967.

De Saussure, Ferdinand, Course in General Linguistics, trans. by Wade Baskin-Geneva, 1916, New York, Philosophical Library, Inc , 1959.

Dineen, Francis P., An Introduction to General Linguistics, New York, Holt, Rinehart and Winston, Inc. 1967.

Elson, *Benjamin, and Pickett, Velma, An Introduction to Morpho-*

logy and Syntax. Santa Ana, Summer Institute of Linguistics, 1964.

Longacre, Robert E., String Constituent Analysis. Language Vol. 36, 1960.

— Grammar Discovery Procedures. The Hague, Mouton & Co., 1964

— Prolegomena to Lexical Structure, Linguistics, Vol. 5, 1964 b.

— Some Fundamental Insights of Tagmemics, Language, Vol 41, 1965.

— The Notion of Sentence, Monograph Series on Languages and Linguistics, No. 20, Washington, D. C., Georgetown University Press, 1967.

Milka Ivic, Trends in Linguistics, trans. by Muriel Heppell, The Hague, Mouton & Co., 1965.

Miltner Vladimir, Theory of Hindi Syntax. The Hague, Mouton & Co., 1967.

Morgan, James O., English Structure above the Sentence Level, Monograph Series on Languages and Linguistics, No. 20, Washington, D. C., Georgetown University Press, 1967

Nida, Eugene A., A Synopsis of English Syntax. Norman, Okla, Summer Institute of Linguistics, 1959; 5th edition 1964

Pike, Kenneth L., Language in Relation to a Unified Theory of the Structure of Human Behaviour Glendale, California, SIL, Part I [1954], Part II [1955], Part III [1960]; reprinted in one volume, The Hague, Mouton & Co, 1967.

— On Tagmemes nee Gramemes, IJAL, Vol 24, 1958.

— Language As Particle Wave and Field, The Texas Quarterly, Vol 2, 1959.

— Dimensions of Grammatical Constructions. Language, Vol 38, 1962.

— A Syntactic Paradigm. Language, Vol 39, 1963.

— Discourse Analysis and Tagmemic Matrices, Oceanic Linguistics, Vol. 3, 1964

— Grammar as Wave. Monograph Series on Languages and Linguistics. No. 20. Washington, D. C., Georgetown University Press, 1967

— and Burkhard Schoettelndreyer Paired Sentence Reversals in the Discovery of Underlying and Surface Structures in Sherpa Discourse Indian Linguistics, Vol 33, 1972.

Platt, John T. Grammatical Form and Grammatical Meaning. Amsterdam, North-Holland Publishing Company, 1971.

Sapir, Edward, Language An Introduction to the Study of Speech. New York, Harcourt, Brace and World, Inc. 1921.

Singh, Kripa Shanker, A Sketch of the Hierarchical Structure of Bhojpuri. (From Phrase to Discourse Level), Indian Linguistics, Vol 33, 1972

— Bhojpuri Ke Nasikya Swanim Research Journal of the University of Kurukshetra, Vol I, 1965.

— The Lexical Borrowing in Nihali From Hindi and Marathi, Unpublished Dissertation

Thomas, Owen, Transformational Grammar and the Teacher of English, New York, Holt Rinehart and Winston, Inc 1965

Tiwari, Udai Narain, Bhojpuri Verb Roots Indian Linguistics, Vol 14, 1954

— Origin and Development of Bhojpuri, Calcutta, The Asiatic Society, 1960

Verma, Manindra K, The Structure of the Noun Phrase in English and Hindi Delhi, Motilal Banarsidass, 1971

Verma, Shivendra Kishore, An Introduction to Systemic Grammar. Mimeographed, Central Institute of English, Hyderabad

Waterhouse, Viola, Independent and Dependent Sentences. I JAL, Vol. 29, 1963.

शुद्धि-पत्र

पृष्ठ	पंक्ति	अशुद्ध	शुद्ध
१७	१	एटकि	एटिक
१७	३	प्रक्रियाऐं	प्रक्रियाएँ
२३	२० से २६	( )	[ ]
२३	२१	गऊ	नग
२५	१२	स्पर्शं	स्पर्शों
२५	२७	।	,
२७	७	ढेकुल	ढेंकुल
२७	२५	जाध	जांघ
२८	२३	आतरिक	आतरिक्त
२८	२६	अवरोध	अनवरोध
३०	२५	चृछ	चृठ
३२	०	विज्ञानभाषा	भाषाविज्ञान
४०	३	ह^{2}	ह^{1}
४३	७	२.१२	२.११.
४६	१	२.१३	२.१२.
४६	३१	आप के लिये	आप के (लिये)
४७	१२	मानेंगे	मानेंगे
४८	१७	चिल्लाल चिलाल	चिल्लाल> चिलाल
४८	२०	घल्ली	घल्ली
५०	३३	पोख्रवा	पोखर्वा
५८	०	भोजपुरा	भोजपुरी
६७	२७	लें लें	लैं लैं
६७	२८	लें मुक्त एकान्तर	के स्थान पर बहु के नीचे
६७	२८	लैं	लैं
७०	३	घर्ली	घड़ली
८४	२६	दूसरी	दूसरा

८५	१६	परम्परागत	परम्परागत
८६	७	गुणानुसार	गुणानुसार
८६	११	कालाकार	कलाकार
६४	१६	बहुवचनीय ( )	बहुवचनीय शब्द ( ) २.
६६	१	लेंग	लेंगा
६७	६	मडवा	महवा
६८	२४	टेग्गीम	टेग्गीम
६६	२४	है	है
१००	३१	विशेषण	विशेषण
१००	३४	४ ३७	४ ३२२
१०२	६	विशेषण	विशेष
१०४	१६	+ स्य	+ स्य
१०४	१६	+ वि	+ वि
१०५	२६	अभिप्रायी	अभिप्रायी
१०६	२५	गा	ग
१०७	१७	वि	वि'
१०७	२७	+ स्य	+ स्य
१०७	२७	स्यग	स्य
१०७	२७	निप	निपग
१०६	१७	फेंजा	फेंजो
१११	१०	गुरहर	गुरलहर
१११	२१	मगा	भगा
१११	२५	नद्दी	नदी